करुणा और दर्द के धनी

महाकवि अनीस : श्रेष्ठ रचनाएँ

सम्पादक

सालेहा आबिद हुसैन

सजिल्द
पहला संस्करण : १९७६

राष्ट्रभारती

१८, इन्स्टीट्यूशनल एरिया, लोदी रोड
नयी दिल्ली-११० ००३

मुद्रक :

दिल्ली-११० ०३२

मूल्य : १००.०० रुपये

KARUNA AUR DARD KE DHANI : MAHAKAVI ANEES
(Urdu Poems)

Price : Rs. 100.00

अनुक्रम

नज़्म है या गौहरे-शहवार की लड़ियाँ 'अनीस'
जौहरी भी इस तरह मोती पिरो सकता नहीं

मीर 'अनीस' के मर्सियों की पृष्ठभूमि

कर्बला की घटना

मीर अनीस के मर्सियों को समझने के लिए यह आवश्यक है कि कर्बला की घटना के विषय में भी पढ़ने वालों को थोड़ी-सी जानकारी हासिल हो जाये। हम कोशिश करेंगे कि संक्षिप्त रूप में इतिहास की रोशनी में कर्बला की घटना का कुछ ज़िक्र करें, कि क्यों इमाम हुसैन ने एक शक्तिशाली राज्य से टक्कर ली और अपने बाल-बच्चों और दोस्तों सहित जान दे डाली।

हज़रत मुहम्मद, पैग़म्बरे-इस्लाम ने जब अरब देश में हक़ (सत्य) की आवाज़ उठायी और ख़ुदा का पावन सन्देश लोगों को पहुँचाना शुरू किया तो प्रारम्भ में अरब-निवासियों ने उनका घोर विरोध किया और दुश्मनी पर कमर बाँध ली। उनको हर तरह के दुख दिये और कोशिश की कि इस्लाम को फैलने न दें। इस विरोध और दुश्मनी में अरब के एक प्रसिद्ध क़बीले के लोग 'बनी उमय्या' आगे-आगे थे। उनको 'बनी हाशिम' से (जिस क़बीले से हज़रत रसूल थे) दुश्मनी थी; इसलिए कि वे लोग सज्जनता, धर्म-कर्म और परोपकार के कारण प्रतिष्ठा की दृष्टि से देखे जाते थे और काबे (ख़ुदा का घर) का संरक्षण-भार उन्हीं को मिला हुआ था।

जब सारे अरब में इस्लाम फैल गया तो 'बनी उमय्या' ने भी इस्लाम स्वीकार कर लिया। मगर इनमें से बहुत से लोग ऐसे भी थे जिन्होंने मस्लहत देखकर यह नया धर्म अपना लिया था और चाहते थे कि अब इसके अन्दर रह कर इसकी जड़ें काटें।

हज़रत मुहम्मद के देहान्त के उपरान्त उनके जो पहले चार ख़लीफ़ा (अर्थात् उनके उत्तराधिकारी) हुए उन्होंने रसूल की शिक्षाओं का पालन किया और इस्लाम की सच्ची आत्मा और मूल उद्देश्य को सामने रखकर काम किया। ख़लीफ़ा लोगों का सेवक भी था और धार्मिक पेशवा भी। वह शासन की समस्याएँ जन साधारण की राय लेकर तय करता था। इस ख़िलाफ़त का बादशाही और सलतनत से दूर-दूर का कोई वास्ता न था, लेकिन इसी समय

में बनी उमय्या के कुछ लोगों ने अन्दर-अन्दर अपना असर जमाना शुरू कर दिया था। जब हज़रत अली ने (जो हज़रत इमाम हुसैन के पिता थे) खिलाफ़त सँभाली तो इस्लाम और हज़रत मुहम्मद की शिक्षाओं को फैलाने की ज़्यादा कोशिश की और इस्लाम की सही दिशा की रौशनी में खिलाफ़त का काम करना शुरू किया। मगर माविया ने, जो बनी उमय्या का एक सरदार और प्रभावशाली व्यक्ति था, हज़रत अली को खलीफ़ा मानने से इन्कार कर दिया, और शाम में अपना राज्य स्थापित कर लिया। उसका ठाठ-बाट, अन्दाज़ सब शाहाना थे। हजरत अली से और उससे कई लड़ाइयाँ भी हुईं। मुसलमानों में ज़्यादा लोग हज़रत अली के साथ थे और उन्हीं को इस्लाम का सच्चा खलीफ़ा मानते थे। मगर धन और शक्ति के भूखे बहुत से लोग माविया के साथ भी मिल गये थे। यहाँ तक कि ४० हिजरी में हज़रत अली को शहीद कर दिया गया। उनकी शहादत के बाद अरब और इराक़ के लोगों ने उनके बड़े बेटे इमाम हसन को अपना खलीफ़ा बनाया। मगर इधर माविया ने अपनी खिलाफ़त का ऐलान कर दिया और फ़िर लड़ाई छिड़ने का अन्देशा हुआ। इमाम हसन बड़े सुलहपसन्द इन्सान थे और शान्ति से जीवन व्यतीत करना चाहते थे। उन्होंने क़ौम को लड़ाई और ख़ून-ख़राबे से बचाने के लिए माविया से चन्द शर्तों पर सुलह कर ली। इनमें से एक यह थी कि माविया अपनी ज़िन्दगी भर तक ख़लीफ़ा रहेंगे, मगर किसी को अपना उत्तराधिकारी न बनायेंगे और उनके बाद खिलाफ़त हजरत हसन या इमाम हुसैन को मिलेगी। मावया ने कुछ वर्ष बाद इमाम हसन को भी चुपके से विष देकर मरवा डाला और सबसे बड़ी शर्त को तोड़ दिया और अपनी ज़िन्दगी ही में अपने बेटे यज़ीद के लिए लोगों से बैअत[1] लेनी शुरू कर दी। और जब माविया का देहान्त हुआ तो यज़ीद ने रसूल का ख़लीफ़ा होने का दावा कर दिया।

यज़ीद और माविया में एक बड़ा फ़र्क़ था। बहुत-सी कमज़ोरियों और त्रुटियों के बावजूद माविया ज़ाहिर में इस्लाम के आदेशों को मानता था और कुछ न कुछ इस्लामी-शिक्षा को सामने रखता था। यज़ीद का चरित्र नितान्त दोष युक्त था। वह न इस्लाम के खुले हुक्मों की पाबन्दी करता था, न उसकी शिक्षा को मानता था और न इस्लाम से उसे ज़रा-सा भी कोई लगाव था। वह ज़ालिम भी था और पापी भी। हजरत रसूल और उनके वंश का कट्टर दुश्मन था इसलिए कि अब भी अरब में लोग श्रद्धा और प्रतिष्ठा में सबसे ऊँचा स्थान उन्हीं का समझते थे और उनसे प्रेम करते थे।

---

१. बैयत का अर्थ है कि किसी के हाथ में हाथ देना, उसे अपना धार्मिक गुरु या पेशवा मान लेना.

माविया के बाद यज़ीद ने रसूल का ख़लीफ़ा होने का ऐलान कर दिया। इससे अरब में, विशेषतः इराक़ में, लोगों में परेशानी और भय फैल गया। यज़ीद ने बहुत से लोगों को अत्याचार या शक्ति से या लालच देकर चुप कर दिया था। मगर कुछ ख़ुदा के बन्दे ऐसे भी थे जो इन बातों से डरने वाले न थे। इनमें हज़रत अली के बेटे और हज़रत मुहम्मद के छोटे नवासे इमाम हुसैन का नाम सबसे ज़्यादा मशहूर है।

यज़ीद के मित्रों ने उसे सलाह दी कि सबसे पहले वह इमाम हुसैन से निबटे और उनसे अपनी बैअत ले अर्थात् वे उसे रसूल का जानशीन और इस्लाम का ख़लीफ़ा मान लें। उसने मदीने के हाकिम को हुक्म भेजा कि हुसैन से मेरी बैअत लो, अन्यथा उसको क़त्ल कर डालो। यह इस्लाम के विरुद्ध बहुत बड़ा षड्यन्त्र था। वे लोग समझते थे कि यदि रसूल के नवासे ने, जिसके घर से इस्लाम निकला है और जो इस्लाम की शिक्षा का सबसे बड़ा जानने वाला और इस पर अमल करने वाला है, यज़ीद को अपना ख़लीफ़ा मान लिया, तों उसका हर काम और हर ग़लत जौर अनुपयुक्त कर्म, इस्लाम की शिक्षा के अनुरूप समझा जायेगा; क्योंकि जिसको रसूल का नवासा अपना ख़लीफ़ा और पथ-प्रदर्शक मान ले तो फिर शेष क्या रह जाता है? और इस तरह इस्लाम की मूल शिक्षा और उसकी सच्ची आत्मा ख़त्म हो जायेगी।

इमाम हुसैन पहले ही से हालात का रुख़ देख और समझ रहे थे और अपना रास्ता चुन चुके थे। वह जानते थे कि इस वक़्त उन्हें एक बड़ी कठिन परीक्षा का सामना करना है। जब मदीने के हाकिम ने बुलाकर उनसे कहा कि वह यज़ीद को ख़लीफ़ा मानकर उसकी बैअत कर लें, तो फ़ैसला करने में उन्हें क्षण भर भी न लगा और उन्होंने निर्भय होकर ऐसे व्यक्ति को रसूल का ख़लीफ़ा मानने से इन्कार कर दिया और अपने घर चले आये; यह जानते हुए भी कि यज़ीद का अगला क़दम उनके क़त्ल की तरफ़ ही उठेगा। मदीने के हाकिम के लिए ख़ास मदीने के अन्दर इमाम हुसैन को क़त्ल कराना आसान न था। इधर इमाम हुसैन ने समझ लिया कि इस्लाम और सच्चाई को बचाने के लिए उन्हें जान तो देना है मगर इस तरह कि दुनिया को स्पष्ट मालूम हो कि हुसैन ने क्यों जान दी? और उनके दुश्मनों ने हुसैन को क्यों मारा? यानी सत्य और असत्य की जो लड़ाई संसार में सदैव से होती आयी है वह एक नये ढंग से लड़कर दिखाई जाये।

इमाम हुसैन ने परिस्थिति को देखकर और परखकर मदीना छोड़ने का निश्चय कर लिया। पहले उनका इरादा इसके लिए मक्के जाने का, और फिर इराक़ की ओर रवाना होने का था, जहाँ के लोग उनको पत्र लिखकर बुला रहे थे कि आइए, हम यज़ीद को रसूल का ख़लीफ़ा नहीं मानते, आप आकर

हमें यज़ीद के हाकिमों के अत्याचारों से मुक्ति दिलाइए। जब इमाम हुसैन ने वंश के लोगों के सामने ये समस्या रक्खी तो सब लोगों ने एक आवाज़ होकर कहा कि हक़ (सत्य) और बातिल (झूठ) की इस लड़ाई में हम आपका साथ देंगे। घराने की स्त्रियों, बहनों, बेटियों, भावजों और पत्नियों ने कहा कि ख़ुदा की राह में क़ुर्बानियाँ देना और हक़ (सच्चाई) का साथ देना हमारा कर्तव्य भी है, और विर्सा भी, हम भी साथ रहेंगे। कुछ मित्रों और साथियों ने आग्रह किया कि हम आपके साथ जायेंगे। इमाम हुसैन ने प्रत्येक अवसर पर हर जगह बार-बार लोगों को बताया और समझाया कि बहुत बड़ी शक्ति से मुक़ाबला होगा; मैं ख़िलाफ़त प्राप्त करने नहीं, इस्लाम के लिए जान देने जा रहा हूँ। मगर उनके साथियों ने यही कहा कि हम आपके साथ जियेंगे और आपके साथ मरेंगे।

ग़रज़ हुसैन अपने घराने वालों के साथ मदीने से मक्के रवाना हुए। केवल एक बीमार बेटी और बूढ़ी नानी और सौतेली माँ मदीने में रह गयीं। पहले वह मक्के गये मगर वहाँ भी यज़ीद के लोग मौजूद थे जो चाहते थे कि हज के अवसर पर चुपके से इमाम हुसैन को मार डालें और अपराध किसी निर्दोष के सिर मँढ दिया जाये। मगर हुसैन तो ये चाहते थे कि जान इस तरह दें कि दुनिया को अच्छी तरह मालूम हो जाये कि हुसैन ने क्यों जान दी, और किसने उनको मारा? इसलिए आप हज किये बिना इराक़ की तरफ़ रवाना हो गये। ये छोटा-सा क़ाफ़िला अरब की गर्मी की कठिन यात्रा के दुख झेलता हुआ चला जा रहा था। हर मंज़िल पर लोग हुसैन से आग्रह करते थे कि ख़ुदा के लिए वापिस चले जाइए, यज़ीद की शक्ति बहुत बड़ी है और उसकी सहस्रों की संख्या में सेनाएँ जमा हो रही हैं। मगर हुसैन मुहम्मद के नवासे और अली के बेटे थे, जिन्होंने ख़ुदा के बताये रास्ते पर चलने के लिए हमेशा ख़ुशी-ख़ुशी दुख झेला था, वे अपने इरादे में अटल रहे और यात्रा की कठिनाइयाँ सहन करते हुए आगे बढ़ते रहे। अभी हुसैन इराक़ की राजधानी कूफ़े से, जहाँ यज़ीद के हाकिम क़ब्ज़ा किये हुए थे, कई मंज़िल इधर ही थे कि यज़ीद की सेनाओं ने रास्ता रोक लिया। उनको कूफ़े जाने से रोका। कुछ दूर पर एक छोटी-सी बस्ती थी जो नेनवा कहलाती थी। कभी यह एक प्रसिद्ध ऐतिहासिक स्थान रहा था, मगर अब उजाड़ था, वहाँ फ़रात नदी की एक शाखा इस मरुस्थल को सैराब करती थी, यही बस्ती कर्बला भी कहलाती थी।

मुहर्रम के महीने की २ या ३ तारीख़ थी जब इमाम हुसैन ने अपने क़ाफ़िले के साथ कर्बला के मैदान में अपने डेरे डाले। पहले नहर के किनारे डेरे लगाये गये थे कि नन्हें बच्चों का साथ है, पानी की तकलीफ़ न हो। मगर

यज़ीदी सेना ने वहाँ डेरे न लगने दिये। दूर मरुस्थल में आपका कैम्प लगा। अब यज़ीद की फ़ौजों पर फ़ौजें आनी शुरू हो गयीं। सही ऐतिहासिक रिवायतों में यज़ीद की फ़ौजों की गिनती तीस और चालीस हज़ार के बीच बतायी जाती है। इधर इमाम हुसैन के साथ स्त्रियों और नन्हें बच्चों को छोड़-कर कुल सत्तर-बहत्तर आदमी थे और इनमें भी कुछ बहुत बूढ़े लोग थे और कुछ नयी उम्र के लड़के। चन्द जवान और नौजवान भी थे। और इतिहास साढ़े तेरह सौ वर्ष से इस पर चकित है कि इन बहत्तर साथियों के साथ हुसैन ने टक्कर ली थी यज़ीद की चालीस हज़ार की फ़ौज से; और यही नहीं, कई घण्टे मुक़ाबले के बाद शहादत पायी थी।

३ से ७ तक इमाम हुसैन और उनके कुछ बुज़ुर्ग साथी यज़ीद की सेना के अधिकारियों से बातचीत करते रहे, उन्हें समझाते रहे कि तुम क्यों निर्दोषों का ख़ून अपने सिर लेते हो। हुसैन ने यह भी कहा कि मुझे यजीद के पास ले चलो, मैं स्वयं उससे बातचीत कर लूंगा। ये रिवायत भी है कि उन्होंने कहा, मैं किसी और देश, मसलन हिन्दुस्तान की ओर चला जाऊँगा। मगर इन अधिकारियों को सख़्ती से यह आदेश दिया गया था कि या हुसैन से बैअत लेना या उनका सिर काट कर लाना।

७ मुहर्रम से यज़ीद की फ़ौजों ने नदी पर पहरा बिठा दिया और हुसैन की फ़ौजों तक पानी का पहुँचना बन्द हो गया और रसद (खाद्य-सामग्री) के रास्तों की नाकाबन्दी कर दी गयी। वह समझते थे कि हुसैन और उनके साथी अगर और किसी तरह नहीं दब सकते तो नन्हें बच्चों की और औरतों की भूख-प्यास तो उनको झुका ही देगी। मगर वे क्या जानते थे कि हुसैन का सिर कट सकता है, अत्याचार और झूठ के सामने झुक नहीं सकता।

मुहर्रम की १० तारीख थी। इमाम हुसैन और उनके साथी सुबह की नमाज़ पढ़ रहे थे कि यज़ीद की फ़ौजों ने तीर फेंककर जंग की पहल कर दी। कुछ लोग वहीं नमाज़ पढ़ते हुए शहीद हो गये। इसके बाद वह स्मरणीय युद्ध शुरू हुआ जिसने दुनिया में 'कर्बला की घटना' के नाम से ख्याति प्राप्त की।

पहले हुसैन के साथियों ने लड़ाई में जान क़ुर्बान की। उन्होंने कहा, हम अपनी ज़िन्दगी में हुसैन पर और उनके वंश पर आँच न आने देंगे। इनमें एक ख़ुदा का बन्दा, सत्य और न्यायप्रिय व्यक्ति 'हुर' भी था जो पहले यजीद की फ़ौज का एक बड़ा अधिकारी था। मगर इमाम हुसैन को सच्चाई पर पाकर वह धन-सम्पत्ति और पद को ठुकराकर इमाम हुसैन की तरफ़ आ गया और आपकी तरफ़ से लड़कर जान क़ुर्बान कर दी और इस तरह कर्बला के इति-हास में उसका नाम अमर हो गया। कर्बला की जंग में इमाम हुसैन सहित बहत्तर शहीदों के नाम मिलते हैं। उनमें इमाम के मित्र और साथी भी थे

ग्रौर उनके ग्रट्ठारह रिश्तेदार भी। रिश्तेदारों में इमाम के बेटे, चार भतीजे, चार सौतेले भाई, दो भाँजे ग्रौर कुछ ग्रन्य सम्बन्धी सम्मिलित हैं। पुरुषों में केवल इमाम के बड़े बेटे सय्यद सज्जाद ज़िन्दा रहे जो उस समय सख्त बीमार थे, इसलिए 'जिहाद' में शरीक नहीं हुए थे।

दुनिया ग्राज भी हैरान है कि सुब्रह से दोपहर तक इन सत्तर-बहत्तर 'मुजाहिदों' ने कैसे हज़ारों की फ़ौज का सामना किया। मगर यह एक ऐतिहासिक तथ्य है जिसे ग्राज तक कोई नहीं झुठला सका। एक-एक बहादुर ने ग्रकेले जाकर फौज से टक्कर ली, सामना किया ग्रौर जंग के मैदान में सीने पर वार खाता हुग्रा शहीद होकर गिर पड़ा। दोस्तों के बाद सम्बन्धियों ने ग्रपने सिर न्यौछावर किये, भाइयों ने जानें दीं, भतीजों ने जंग करके हक़ (सत्य) ग्रौर चाचा के पक्ष में शहादत पायी, भाँजों को, जो ग्रभी बहुत कम-उम्र थे, उनकी धैर्यवान एवं साहसी माँ ने जंग पर इकट्ठा भेजा ग्रौर जब वे नयी उम्र के लड़के बहादुरी से लड़कर शहीद हुए तो उसने ख़ुदा के सामने सजदे में सिर झुका दिया कि उसकी कमाई ग्रच्छे ठिकाने लगी। भतीजे क़ासिम ने एक रात की ब्याही दुल्हन का भी ख़याल न किया, माँ की मुहब्बत की भी परवाह न की ग्रौर दुश्मन से लड़कर चचा पर क़ुर्बान हो गये। फिर हुसैनी-सेना के सबसे वीर ग्रौर योद्धा सिपाही ग्रब्बास बिन ग्रली, जो ध्वजावाहक ग्रौर सेनापति भी थे, बेमिसाल बहादुरी के जौहर दिखाकर शहीद हो गये। ग्रली ग्रकबर, हुसैन का ग्रट्ठारह वर्ष का कड़यल जवान बेटा, बाप की हिमायत में लड़कर शहीद हुग्रा, यहाँ तक कि कोई बाक़ी न रहा। ग्रब इमाम हुसैन जो सुबह से जंग के हथियार सजा चुके थे ग्रौर लाश पर लाश उठाकर ला रहे थे, दुश्मन के सामने मुक़ाबले पर जाने से पहले डेरे में रुख़सत के लिए ग्राये कि बीमार बेटे ग्रौर बहन से मिल लें। नन्हें बच्चों ग्रौर विधवा ग्रौरतों को ढारस बँधायें ग्रौर ख़ुदा पर भरोसा रखने ग्रौर हर सख्ती को झेल लेने का सबक़ देकर ख़ुद भी शहादत के लिए जायें। इस वक़्त ग्रापकी नज़र ग्रपने दूध पीते बच्चे पर पड़ी जो भूख-प्यास से ग्रधमरा था ग्रौर उसकी माँ बेचन थी कि बच्चे को दो घूंट पानी मिल जाये तो शायद इसकी जान बच जाये। इमाम हुसैन बच्चे को गोद में लेकर यज़ीद की फ़ौज के सामने गये। हुसैन समझते थे कि जिन निर्दयी लोगों ने ग्रकबर की जवानी पर दया न की, रसूल के नवासे की बात न सुनी, वे ग्रली ग्रसग़र को पानी क्यों देंगे? मगर उनकी शहादत के उद्देश्य को ग्रौर ग्रधिक स्पष्ट करने के लिए इस नन्हें शहीद की गवाही भी ज़रूरी थी। पानी के सवाल पर यजीदी-सेना ने तीर बरसाये। बच्चे की गरदन पर तीर बैठा ग्रौर वह बाप के हाथों में ख़त्म हो गया। ग्रब हुसैन ने तलवार खींची। ग्ररब के सब से बड़े बहादुर, ग्रली के बेटे हुसैन की

वीरता की धाक तो सारे अरब और अजय, शाम और रे में फैली थी। कुछ देर उन्होंने बेमिसाल साहस से दुश्मनों का मुक़ाबला किया और फिर तीरों, नेज़ों, तलवारों और पत्थरों के हज़ारों घावों से घायल होकर, उस समय घोड़े से अपने को गिराया, जब अस्त्र की अज़ान की आवाज़ आ रही थी। उन्होंने जलती रेत पर अपना घायल मस्तक सजदे के लिए झुका दिया। उस हाल में दुश्मन के बारह अफ़सरों ने आपका मुबारक सिर तन से अलग कर दिया। इमाम हुसैन की शहादत के बाद भी यज़ीद की फ़ौजों की दुश्मनी की आग ठण्डी नहीं हुई, उन्होंने शहीदों के सिर काट लिये कि यज़ीद को पेश करें और रसूल के घराने की इज़्ज़तदार बीबियों के सिरों से चादरें उतार लीं, डेरे जला दिये, स्त्रियों, बच्चों और बीमार सय्यद सज्जाद को कर्बला से दमिश्क़ तक, जो यज़ीद की राजधानी थी, ले गये और वहाँ क़ैद कर दिया गया और कर्बला के मैदान में बहत्तर शहीदों की बेसिर और बेकफ़न-दफ़न लाशें पड़ी रह गयीं।

यह इतिहास की ऐसी शोकपूर्ण घटना है कि जिसकी याद साढ़े तेरह सौ वर्ष से सारी दुनिया में मुसलमान मनाते हैं और केवल मुसलमान ही नहीं, दुनिया भर के सत्य-प्रेमी मानवता के पुजारियों ने हुसैन के बेजोड़ बलिदान को सराहा है और श्रद्धांजलि अर्पित की है। हिन्दुस्तान में भी सैकड़ों वर्ष से हर साल मुहर्रम बड़ी धूमधाम से मनाया जाता है और कितनी ही जगहों पर ग़ैर-मुस्लिम भी इसको अपने रंग में मनाते हैं।

कर्बला की यही घटना है जो 'अनीस' के काव्य की पृष्ठभूमि है। साधारण ऐतिहासिक घटनाओं को कवि ने कल्पना के नेत्रों से देखकर इसमें ऐसे जीते-जागते रंग भरे हैं, और इनको इस ढंग से प्रस्तुत किया है कि हम भी अपने ख़यालों में मानो वही घटनाएँ देखने लगते हैं और उनसे प्रभावित होते हैं।

'अनीस' के ये मर्सिए ज़िन्दगी में स्वयं 'अनीस' के मुख से लाखों लोगों ने सुने थे और अब वर्षों से हज़ारों घरानों में हर साल मुहर्रम के महीने में ये मर्सिए पढ़े और सुने जाते हैं। इनकी लोकप्रियता में आज भी कोई फ़र्क़ नहीं आया।

अन्त में हमने 'अनीस' के काव्य में कर्बला की घटना से सम्बन्धित जिन मुख्य चरित्रों का चित्रण हुआ है, उनके नाम और उनकी उपाधियाँ लिख दी हैं ताकि पढ़ने वाले को नाम, उपाधियाँ और रिश्ते समझने में आसानी हो।

हमें आशा है कि 'अनीस' शताब्दी के अवसर पर यादगारे-अनीस-कमेटी की ओर से उर्दूवालों का यह उपहार हिन्दी पढ़ने वाले क़द्र की नज़र से देखेंगे और पसन्द करेंगे। इन रचनाओं के देवनागरी लिप्यन्तरण में श्री मोहम्मद याक़ूब के सहयोग के लिए हम आभारी हैं।

—सम्पादक

मीर अनीस : परिचय

मीर 'अनीस' का नाम बबर अली था। लेकिन जिस नाम से उन्होंने ख्याति प्राप्त की, वह उनका तखल्लुस (उपनाम अथवा साहित्यिक नाम) 'अनीस' है। १९७४ ई० में मीर 'अनीस' के देहान्त को पूरे सौ वर्ष हो चुके हैं और उनकी स्मृति में अनीस-शताब्दी मनायी जा रही है। इस अवसर पर यह मुनासिब मालूम हुआ कि उर्दू के इस अद्वितीय एवं सुविख्यात कवि के काव्य का एक संकलन हिन्दी में भी प्रकाशित किया जाये ताकि हिन्दी वाले भी उनकी कला से परिचित हो सकें। यूँ तो पिछले कुछ वर्षों में हिन्दी में उर्दू की बहुत-सी अच्छी पुस्तकें छपी हैं, उनमें बहुत से उर्दू-कवियों के काव्य या उनके संकलन भी हैं। इस तरह हिन्दी पढ़ने वाले उर्दू के बहुत से कवियों से परिचित हो चुके हैं। लेकिन मीर 'अनीस' का काव्य अभी तक हिन्दी में नहीं छपा था। 'अनीस' के काव्य को हिन्दी के लिए संपादित करने का काम मुझे सौंपा गया और मैंने अपनी बस भर मेहनत और कोशिश से इसे पूरा किया।

मीर 'अनीस' एक ऐसे सुविख्यात घराने की संतान थे, जो ज्ञान और साहित्य में सदा से रुचि रखते थे। उनके दादा मीर हसन बहुत प्रसिद्ध कवि थे। उनकी सुप्रसिद्ध मसनवी (काव्य-कथा) 'सहरुलबयान' उर्दू की सबसे अच्छी मसनवी समझी जाती है। उनके पिता मीर ख़लीक़ भी अच्छे कवि थे। मर्सिया-गोई (कविता रूप में हज़रत इमाम हुसैन की शहादत की घटनाओं का शोकपूर्ण वर्णन) में उन्होंने बड़ा नाम पैदा किया। पहले हम संक्षिप्त रूप में 'मर्सिये' के सम्बन्ध में बता दें। यूँ तो किसी मरने वाले की याद में जो भी कविता लिखी जाये उसको 'मर्सिया' कहते हैं; लेकिन उर्दू में जब केवल 'मर्सिये' का शब्द बोला जाये तो अभिप्राय उन कविताओं से होगा जो हज़रत रसूल और उनके घराने, विशेषकर उनके नवासे इमाम हुसैन की शहादत पर लिखी गयी हैं। शहादत के वर्णन में रुबाइयाँ (चार पंक्तियों का पद) भी लिखी जाती हैं मगर 'मर्सिये' से तात्पर्य केवल वो कविता है जिसमें छः पंक्तियों का एक पद होता है और जो 'मुसद्दस' कहलाती है। इस पूरी कविता में कोई

विशेष घटना का क्रम के साथ वर्णन होता है।

यूँ तो इमाम हुसैन की शहादत पर मर्सिये उर्दू भाषा के बिलकुल प्रारम्भिक काल ही से लिखे जाते रहे हैं। दक्कनी (दक्षिणी) उर्दू में शुरू ही से 'मर्सिया' मिलता है। मगर उस समय इसकी कोई ख़ास शक्ल तय नहीं हुई थी। ये मर्सिये चौ-मिस्रे (चार पंक्तियों वाले) भी होते थे और पाँच मिस्रे (पंक्तियों) वाले भी। जब छह मिस्रे (पंक्तियों) वाली कविता में मर्सिये लिखे गये तो बहुत ज़्यादा पसन्द किये गये और फिर मर्सिये के लिए यही शक्ल रिवाज पा गयी।

लेकिन उस समय मर्सिया लिखने वाले कवि प्रथम श्रेणी के कवि नहीं समझे जाते थे। कुछ लोग तो 'बिगड़ा शाइर मर्सिया-गो' (अर्थात् कवि बिगड़ता है तो मर्सिया लिखता है) फबती कसते थे। इसकी बड़ी वजह यह मालूम होती है कि बड़े-बड़े कवियों ने मर्सिये की ओर विशेष ध्यान नहीं दिया, केवल धार्मिक कर्तव्य समझकर 'मर्सिया' भी लिख लिया जाता था। सबसे पहले लखनऊ के दो प्रमुख कवियों, मीर 'ज़मीर' एवं मीर 'ख़लीक़' ने मर्सिये को भरपूर कलात्मक क्षमता के साथ पेश किया और काव्य में मर्सिये का विशेष स्थान बनाया। 'अनीस' इन्हीं मीर ख़लीक़ के सुपुत्र थे। उन्हें अपने पिता ही से ये विर्सा मिला था। मीर अनीस ने युवावस्था में कुछ ग़ज़लें भी लिखी थीं मगर मीर ख़लीक़ ने उन्हें मर्सिया लिखने का परामर्श दिया और फिर उन्होंने मर्सिये को ही अपना काव्य-क्षेत्र बनाया। दूसरी ओर, मीर ज़मीर के शिष्य मिर्ज़ा 'दबीर' ने भी 'मर्सिये' को अपनाया और अपने विशेष अन्दाज़ के वह भी उर्दू के ख्यातिप्राप्त मर्सिया लिखने वाले कवि समझे जाते हैं। मगर जहाँ तक काव्य के सौन्दर्य और भाषा तथा वर्णनात्मक प्रवाह एवं यथार्थ चित्रण का सम्बन्ध है, मीर अनीस का काव्य उच्च कोटि का है।

मीर अनीस ने सैकड़ों मर्सिए, सलाम और रुबाइयाँ लिखी हैं। उनकी कविताओं का चयन आसान काम नहीं। लेकिन इस संकलन को पढ़कर भी आप उनकी कलात्मक प्रतिभा से परिचित हो सकते हैं। 'अनीस' ने मर्सिया-गोई (मर्सिया-रचना) की कला को उच्च स्थान प्रदान किया और इसके साथ ही वह ख़ुद उर्दू के सर्वश्रेष्ठ कवियों की पहली श्रेणी में गिने जाने लगे; और उनका काव्य उर्दू साहित्य की प्रतिष्ठा बन गया। न तो 'अनीस' से पहले कोई कवि इस स्थान पर पहुँच पाया था और न 'अनीस' के बाद। सौ वर्ष की इस लम्बी अवधि में, कोई कवि 'अनीस' के दर्जे का एक मर्सिया तो क्या, चन्द बन्द भी न लिख सका।

मीर अनीस की भाषा दिल्ली और लखनऊ का मिला-जुला मीठा, सरल, सुन्दर रूप है। उनका घराना दिल्ली का रहने वाला था जो बाद में फ़ैज़ाबाद

जा बसा था। 'अनीस' का जन्म भी वहीं का है। फिर 'अनीस' अपने पिता के साथ अल्पायु में ही लखनऊ आ गये और लगभग सारी उम्र लखनऊ ही में व्यतीत हुई। इसलिए उनकी भाषा में दिल्ली की सरलता, मिठास, घुलावट और सुन्दरता भी है और लखनऊ की भाषा के गुण यानी वर्णनात्मक सौन्दर्य, शब्द से शब्द निकालने और बात से बात पैदा करने और काव्य का कलात्मक प्रदर्शन भी विद्यमान है। उनके यहाँ शब्दालंकार तथा अर्थालंकार भी मिलते हैं, लेकिन भोंडे और भद्देपन से नहीं। वह जो शब्द जहाँ बिठा देते हैं, मालूम होता है अँगूठी पर नगीना जड़ दिया गया है। उर्दू के प्रसिद्ध आलोचक अलताफ़ हुसैन 'हाली' ने 'अनीस' के लिए कहा था :

दिल्ली की ज़ुबान का सहारा था 'अनीस'
और लखनऊ की आँख का तारा था 'अनीस'
दिल्ली शजर थी तो लखनऊ इसकी बहार
दोनों को है दावा कि हमारा था 'अनीस'

खुद 'अनीस' को भी अपने काव्य के दर्जे और मर्तबे का अन्दाज़ा था, और क्यों न होता ? जब वह मजलिसों (सभाओं) में, जहाँ सैकड़ों लोगों का समूह होता था, अपना मर्सिया पढ़ते, तो घण्टों लोग उसको सुनते और अपना सिर धुनते, प्रशंसा की कोई हद न थी। एक स्थान पर उन्होंने कहा है :

नज़्म है या गौहरे-शहवार की लड़ियाँ 'अनीस'
जौहरी भी इस तरह मोती पिरो सकता नहीं

एक और जगह कहते हैं :

किसी ने तेरी तरह से ऐ 'अनीस'
उरूसे[1] सुखुन को सँवारा नहीं

'अनीस' के काव्य तथा भाषा के गुण बताने के लिए तो पूरी एक पुस्तक भी काफ़ी नहीं। हाँ, यहाँ हम दो-तीन बातों की ओर संकेत करना आवश्यक समझते हैं। पहली चीज़ तो है भाषा पर उनका क़ाबू और क्षमता। लाखों शब्द और हज़ारों मुहावरे और कहावतें उनके मस्तिष्क के कोश में जमा रहती थीं। जिस अवसर पर जिस कहावत या शब्द की आवश्यकता होती वो आप से आप क़लम की नोक पर आ जाता। उन्होंने सैकड़ों ऐसे शब्द और कहावतें भी मर्सिये में शामिल किये हैं जो उनसे पहले केवल बोलचाल में प्रयोग होते थे। उन्होंने इस सुन्दरता से उन्हें काव्य में ढाला कि वे स्तरीय भाषा का एक अंग बन गये। दूसरी बात चरित्र-चित्रण में उनका कमाल है। जीवनी-चित्रण कहानी और उपन्यास में भी बहुत मुश्किल काम है और कविता में तो बहुत कठिन है।

---

१. दुल्हन

उर्दू-शायरी में जीवन-चित्रण 'अनीस' के मर्सियों में अपनी पूरी बुलन्दी पर नज़र आती है।

कर्बला की घटना में जो लोग हैं उनके हर चरित्र के व्यक्तित्व और स्वभाव को इस अन्दाज़ से उभारा और इस सुन्दरता से दिखाया है कि वे चलते-फिरते ज़िन्दा इन्सानों का रूप धारण कर लेते हैं। यही हाल भावनाओं के चित्रण का भी है। बहन, भाई, माँ, बेटा, पति, पत्नी, भाई-भावज, बेटी और बाप, चाचा और भतीजी, नाना और नवासा (दोहता), जिसका भी वर्णन होता है, वही हँसता-बोलता नज़र आता है। एक और बात विशेष रूप से उल्लेखनीय है कि 'अनीस' के नायक-चरित्र यद्यपि अरब के हैं, मगर उनका जीवन, रहन-सहन, बोलचाल और बहुत से स्थान पर रिवाज, पहनावा इत्यादि हिन्दुस्तानी रंग में ढले हुए हैं। उन ख़ुशी और ग़म के उत्सवों के वर्णन में भी हिन्दुस्तानी सभ्यता का रंग साफ़ नज़र आता है, जहाँ विशेषतः स्त्रियों का वर्णन है, वहाँ माँ, बहन, बेटी, पत्नी सब में हिन्दुस्तानी औरत का रूप दिखाई देता है।

हिन्दी के इस संग्रह के लिए हमने मीर 'अनीस' के बारह मर्सियों का चयन किया है। इनमें से कई मर्सिये बहुत बड़े हैं। इसलिए हमने इनमें से कुछ पद चुन लिये हैं, लेकिन इसका ध्यान रखा गया है कि घटना का क्रम न टूटे, और पूरे वृत्तान्त का एक समूचा चित्र सामने आ जाये। इसकी भी व्यवस्था की गयी है कि इमाम हुसैन के जन्म से लेकर उनके देहान्त और फिर उसके आगे की घटनाओं के मर्सिए क्रम के साथ प्रस्तुत हों। पहला मर्सिया है:

या रब चमने-नज़्म को गुलज़ारे-इरम कर

इसमें मीर 'अनीस' ने इस रिवायत (सुनी हुई बात) का उल्लेख किया है कि हज़रत मुहम्मद को अपने नवासे (दौहित्र) हुसैन के जन्म के समय ही ख़ुदा की ओर से यह ख़बर मिल गयी थी कि उनके देहान्त के पश्चात एक ऐसा वक़्त आयेगा जब नाम के मुसलमान इस्लाम के दुश्मन हो जायेंगे और हुसैन के भी दुश्मन हो जायेंगे और उन्हें क़त्ल कर देंगे। हज़रत मुहम्मद और हुसैन के माता-पिता ज़ोहरा और अली ने इस्लाम की मुहब्बत में यह क़ुर्बानी देना स्वीकार कर लिया और ख़ुदा की मर्ज़ी के सामने सिर झुका दिया।

दूसरे मर्सिए में इमाम हुसैन के मदीने से रवाना होने का ज़िक्र है: बीमार बेटी की पिता और कुटुम्ब भर से छुटने के समय की हालत—माँ-बहनों से रूठना, बाप-भाई और माँ से शिकायत करना, तथा उसकी तड़प और व्याकुलता, फिर देशवासियों की विदाई के समय की बेचैनी का ऐसा चित्र खींचा है कि सारा दृश्य आँखों में फिर जाता है।

तीसरे मर्सिए में ज़ैनब के बेटों अर्थात् हुसैन के भाँजों की शहादत का बयान है। लड़कों को युद्ध की आज्ञा देकर विदा करना, माता का स्वयं बच्चों

को भाई पर न्यौछावर होने के लिए भेजना, उनका बहादुरी के साथ दुश्मन की सेना से युद्ध करना और मारा जाना, लाशों का ख़ेमे में आना, माता की व्याकुलता, मगर साथ ही सब्र-सन्तोष की हालत को बड़े दर्द और प्रभावपूर्ण अन्दाज़ में बयान किया है।

चौथा मर्सिया इमाम हुसैन के भतीजे क़ासिम के हाल का है। कहा जाता है कि शहादत के एक दिन पहले इमाम हुसैन ने अपनी बेटी फ़ातमा कुबरा का निकाह क़ासिम से कर दिया था। 'अनीस' ने इस रिवायत को लेकर इस करुण कथा का बड़ी ख़ूबी से वर्णन किया है।

पाँचवें मर्सिये में इमाम हुसैन के छोटे भाई अब्बास की शहादत का बयान है। अब्बास बड़े बहादुर जवान थे और हुसैनी सेना के सेनापति और ध्वजा-वाहक भी थे। वह हुसैन की छोटी बच्ची सकीना को बहुत चाहते थे और उसके प्रेम में प्यासी बच्ची के लिए पानी लेने नहर पर गये थे। उनके हाल के अनीस ने बहुत से मर्सिए लिखे हैं और एक से अच्छा एक है। इस मर्सिए में अब्बास का हुसैन से लड़ाई के लिए जाने और पानी लाने के लिए आज्ञा लेना, बहन, पत्नी और भतीजी से विदा होना, लड़ाई के मैदान में वीरता से लड़ना, नदी से प्यासे बच्चों के लिए पानी भरकर लाना, मगर रास्ते ही में दुश्मन की सेना के हाथों मारा जाना दिखाया गया है। 'अनीस' ने मर्सिए में जिस निपुणता के साथ भाइयों के असीम प्रेम और उनकी जुदाई पर बहन-भाई की हालत दिखाई है, उसको पढ़कर हर दिल तड़प उठता है।

इमाम हुसैन के बेटे अली अकबर के हाल के भी 'अनीस' ने बहुत से मर्सिए लिखे हैं और सभी ऊँचे दर्जे के हैं। ये मर्सिया जिसकी पहली पंक्ति है: 'जब ग़ाज़ियाने-फ़ौजे-ख़ुदा नाम कर गये' उनके मर्सियों में बहुत उम्दा गिना जाता है। बाप-बेटे की मुहब्बत, पिता पर जीवन बलिदान करने की भावना, माँ और फूफी का अकबर से असीम प्रेम मगर सत्य (हक़) के लिए और इस्लाम की ख़ातिर इस लाड़ले को युद्ध के लिए जाने की आज्ञा देना, फिर अली अकबर की वीरतापूर्वक लड़ाई और वीर-गति को प्राप्त होना, बेटे की मृत्यु का पिता, माँ और फूफी पर असर, हरेक चित्रण 'अनीस' ने इस तरह किया कि पूरा नक़्शा सामने आ जाता है और सुनने-पढ़ने वाले एक तरफ़ फ़ड़क-फ़ड़क उठते हैं और दूसरी तरफ़ तड़प-तड़प जाते हैं। इससे अगला मर्सिया है:

जब दौलते-सरवर पे ज़वाल आ गया रन में

इसमें हुसैन के दूध पीते बच्चे अली असग़र की शहादत का ज़िक्र है। यह घटना इतनी दर्दनाक है कि सुनकर पत्थर दिल भी पानी हो जाता है। छह महीने के भूखे-प्यासे बच्चे को इमाम हुसैन दुश्मन की सेना के सामने ले जाते हैं कि दो घूंट पानी शायद मिल जाये। मगर उसके बदले बच्चे का गला तीर

से छेद दिया जाता है और नन्हा मासूम बाप के हाथों पर तड़पकर जान दे देता है। इन दर्दनाक घटनाओं के अंकन में और माँ-बाप की भावनाओं के वर्णन में 'अनीस' ने ऐसा कमाल दिखाया है कि तारीफ़ नहीं हो सकती।

आठवाँ मर्सिया, 'जब क़तअ की मसाफ़ते-शब आफ़ताब ने' 'अनीस' का शाहकार (सर्वश्रेष्ठ) मर्सिया कहलाता है और सच तो यह है कि उर्दू साहित्य का भी शाहकार है। इसमें दृश्य-चित्रण का सौन्दर्य भी है और हुसैन की सेना का संक्षिप्त परिचय भी। हुसैनी सेना की धर्मपरायणता का बर्णन भी है और इमाम के साथ उनके प्रेम तथा सच्चाई के लिए जान देने का उत्साह भी। इस मर्सिए के वास्तविक सौन्दर्य और भाषा तथा तर्ज़ की ख़ूबियों को समझने के लिए तो इसको पूरा पढ़ना और समझना अति आवश्यक है मगर क्योंकि यह मर्सिया बहुत बड़ा है और शैली पेचीदा है इसलिए हमने इसके कुल ७० पद चुनकर दिये हैं।

अगले दो मर्सियों में इमाम हुसैन की शहादत का वर्णन है। पूरा वंश शहीद होने के बाद उनकी जो हालत थी, पहले वह बयान की है, फिर घर की स्त्रियों से उनकी विदाई, भाई-बहन की बेपनाह मुहब्बत, इमाम हुसैन का लड़ाई के लिए मैदान में जाना, दुश्मनों से वीरता के साथ लड़ना और ख़ुदा की राह में जान क़ुर्बान कर देना—इन सब घटनाओं को बड़ी निपुणता के साथ बयान किया है। इसमें दिखाया गया है कि हुसैन किस क़दर सन्तोषी थे, ख़ुदा की मर्ज़ी पर निर्भर रहने वाले और हर दुख और दर्द को हँसी ख़ुशी झेल जाने वाले इन्सान, ऐसा आदमी जिसको इन्साने-कामिल (पूर्ण मानव) कहा जाता है।

ग्यारहवें मर्सिए में इमाम हुसैन के घराने को शाम के बन्दीगृह में क़ैद करने का ज़िक्र है और बारहवें में उनकी बन्दीगृह से छूटने और अपने देश को रवाना होने का वर्णन है। ये सब मर्सिए 'अनीस' के काव्य का बहुत अच्छा नमूना कहे जा सकते हैं।

अन्त में हमने नमूने के तौर पर 'अनीस' के दो सलाम और कुछ रुबाइयाँ भी दी हैं। कविता की भाषा दूसरी ज़ुबान वालों के लिए समझना कठिन होता है और मर्सियों में तो पुरानी रिवायतों, और धार्मिक विश्वासों का भी पर्याप्त विवरण दिया जाता है। हमने कोशिश की है कि कठिन शब्दों और मुहावरों आदि का सरल भाषा में शब्दार्थ दे दिये जायें और फिर जो शेर या बन्द (पद) ज़्यादा मुश्किल थे उनका पूरा अर्थ फ़ुटनोट में दे दिया गया है ताकि पढ़ने वाले इससे अधिक से अधिक लाभ उठा सकें।

—सम्पादक

इमाम हुसैन के वंश के लोग और साथी

नाम	उपाधियाँ
१. **हज़रत मुहम्मद :** पैग़म्बरे-इस्लाम, इमाम हुसैन के नाना	अहमदे-मुस्तुफ़ा, ख़ातिमुन्नबीईन, पयम्बरे-ख़ुदा, रिसालत मआब, महबूबे-ख़ुदा, आदि
२. **अली मुर्तुज़ा :** पहला इमाम, इमाम हुसैन के पिता	शेरे-ख़ुदा, असदुल्लाह, शहे-लौलाक, शहंशाह, शाहे-नजफ़, शाहे-मर्दां आदि
३. **फ़ातिमा ज़ोहरा :** इमाम हुसैन की माता	सय्यदुन्निसा, ख़ैरुन्निसा, मख़दूमए-आलम, बिन्ते-रसूल आदि
४. **इमाम हसन :** दूसरे इमाम, इमाम हुसैन के बड़े भाई	नवासए-रसूल, सय्यदे-अबरार, सय्यदे-मसमूम, हसने-मुजतबा
५. **इमाम हुसैन :** कर्बला के महान् शहीद, अनीस के काव्य के नायक, तीसरे इमाम	नवासए-रसूल, सिब्ते-रसूल, शहे-औलिया, शहंशाह, इमामे-मजलूम, इब्ने-अली, इब्ने-ज़ोहरा, आक़ा, मौला, शाह, मज़लूम
६. **कुबरा, सुग़रा, सकीना :** इमाम हुसैन की बेटियाँ	
७. **सय्यद सज्जाद :** इमाम हुसैन के बड़े बेटे, चौथे इमाम	बीमारे-कर्बला, ज़ैनुल आबिदीन, सय्यद साजिदीन, आबिद, क़ैदी, मज़लूम

नाम	उपाधियां
८. **अली अकबर :** इमाम हुसैन के मँझले बेटे	शबीहे-पयम्बर, सानिए-रसूल, सानिए-अहमद आदि
९. **अली असग़र :** इमाम हुसैन का नन्हा बच्चा कर्बला का सबसे छोटा शहीद	मासूम, नन्हा शहीद
१०. **ज़ैनब बिन्ते अली :** इमाम हुसैन की बहन	सय्यदा, शहज़ादी, बिन्ते-अली, बिन्ते, फ़ातिमा
११. **शहर बानो :** इमाम हुसैन की पत्नी ईरान की शहज़ादी जिनका हुसैन से विवाह हुआ था	ईरान की शहज़ादी, बानो आदि
१२. **अब्बास इब्ने अली :** इमाम हुसैन के सौतेले भाई	जर्रार, सफ़दर, सफ़शिकन, जाँनिसार, जाने-बिरादर आदि
१३. **औन मुहम्मद :** ज़ैनब के बेटे, हुसैन के भांजे	बहादुर, जर्रार, सफ़शिकन,
१४. **फ़िज्ज़ा :** हज़रत फ़ातिमा की कनीज़, जिन्होंने इमाम को पाला था	
१५. **हुर बिन रियाही :** जो मज़ीद की फ़ौज से इमाम की तरफ़ आया और उनकी तरफ़ से लड़कर जान दी	
१६. **हिन्दा :** मज़ीद की पत्नी जो सच्ची मुसलमान थी, इमाम हुसैन के घराने की पाली हुई और श्रद्धालु थी।	

दुश्मन की सेना के लोग जिनका नाम आता है

१. यज़ीद :

शाम का हाकिम, जिसके आदेश पर उसकी सेना ने इमाम हुसैन और उनके साथियों को क़त्ल किया ।

२. अमरो बिन साद :

यज़ीद की सेना का सेनानायक, जिसने इमाम हुसैन को शहीद कराया ।

३. शिम्र :

इमाम हुसैन का क़ातिल, जिसने आपका सिर तन से अलग किया ।

४. हुरमिला :

यज़ीद की सेना का एक फ़ौजी अधिकारी जिसने नन्हें अली असग़र पर तीर चलाकर जान ली ।

५. अरज़क़ :

शाम का बहुत बहादुर सिपाही, यज़ीद की सेना का अफ़सर जो क़ासिम के हाथों मारा गया ।

मर्सिया : १

या रब चमने-नज़्म को गुल्ज़ारे-इरम कर

हज़रत इमाम हुसैन के जन्म
तथा उनकी शहादत का वर्णन

या रब चमने[1]-नज़्म को गुल्ज़ारे[2]-इरम कर
ऐ अब्रे[3]-करम ! खुश्क[4]-ज़राअ़त पे करम[5] कर
तू फ़ैज़[6] का मब्दा[7] है, तवज्जोह कोई दम[8] कर
गुमनाम को एजाज़-[9]बयानों में रक़म[10] कर

जब तक ये चमक मेह्‌र[11] के परतौ[12] से न जाये
अक़्लीमे[13]-सुख़न मेरे क़लम-रौ[14] से न जाये ।।

तारीफ़[15] में चश्मे[16] को समन्दर[17] से मिला दूँ
क़तरे[18] को जो दूँ आब[19] तो गौहर[20] से मिला दूँ
ज़र्रे की चमक मह्‌रे[21]-मुनव्वर से मिला दूँ
ख़ारों[22] को नज़ाकत[23] में गुले-तर[24] से मिला दूँ

गुल्दस्तए-मानी[25] को नये ढंग से बाँधूं
एक फूल का मज़्मूं[26] हो तो सौ रंग[27] से बाँधूं ।।

ना-क़दरि-ए-[28]आलम की शिकायत नहीं मौला
कुछ दफ़्तरे-[29]बातिल की हक़ीक़त[30] नहीं मौला
बाहम[31] गुल-ो[32]-बुलबुल में मुहब्बत नहीं मौला
मैं क्या हूँ, किसी रूह[33] को राहत नहीं मौला

आलम[34] है मुकद्दर[35] कोई दिल साफ़ नहीं है
इस एह्‌द[36] में सब कुछ है पर इन्साफ़ नहीं है ।।

---

१. कविता का उपवन २. स्वर्ग का बाग़ ३. दया रूपी बादल ४. सूखी खेती ५. मेहरबानी, दया, कृपा ६. लाभ ७. स्रोत ८. घड़ी, क्षण ९. चमत्कार-रूपी वाणी रखने वाला कवि १०. लिख दे ११. सूर्य १२. प्रभा, प्रतिबिम्ब १३. कविता-रूपी सत्ता १४. हकूमत, राज्य १५. प्रशंसा १६. स्रोत, सोता १७. समुद्र १८. बूँद १९. चमक २०. मोती २१. प्रकाशमान सूर्य २२. काँटों २३. नर्मी, कोमलता २४. ताजा फूल २५. विचार-रूपी गुलदस्ता २६. विचार, विषय २७. विधि, ढंग २८. दुनिया की नाक़दरी २९. झूठी बातों (झूठे काग़ज़ों) . ३०. असलियत ३१. परस्पर ३२. फूल और बुलबुल (उर्दू कविता में बुलबुल को फूल का प्रेमी माना गया है) ३३. आत्मा (अर्थात् पुरुष) ३४. संसार ३५. कदूरत से भरा हुआ ३६. काल

हरचन्द[1] ज़ुबाँ क्या मेरी और क्या मेरी तक़रीर[2]
दिन रात वज़ीफ़ा[3] है सना-ख़्वानिए[4]-शब्बीर
मंज़ूर[5] है एक बाब[6] में दो फ़स्ल[7] की तहरीर[8]
मौला[9] की मदद का मुतामन्नी[10] है ये दिलगीर[11]

ये फ़स्ल नये रंग से काग़ज़ पे रक़म हो
एक बज़्म[12] हो शादी[13] की तो एक सोहबते[14]-ग़म हो ।।

शावाँ[15] की है तारीख़ सोयम[16] रोज़े[17]-विलादत
और है दहमे माहे[18]-इज़ा यौमे[19]-शहादत
दोनों में बहर-हाल है तहसीले[20]-सग्रादत
वो भी अमले[21]-ख़ैर है ये भी है इबादत

मद्दाह[22] हूँ, क्या कुछ नहीं इस घर से मिला है
कौसर[23] है सिला[24] इसका बहिश्त[25] उसका सिला है ।।

ऐ शम्सो[26]-क़मर और क़मर[27] होता है पैदा
नख़्ले[28]-चमने-दीं का समर[29] होता है पैदा
मख़दूमए[30]-आलम का पिसर[31] होता है पैदा
जो अर्श की ज़ौ[32] है वो गुहर[33] होता है पैदा

हर जिस्म में जाँ आती है मज़कूर[34] से जिसके
नौ नूरे[35]-ख़ुदा होंगे अयाँ[36] नूर[37] से जिसके ।।

या ख़त्मे-[38]रुसुल ! गौहरे[39]-मक़सूद मुबारक !
या नूरे-[40]ख़ुदा ! रहमते[41]-माबूद मुबारक !
या शाहे[42]-नजफ़ ! शादि-ए-[43] मौलूद मुबारक !
या ख़ैरे[44]-निसा ! अख़्तरे[45]-मसऊद मुबारक !

---

१. जितना कुछ है, (यद्यपि) २. वाणी ३. जप ४. शब्बीर (अर्थात् हज़रत इमाम हुसैन) की प्रशंसा ५. वांछित ६. अध्याय ७. खंड ८. विषय सामग्री ९. स्वामी अर्थात हज़रत अली १०. इच्छुक ११. दुखी, रंजीदा १२. महफ़िल, सभा १३. खुशी १४. शोक सभा १५. अरबी महीने का नाम १६. तीन १७. जन्म दिन १८. मुहर्रम के महीने की दसवीं तारीख़ १९. शहीद होने का दिन २०. नेकी का मिलना २१. नेक काम २२. प्रशंसक २३. स्वर्ग की नहर २४. बदला २५. स्वर्ग २६. सूरज और चाँद २७. चाँद २८. धर्म रूपी उपवन का वृक्ष २९. फल ३०. संसार की स्वामिनी ३१. बेटा ३२. ज्योति ३३. मोती ३४. वर्णन ३५. भगवान की छवि ३६. प्रकट ३७. छवि, ज्योति ३८. आख़िरी रसूल अर्थात् हज़रत मुहम्मद ३९. मुराद का मोती अर्थात् दौहित्र ४०. खुदा का नूर, प्रकाश, अर्थात् हज़रत मुहम्मद ४१. भगवान् की कृपा ४२. नजफ़ के बादशाह, अर्थात हज़रत अली ४३. बच्चे के पैदा होने की खुशी ४४. हज़रत फ़ातमा, रसूल की बेटी ४५. अर्थात् नेक बच्चा

रौनक़ हो सदा, नूर दोबाला[1] रहे घर में
इस माहे-दो हफ़्ता[2] का उजाला रहे घर में ।।

ऐ माहे[3]-मुग्रज़्ज़म ! तेरे इक़बाल[4] के सदक़े[5]
शौकत[6] के फ़िदा,[7] ग्रज़मतो-ग्रजलाल[8] के सदक़े
उतरी बरकत, फ़ातमा के लाल के सदक़े
जिस साल ये पैदा हुए, उस साल के सदक़े
क़ुर्बां[9] सहरे-ईद[10] ग्रगर हो तो बजा[11] है
नौरोज़[12] भी इस शब[13] की बज़ुर्गी[14] पे फ़िदा है ।।

थी फ़ातमा बेचैन इधर दर्दे[15]-शिकम से
मुँह फ़क़ था ग्रौर ग्राँसू थे रवाँ दीदए[16]-नम से
वावस्ता[17] थी राहत जो इसी बीवी के दम से
मुज़्तर[18] थे ग्रली, बिन्ते[19]-पयम्बर के ग्रलम से
ग्राराम था एक दम न शहे-क़िल्ग्रा[20] शिकन को
फिरते थे लगाये हुए छाती से हसन को ।।

करते थे दुग्रा बादशहे[21]-यसरब-ो-बतहा
राहिम[22] है तेरी ज़ाते-मुक़द्दस मेरे मौला
ज़ोहरा है कनीज़ ग्रौर मेरा बच्चा तेरा बन्दा
ग्रासान कर ऐ बारे-[23]ख़ुदा ! मुश्किले-ज़ोहरा
नादार[24] है ग्रौर फ़ाक़ा-कश-ो-ज़ार-ो-हज़ीं है
मादर[25] भी तशफ़्फ़ी के लिए पास नहीं है ।।

नागाह[26] दरे-हुजरा हुग्रा मतलउलग्रनवार
दिखलाने लगे नूरे तजल्ली दर-ो-दीवार
ग्रसमा[27] ने ग्रली से ये कहा दौड़ के एक बार
फ़र्ज़न्द मुबारक तुम्हें या हैदरे-कर्रार
इस्पन्द करो फ़ातमा के माह जबीं पर
फ़र्ज़न्द नहीं चाँद ये उतरा है ज़मीं पर ।।

---

१. दुगना २. चौदहवीं का चाँद ३. ग्रर्थात् शबे-बरात का महीना ४. बड़प्पन, बड़ाई ५. न्योछावार ६. शान ७. क़ुर्बान न्योछाबार ८. वड़ाई, तेज, गोरव ९. न्योछावार १०. ईद की सुबह ११. ठीक १२. ईरानियों का मशहूर त्योहार जिस दिन उनका नया वर्ष ग्रारम्भ होता है १३. रात्रि १४. गोरव १५. पेट का दर्द १६. भीगी ग्राँखें १७ इसी बीवी से जीवन का सुख था १८. परेशान १९. रसूल की बेटी की तकलीफ़ से २०. हज़रत ग्रली २१. हज़रत रसूल २२. तू दया करने वाला है २३. ऐ ख़ुदा ज़ोहरा की मुश्किल ग्रासान कर २४. ग़रीब है. फ़ाक़े करती है, कमज़ोर है २५. सांत्वना के लिए माँ भी नहीं है २६. एक दम कोठरी का दरवाज़ा नूर (प्रकाश) से भर गया २७. फ़ातमा की सेविका का नाम

देखा नहीं इस तरह का चेहरा कभी प्यारा
नक़्शा है मुहम्मद से शहन्शाह का सारा
माथे पे चमकता है जलालत[1] का सितारा
अल्लाह ने इस घर में अजब चाँद उतारा
तस्वीरे[2]-रसूले-अरबी देख रहे हैं
आँखों की है गर्दिश, कि नबी देख रहे हैं ।।

मुज़दा[3] ये सुना अहमदे-मुख़्तार ने जिस दम
पस शुक्र[4] के सजदे को गिरे क़िब्लए-आलम
आये तरफ़े[5]-ख़ानए-ज़ोहरा ख़ुशो-ख़ुर्रम
फ़रमाया मुबारक पिसर, ऐ सानिए[6]-मरयम
चेहरा मुझे दिखलादो मेरे नूरे[7]-नज़र का
टुकड़ा है ये फ़र्ज़न्द मुहम्मद के जिगर का ।।

जिस दम ये ख़बर मुख़बिरे[8]-सादिक़ ने सुनायी
अस्मा उसे एक पारचए[9]-नर्म पे लायी
बू इस गुले[10]-ताज़ा की मुहम्मद ने जो पायी
हँसने लगे सुर्ख़ी रुख़े[11]-पुरनूर पे आयी
मुँह चाँद-सा देखा जो रसूले-अरबी ने
लिपटा लिया छाती से नवासे को नबी ने ।।

जाँ आ गयी याक़ूब[12] ने यूसुफ़[13] को जो पाया
क़ुरआँ की तरह रहूले[14]-दोज़ानू पे बिठाया
मुँह मलने लगे मुँह से बहुत प्यार जो आया
बोसे लिये और हाथों को आँखों से लगाया
दिल हिल गया की जब कि नज़र सीनओ-सर पर
चूमा जो गला चल गयी तलवार जिगर पर ।।

---

१. गौरव, बड़ाई २. बच्चा रसूल का हमशक्ल है ३. खुशखबरी ४. ख़ुदा के शुक्र के लिए सज्दे में झुक गये ५. जोहरा के घर ख़ुश-ख़ुश आये ६. मरयम जैसी ७. आँखों के नूर का ८. सच्ची ख़बर देने वाला, अर्थात् हजरत मुहम्मद ९. नर्म कपड़े पर १०. ताज़ा फूल की सुगन्ध ११. नूरानी चेहरे पर १२. एक बड़े पयम्बर, हजरत यूसुफ़ के पिता १३. हजरत याक़ूब के पुत्र, बड़े पयम्बर १४. जिस पर क़ुरआन रखकर पढ़ी जाती है

जोश आया था रोने का मगर थाम[१] के रिक़्क़त
इस कान में फ़रमायी अज़ाँ[२] उसमें अक़ामत[३]
हैदर[४] से ये फ़रमाया कि ऐ शाहे विलायत
क्यों, तुमने भी देखी मेरे फ़र्ज़न्द की सूरत
पुर-नूर है घर, तुमको मिला है क़मर ऐसा
दुनिया में किसी ने नहीं पाया पिसर ऐसा ।।

क्योंकर न हो तुम सा पिदर औ फ़ातमा सी माँ
दो शम्स-ो-क़मर का है ये एक नय्यरे[५]-ताबाँ
की अर्ज़ ये हैदर ने कि ऐ क़िबलए[६]-ईमाँ
हक़ इस पे रखे सायए-पैग़म्बरे[७]-ज़ी शाँ
आला[८] है वो सब से जो मुक़ामे-शहे-दीं है
बन्दा हूँ मैं और ये भी ग़ुलामे-शहे-दीं है ।।

फ़रमाने लगे हँस के शहे-यसरब[९]-ो-बतहा
भाई कहो फ़रज़न्द का कुछ नाम भी रक्खा
की अर्ज़ ये हैदर ने कि ऐ सय्यदे-वाला[१०]
सबक़त[११] करूँ हज़रत पे ये मक़दूर[१२] है मेरा
फ़रमाया कि मौक़ूफ़[१३] है ये रब्बे अला पर
मैं भी सबक़त कर नहीं सकता हूँ ख़ुदा पर ।।

बस इतने में नाज़िल हुए जब्रीले[१४]-ख़ुश अंजाम
की अर्ज़ कि फ़रमाता है ये ख़ालिक़े[१५] अल्लाम
प्यारा है निहायत हमें ज़ोहरा का गुल अन्दाम[१६]
या ख़त्मे-रुसुल ! हमने हुसैन उसका रखा नाम
ये हुस्न में सरदारे-हसीनाने-ज़मन[१७] है
मश्तक़[१८] तो है अहसान से, तसग़ीर हसन है ।।

---

१. रोने को रोक कर २. ३. जब बच्चा पैदा होता है तो मुसलमान उस के एक कान में अज़ान देते हैं और दूसरे में अक़ामत : यह भी धर्म का एक अंश है ४. अली की उपाधि ५. चमकता सूरज ६. ईमान वालों का क़िब्ला ७. बड़े मर्तबे वाले रसूल ८. आप का स्थान सब से ऊँचा है ९. अर्थात् हजरत मुहम्मद १०. पहल करना ११. पहल करना १२. मजाल है, शक्ति है १३. यह तो ख़ुदा की मर्जी पर है १४. जिब्रील (फ़रिश्ता, जो रसूल के पास 'वही' लाता था १५. गौरवशाली भगवान् १६. बेटा १७. दुनिया के रूपवानों का सरदार १८. अर्थात् शब्द 'हुसैन' 'अहसान' से निकला है और इसका अर्थ है, छोटा हसन : हसन, इमाम हुसैन के बड़े भाई थे

फ़य्याज़[1] ने कौनेन[2] की दौलत उसे दी है
दी है जो अली को, वो शुजाअत[3] उसे दी है
सब्र उसको इनायत किया हिम्मत उसे दी है
इन सबके सिवा अपनी मुहब्बत उसे दी है
आला[4] है मुअज़्ज़म है मुकर्रम है वली है
हादी[5] है वफ़ादार है ज़ाहिद है सख़ी है ।।

है[6] ये सबबे-तहनियत-ो-ताज़ियत इस दम
है[7] शादी ओ ग़म गुल्शने ईजाद में तौअम
लिपटाये हैं छाती से जिसे क़िब्लए-आलम
बे[8]-जुर्म-ो-ख़ता ज़ब्ह करेंगे उसे अज़लम
गर हश्र[9] भी होगा तो ये आफ़त न टलेगी
सजदे में छुरी हल्क़े-मुबारक पे चलेगी ।।

होगा ये मुहर्रम में सितम ऐ शहे-ज़ी-जाह[10]
छुप जायेगा आँखों से इसी चाँद में ये माह
तारीख़ दहम[11] जुम्आ के दिन अस्र के वक्त आह
नेज़े पे चढ़ायेंगे सरे-पाक को गुम-राह[12]
कट जायेगा जब सर तो सितम लाश पे होंगे
घोड़ों के क़दम सीनए[13]-सद-पाश पे होंगे ।।

चिल्लाये मुहम्मद के मैं बिस्मिल[14] हुआ, भाई !
ऐ वाये अख़ी[15] ! क्या ये ख़बर मुझको सुनाई
दिल हिल गया बरछी सी कलेजे में दर आई
ये वाक़िआ सुनकर न जियेगी मेरी जाई
मुम्किन नहीं दुनिया में दवा ज़ख़्मे-जिगर की
क्योंकर कहूँ ज़ोहरा से ख़बर मर्गे-पिसर[16] की ।।

जिस वक़्त सुनी फ़ातमा ने ये ख़बरे[17]-ग़म
शादी में विलादत[18] की बपा हो गया मातम

---

१. दयालु, बहुत देने वाला २. दोनों संसार ३. बहादुरी ४. उसका स्थान बहुत ऊँचा है, वह ख़ुदा का पहुँचा हुआ बन्दा है ५. वह लोगों का मार्ग-दर्शक है, ख़ुदा का वफ़ादार बन्दा है, तपस्या करने वाला, और दानी है ६. बधाई देने और पुर्सा देने का कारण यह है ७. ससार में ख़ुशी और दुख इकट्ठे हैं ८. बक़सूर, बेगुनाह ९. क़यामत १०. अर्थात् हज़रत मुहम्मद ११. दसवीं तारीख़ १२. जिन्होंने सच्चाई का रास्ता छोड़ दिया है १३. सौ टुकड़े हुई छाती पर १४. तड़प उठा, जख़्मी हुआ १५. हाय भाई, १६. मौत की ख़बर, १७. दुख की ख़बर, १८. पैदा होने की ख़ुशी

चिल्लाती थी सर पीट के वो सानिए-मरयम
बेटी पे छुरी चल गयी या सय्यदे-आलम[1]
खंजर के तले चाँद सी तसवीर की गरदन
लुट जायेगी है-है, मेरे शब्बीर की गरदन ।।

है-है ! कई दिन तक न मिलेगा उसे पानी
है-है ! ये सहेगा त-अ-बे[2] तश्ना दहानी
हो जायेंगे एक जान के सब दुश्मने-जानी
है-है ! मेरा मेहबूब मेरा यूसुफ़े[3]-सानी
पैराह[4]-ने-सदचाक कफ़न होएगा इसका
सर नेज़े पे और ख़ाक पे तन होएगा इसका ।।

सब्र अपना दिखाने को ये आये हैं जहाँ में
यूँ ख़ल्क़ से जाने को ये आये हैं जहाँ में
जंगल के बसाने को ये आये हैं जहाँ में
अम्माँ के रुलाने को ये आये हैं जहाँ में
हम चाँद सी सूरत पे न शैदा[5] हुए होते
ऐ काश, मेरे घर में न पैदा हुए होते ।।

दुनिया मुझे अन्धेर है इस ग़म की ख़बर से
शोलों की तरह आह निकलती है जिगर से
दामन पे टपकता है लहू दीदए[6]-तर से
बस आज सफ़र कर गयी शादी[7] मेरे घर से
जिस वक़्त तलक जीती हूँ मातम में रहूँगी
मज़लूम हुसैन आज से मैं इनको कहूँगी ।।

फिर देख के फ़रज़न्द की सूरत ये पुकारी
ऐ मेरे शहीद ! ऐ मेरे बेकस ! तेरे वारी
हाँ बाद मेरे ज़ब्हा करेंगे तुझे नारी[8]
बनती हूँ अभी से मैं इज़ादार[9] तुम्हारी
दिल और किसी शग़ल[10] में मसरूफ़ न होगा
बस आज से रोना मेरा मौक़ूफ़[11] न होगा ।।

---

१. यानी हज़रत रसूल २. प्यास की तकलीफ़ ३. मेरा यूसुफ़ जैसा सुन्दर बेटा ४. सौ टुकड़े लिबास ५. न्यौछावर, प्रेमी ६. भीगी आँखों से ७. खुशी ८. नरक में जाने वाला ९. मातम करने वाली १०. काम ११. यानी ख़त्म न होगा

फ़रमाया मुहम्मद ने कि ऐ फ़ातमा ज़ोहरा
क्या मरज़िए[1]-माबूद से बन्दे का है चारा
ख़ालिक़ ने दिया है उसे वो रुत्वए-ग्राला[2]
जिब्रील सिवा कोई नहीं जानने वाला
मैं भी हूँ फ़िदा इस पे के ये फ़िदयए[3]-रब है
ये लाल तेरा बख़शिशे[4] उम्मत का सबब है ।।

इस बात का ग़म है ग्रगर ऐ जाने पयम्बर
बे-दफ़्न-ो-कफ़न रन में रहेगा तेरा दिलबर
जब क़ैद से होवेगा रिहा, ग्राबिदे-मुज़्तर
तुर्बत में उसे दफ़्न करेगा, वोही ग्राकर
ग्ररवाहे[5]-रुसूलाने - ज़मन रोयेंगी इसको
सर पीट के ज़ैनब सी बहन रोयेंगी इसको ।।

जब चर्ख़[6] पे होएगा ग्रयाँ[7] माहे-मुहर्रम
हर घर में बपा होएगी एक मजलिसे[8] मातम
ग्रायेंगे मलक[9] ग्रर्श से वाँ रोने को बाहम
मातम ये वो मातम है कि होगा न कभी कम
पुर-नूर[10] सदा इसका इज़ाख़ाना रहेगा
ख़ुर्शीदे[11]-जहाँ गर्द भी परवाना रहेगा ।।

लो याँ से बस ग्रब मजलिसे-मातम का बयाँ है
वो फ़स्ले-ख़ुशी ख़त्म हुई ग़म का बयाँ है
मज़लूमिए[12]-मुल्ताने-दोग्रालम का बयाँ है
हंगामए[13]-ग्राशूरे-मुहर्रम का बयाँ है
हाँ देख ले मुश्ताक़[14] जो हो फ़ौजे-ख़ुदा का
लो बज़्म[15] में खुलता है मुरक्का शुहदा का ।।

दुनिया भी ग्रजब घर है कि राहत[16] नहीं जिसमें
वो गुल[17] है ये गुल बूए-मुहब्बत नहीं जिसमें

---

१. ख़ुदा की मर्ज़ी २. ऊँचा स्थान ३. ख़ुदा की राह में जान देने वाला ४. उम्मत (यानी रसूल को मानने वाले) को बख्शवाने (मुक्ति दिलाने) वाला ५. ख़ुदा के रसूलों की ग्रात्माएँ। ६. ग्राकाश, ग्रासमान ७. मुहर्रम का महीना शुरू होगा ८. ग़म की मजलिस (सोग की बैठक) ग्रर्थात् मातम होगा या रोया जायेगा ९. ग्रासमान से फ़रिश्ते रोने को ग्रायेंगे १०. जिस महफ़िल में उसका मातम होगा, वहाँ सदा नूर बरसेगा ११. दुनिया के साथ चलने वाला सूरज १२. यानी हुसैन की मुसीबतों का बयान है १३. मुहर्रम की दसवीं को जो हंगामा हुग्रा उसका वर्णन है १४. जिसे ख़ुदा की सेना देखने की इच्छा हो वह देख ले १५. महफ़िल में १६. ग्राराम १७. यह वह फूल है जिसमें प्रेम की सुगन्धि नहीं है

वो दोस्त है ये दोस्त मुरव्वत नहीं जिसमें
वो शह्द है ये शह्द हलावत[1] नहीं जिसमें
वे-दर्दो[2]-ग्रलम शामे-ग़रीबाँ[3] नहीं गुज़री
दुनिया में किसी की कभी यकसाँ नहीं गुज़री ।।

गोदी है कभी माँ की कभी क़ब्र का[4] ग्रागोश
गुल[5] पै-रहन ग्रकसर नज़र ग्राते हैं कफ़नपोश[6]
सरगर्मे[7]-सुख़न है कभी इन्साँ, कभी ख़ामोश
गह[8] तख़्त है ग्रौर गाह जनाज़ा ब-सरे-दोश
एक तौर पे देखा न जवाँ को न मुसिन[9] को
शब को तो छपरखट में हैं ताबूत[10] में दिन को ।।

है ग्रालमे-फ़ानी[11] की ग्रजब सुब्हा ग्रजब शाम
गेह ग़म[12] कभी शादी कभी ईज़ा[13] कभी ग्राराम
नाज़ों से पला फ़ातमा ज़ोहरा का गुल-ग्रन्दाम[14]
वा हसरत[15]-ो-दर्दा के वो ग्राग़ाज़ ये ग्रन्जाम
राहत न मिली घर के तलातुम[16] से दहम[17] तक
मज़लूम ने फ़ाक़े किये हफ़्तुम[18] से दहम तक ।।

रेती पे ग्रज़ीज़ों का मुरक्क़ा तो है ग्रब्तर[19]
शह का है ये नक़्शा कि हैं तसवीर[20] से शश्दर
फ़रज़न्द न मुस्लिम के, न हम्शीर के दिल्बर
क़ासिम हैं, न ग्रब्बास, न ग्रक्बर हैं, न ग्रसग़र
सब नज़्र को दरबारे-पयम्बर में गये हैं
रुख़्सत को ग्रकेले शहे-दीं घर में गये हैं ।।

मंजूर[21] है फिर देख लें हमशीर की सूरत
फिर ले गयी है घर में सकीना की मुहब्बत
सज्जाद से कुछ कहते हैं ग्रसरारे-इमामत[22]
बानी-ए[23]-दो ग्रालम से भी है ग्राख़िरी रुख़्सत

---

१. मिठास २-३. मुसाफ़िरों की शाम मुसीबत ग्रौर दुख में गुज़रती है ४. क़ब्र की गोद ५. फूल से कपड़े पहनने वाले ६. कफ़न पहने ७. इनसान कभी खूब बातें करता है, कभी चुप हो जाता है (ग्रर्थात् मर जाता है) ८. कभी वह तख़्त पर होता है ग्रौर कभी दूसरों के कन्धों पर उसका जनाज़ा होता है ९. बूढ़ा १०. ताबूत ११. ख़त्म होने वाली दुनिया १२. कभी ग़म १३. दुख, तकलीफ़ १४. फूल जैसा बेटा १५. हाय ग्रफ़सोस ! प्रारम्भ वह था ग्रौर ग्रन्त यह है १६. तूफ़ान १७. दसवीं तक १८. सातवीं, १९. बिखरा हुग्रा २० तसवीर की तरह हैरान २१. ख़्वाहिश है कि फिर बहिन को देख लें २२. धार्मिक मार्ग-दर्शन २३. दोनों संसार की शहज़ादी ग्रर्थात् इमाम हुसैन की पत्नी बानो

मतलूब[१] ये है ज़ेबे-बदन रख़्ते-कुहन हो
तार[२] बादे-शहादत वोही मल्बूसे-बदन हो ।।

ख़ेमे में मुसाफ़िर का वो आना था क़यामत
एक एक को छाती से लगाना था क़यामत
आना तो ग़नीमत था, प' जाना था क़यामत
थोड़ा सा वो रुख़्सत का ज़माना था क़यामत
वा बैन इधर सब्रो[३]-शकेबाई की बातें
अफ़सानए[४]-मातम थीं बहन भाई की बातें ।।

हज़रत का वो कहना कि बहन सब्र करो सब्र
उम्मत के लिए वालिदा साहब ने सहे जब्र[५]
वो कहती थीं क्योंकर न मैं रोऊँ सिफ़ते[६]-अब्र
तुम पहनो कफ़न और न बने हाय मेरी क़ब्र
लुटते हुए अम्माँ का घर इन आँखों से देखूँ
है है, [७]तहे-ख़ंजर तुम्हें किन आँखों से देखूँ ।।

इस उम्र में थोड़े ग़मे-जाँ-काह[८] उठाये
अश्क[९] आँखों से अम्माँ के जनाज़े पे बहाये
आँसू न थमे थे कि पिदर[१०] ख़ूँ में नहाये
टुकड़े दिले-शब्बर[११] के लगन में नज़र आये
हज़रत के सिवा अब कोई सर पर नहीं भाई
इन्साँ हूँ कलेजा मेरा पत्थर नहीं भाई ।।

हर शख़्स को है यूँ तो सफ़र ख़ल्क़ से करना
दुश्वार[१२] है एक आन मुसाफ़िर का ठहरना
इन आँखों से देखा है बज़ुर्गों का गुज़रना
है सब से सिवा हाय ! ये मज़लूमी का मरना
सदक़े गयी यूँ रन कभी पड़ते नहीं देखा
एक दिन में भरे घर को उजड़ते नहीं देखा ।।

है-है, तुम्हें लेके मैं कहाँ छुप रहूँ भाई
लुटती है मेरे चार बज़ुर्गों की कमाई

---

१. चाहते हैं कि पुराने कपड़े पहन लें २. ताकि शहादत के बाद, वे ही कपड़े जिस्म पर रह जायें ३. सब्र और बरदाश्त ४. एक मातम का अफ़साना, क़िस्सा, कथा ५. सख़्ती, तकलीफ़ ६. बादल की तरह ७. ख़ंजर के नीचे ८. जान लेवा ग़म ९. आंसू १०. बाप, पिता ११. ज़ैनब के बड़े भाई (इमाम हसन की उपाधि) जिनको विष देकर शहीद किया गया था १२. मुश्किल

किस दश्ते[1]-पुर-आशोब में क़िस्मत मुझे लायी
या रब[2] कहीं मर जाये यदुल्लाह की जाई
जोहरा का पिसर वक़्ते[3]-जुदाई मुझे रोये
सब को तो मैं रोयी हूँ ये भाई मुझे रोये ।।

ज़ैनब की वो ज़ारी[4] वो सकीना का बिलकना
वो नन्ही सी छाती में कलेजे का धड़कना
वो चाँद सा मुँह और वो बुन्दे का चमकना
हज़रत का वो बेटी की तरफ़ यास[5] से तकना
हसरत[6] से ये जाहिर था कि माज़ूर[7] हैं बीबी
पैदा[8] था निगाहों से कि मजबूर हैं बीबी ।।

वो कहती थी बाबा हमें छाती से लगाओ
फ़रमाते थे शह, आओ न, जाने[9]-पिदर आओ
हम कुढ़ते हैं, लो आँखों से आँसू न बहाओ
खुश्बू तो ज़रा गेसुए[10]-मुश्की की सुँघाओ
कौसर पे भी तुम बिन नहीं आराम चचा को
हम जाते हैं कुछ देती हो पैग़ाम[11] चचा को ।।

बीवी कहो क्या हाल है अब माँ का तुम्हारी
किस गोशे[12] में बैठी हैं कहाँ करती हैं ज़ारी
जब से सुए[13]-जन्नत गयी अक्बर की सवारी
देखा न उन्हें घर में, हम आये कई बारी
थी सबकी मुहब्बत उन्हें बेटे के ही दम तक
क्या आख़िरी रुख़्सत को भी आयेंगी न हम तक ।।

किस जा हैं, तलब[14] हमको करें, याद ही आयें
मुमकिन[15] नहीं अब वो हमें या हम उन्हें पायें
कुछ हमसे सुनें, कुछ हमें हाल अपना बतायें
एक दम कि मुसाफ़िर हैं हमें देख तो जायें
बाद अपने ये लूटा हुआ घर और लुटेगा
अफ़सोस कि एक उम्र का साथ आज छुटेगा ।।

---

१. मुसीबत के जंगल में २. यानी ख़ुदा मुझे मौत दे दे ३. बिछड़ते समय ४. रोना ५. निराशा से ६. हसरत निराशा ७. मजबूर लाचार ८. आँखों से यह जाहिर था कि हम मजबूर हैं ९. बाप की जान : पिता की प्यारी १०. सुगन्धित केश ११. सन्देश १२. कोना १३. स्वर्ग की तरफ़ १४. बुलायें १५. सम्भव नहीं

ग़श में जो सुनी बानुए-मुज़तर ने ये तक़रीर
साबित[1] हुग्रा मरने को चले हज़रते-शब्बीर
सर नंगे उठी छोड़ के गहवारये[2]-बे-शीर
चिल्लायी मुझे होश न था या शहे[3]-दिलगीर
जाँ तन से कोई ग्रान में ग्रब जाती है ग्राक़ा
ये ख़ादिमा रुख़सत के लिए ग्राती है ग्राक़ा ॥

ये सुन के बढ़े चन्द क़दम शाहे[4]-खुश इक़बाल
क़दमों पे गिरी दौड़ के वो खोले हुए बाल
था क़िब्लए[5]-ग्रालम का भी इस वक़्त ग्रजब हाल
रोते थे ग़ज़ब[6] ग्राँखों पे रक्खे हुए रूमाल
फ़रमाते थे जाँकाह[7] जुदाई का ग्रलम है
उट्ठो तुम्हें रूहे-ग्रली ग्रक्बर की क़सम है ॥

वो कहती थी क्योंकर मैं उठूँ ऐ मेरे सरताज[8]
वाली[9] ! इन्हीं क़दमों की ब-दौलत है मेरा राज
सर पर जो न होगा पिसरे-साहिबे-मेराज[10]
चादर के लिए खल्क़ में हो जाऊँगी मुहताज
छूटे जो क़दम, मर्तबा घट जायेगा मेरा
क़ुर्बान गयी तख़्त उलट जायेगा मेरा ॥

हज़रत ने कहा किसका सदा साथ रहा है
हर ग्राशिक़-ो-माशूक़ ने ये दाग़[11] सहा है
दारे[12]-मेहन इस दार को दावर ने कहा है
हर[13] चश्म से खूने-जिगर इस ग़म में बहा है
फ़ुर्क़त[14] में ग्रजब हाल था ख़ालिक़ के वली का
साथ ग्राठ बरस तक रहा ज़ोहरा-ग्रो-ग्रली का

सौ सौ बरस एक घर में मुहब्बत से रहे जो
इस मौत ने दम भर में जुदा कर दिया उनको
कुछ मर्ग[15] से चारा नहीं ऐ बानुए खुश-खो
है शाक़[16] फ़लक पर कि रहें एक जगह दो

---

१. यक़ीन हो गया, पता चल गया २. बिना दूध वाले बच्चे का झूला ३. ४. ५. ग्रर्थात् इमाम हुसैन ६. बहुत ज्यादा ७. जान लेने वाला ८. सिर के ताज ९. मेरे सरपरस्त ग्रर्थात् पति १०. ग्रर्थात् रसूल के बेटे ११. दुख १२. ख़ुदा ने इस दुनिया को दुख की जगह बताया है १३. मृत्यु के शोक में हर ग्राँख रोती है १४. यानी जुदाई में ग्रली का बुरा हाल था १५. मौत १६. ग्रासमान को यह गवारा नहीं

किस किस पे ज़माने ने जफ़ा[१] की नहीं साहब
अच्छों से कभी उसने वफ़ा की नहीं साहब ।।
ज़ैनब को तो देखो कि है किस दुख में गिरफ़्तार[२]
ऐसा कोई इस घर में नहीं बेकस-ो-नाचार
तन्हा हैं कि बेजाँ हुए दो चाँद से दिलदार[३]
दुनिया से गया अक्बरे-नाशाद-सा ग़म-ख़्वार
बेटे भी नहीं, गोद का पाला भी नहीं है
उनका तो कोई पूछने वाला भी नहीं है ।।
ये कहके कुछ आहिस्ता कहा गोशे-पिसर[४] में
बीमार के रोने से क़यामत हुई घर में
अन्धेर ज़माना हुआ बानो की नज़र में
ग़श हो गयी ज़ैनब ये उठा दर्द जिगर में
ठहरा न गया वाँ शहे-वाला निकल आये
तन्हा गये रोते हुए तन्हा निकल आये ।।
या रब ये है सादात[५] का घर तेरे हवाले
राँडें हैं कई ख़स्ता[६]-जिगर तेरे हवाले
बेकस[७] का है बीमार पिसर तेरे हवाले
सब हैं तेरे दरया के गुहर तेरे हवाले[८]
आलम[९] है कि ग़ुरबत[१०] में गिरफ़्तारे बला हूँ
मैं तेरी हिमायत[११] में उन्हें छोड़ चला हूँ ।।
मैं यह नहीं कहता के अज़ीयत[१२] न उठायें
या अहले[१३]-सितम आग से ख़ेमा न जलायें
नामूस[१४] लुटें, क़ैद हों और शाम[१५] में जायें
मोहलत मेरे लाशे पे भी रोने की न पायें
बेड़ी में क़दम, तौक़ में आबिद का गला हो
जिसमें तेरे मेहबूब[१६] की उम्मत का भला हो ।।

१. ज़ुल्म २. आग्रस्त ३. बेटे ४. बेटे के कान में ५. ऐ ख़ुदा ! यह सय्यदों का घराना तेरे सुपुर्द है ६. जिन के दिल टुकड़े हैं ७. यानी हुसैन, बेसहारा का ८. तेरे दरया के मोती तेरे ही सुपुर्द हैं ९. जानता है १०. मुसाफ़िरी ११. मदद के सहारे १२. दुख, तकलीफ़ १३. यज़ीद की सेना के निष्ठुर सिपाही १४. औरतें १५. जिस मुल्क में यज़ीद की राजधानी थी १६. यानी हज़रत मुहम्मद

मर्सिया : २

फ़र्ज़न्दे-पयम्बर का मदीने से सफ़र है

हज़रत इमाम हुसैन का
मदीने से प्रस्थान

फ़र्ज़न्दे[1]-पयम्बर का मदीने[2] से सफ़र है
सादात[3] की बस्ती के उजड़ने की ख़बर है
दरपेश[4] है वो ग़म कि जहाँ ज़ेर-ो-ज़बर है
गुल[5] चाक गरीबाँ हैं सवा ख़ाक बसर है
गुल-रु सिफ़ते-ग़ुंचा[6] कमर-बस्ता खड़े हैं
सब एक जगह सूरते-गुलदस्ता खड़े हैं ॥

आरास्ता[7] हैं बहरे-सफ़र सर्वे-क़बापोश[8]
अम्मामे सरों पर हैं अबाएँ ब[9]-सरे-दोश
याराने-वतन होते हैं आपस में हम-आग़ोश
हैराँ कोई तसवीर की सूरत कोई ख़ामोश
मुँह मलता है रोकर कोई सरवर के क़दम पर
गिर पड़ता है कोई अली अकबर के क़दम पर ॥

अब्बास का मुँह देख के कहता है कोई आह
अब आँखों से छुप जायेगी तसवीरे-यदुल्लाह
कहते हैं गले मिलके ये क़ासिम के हवा[10]ख़्वाह
वल्लाह दिलों पर है अजब सदमए[11]-जाँकाह ॥
हम लोगों से शीरीं सुख़नी[12] कौन करेगा
ये उन्स, ये ख़ुल्क़े[13]-हसनी कौन करेगा ॥

रोते हैं वो जो औन-ो-मुहम्मद के हैं हम-सिन
कहते हैं कि मक्तब में न जी बहलेगा तुम बिन
इस दाग़ से चैन आये हमें ये नहीं मुमकिन
गर्मी का महीना है सफ़र के ये नहीं दिन

---

१. बेटा रसूल का अर्थात् इमाम हुसैन २. अरब का एक शहर ३. रसूल का घराना। ४. ऐसे दुःख का सामना है कि दुनिया बरबाद नज़र आ रही है ५. फूलों ने अपना गरीबान फाड़ डाला और हवा अपने सिर पर ख़ाक उड़ा रही है ६. कली की तरह ७. सजे हुए ८. मानो सर्व क़बाएँ पहनते हैं ६. कन्धों पर १०. साथी ११. जान लेवा रंज १२. मीठी बातें १३. हसन का सा अख़लाक़

तुम हज़रते-शब्बीर के साये में पले हो
क्या धूप की तक्लीफ़ उठाने को चले हो।

हमजोलियों से कहते थे वो दोनों बिरादर
हाँ भाइयो तुम भी हमें याद आओगे अक्सर
पाला है हमें शाह ने हम जायें न क्योंकर
मामूँ रहें जंगल में तो अपना है वो ही घर

वो दिन हो कि हम हक़्क़े-गुलामी से अदा हों
तुम भी ये दुआ माँगो कि हम शह पे फ़िदा हों।

रुख़सत के लिए लोग चले आते हैं बाहम[1]
हर क़ल्ब[2] हज़ीं[3] है तो हरेक चश्म[4] है पुरनम
ऐसा नहीं घर कोई कि जिसमें नहीं मातम[5]
गुल है कि चला दिल्बरे-मख़्दूमए[6]-आलम

ख़ुद्दाम[7] खड़े पीटते हैं क़ब्रे-नबी के
रोज़े[8] पे उदासी है रसूले-अरबी के।

है जब से खुला हाले-सफ़र बन्द है बाज़ार
ये[9] जिन्से-ग़म अर्ज़ां है कि रोते हैं दुकाँदार
ख़ाक उड़ती है, वीरानिए-यसरब के हैं आसार
हर कूचे में है शोर कि है-है शहे-अब्रार

अब याँ कोई वाली न रहा आह हमारा
जाता है मदीने से शेहन्शाह हमारा।

तदबीरे-सफ़र में हैं इधर सिब्ते[10]-पयम्बर
घर में कभी आते हैं, कभी जाते हैं बाहर
अस्बाब निकलवाते हैं अब्बासे-दिलावर
तक़्सीमे-सवारी के तरद्दुद[11] में हैं अक्बर

शह को जिन्हें ले जाना है वो पाते हैं घोड़े
ख़ाली हुआ अस्तबल चले आते हैं घोड़े।

औराते[12]-मुहल्ला चली आती हैं ब-सद ग़म[13]
कहती हैं ये दिन रेहलते[14]-ज़ोहरा से नहीं कम
पुर्से की तरह रोने का गुल होता है हर दम
फ़र्श उठता है क्या, बिछती है गोया सफ़े-मातम

---

१. इकट्ठे २. दिल ३. शोकग्रस्त, दुखी ४. हर आँख में आँसू हैं ५. शोक ६. फ़ातमा का बेटा ७. नौकर ८. क़ब्र ९. दुख इतना सस्ता हो गया है १०. रसूल का नवासा ११. चिन्ता १२. औरतें; स्त्रियाँ १३. सैंकड़ों ग़मों के साथ १४. मौत

तुम हज़रते-शब्बीर के साये में पले हो
क्या धूप की तक्लीफ़ उठाने को चले हो।

हमजोलियों से कहते थे वो दोनों बिरादर
हाँ भाइयो तुम भी हमें याद ग्राग्रोगे ग्रक्सर
पाला है हमें शाह ने हम जायें न क्योंकर
मामूँ रहें जंगल में तो ग्रपना है वो ही घर
वो दिन हो कि हम हक़्क़े-ग़ुलामी से ग्रदा हों
तुम भी ये दुग्रा माँगो कि हम शह पे फ़िदा हों।

रुख़सत के लिए लोग चले ग्राते हैं वाहम[1]
हर क़ल्ब[2] हज़ीं[3] है तो हरेक चश्म[4] है पुरनम
ऐसा नहीं घर कोई कि जिसमें नहीं मातम[5]
ग़ुल है कि चला दिलबरे-मख़्दूमए[6]-ग्रालम
ख़ुद्दाम[7] खड़े पीटते हैं क़ब्रे-नबी के
रोज़े[8] पे उदासी है रसूले-ग्ररबी के।

है जब से खुला हाले-सफ़र बन्द है बाज़ार
ये[9] जिन्से-ग़म ग्रर्ज़ां है कि रोते हैं दुकाँदार
ख़ाक उड़ती है, वीरानिए-यसरब के हैं ग्रासार
हर कूचे में है शोर कि है-है शहे-ग्रब्रार
ग्रब याँ कोई वाली न रहा ग्राह हमारा
जाता है मदीने से शेहन्शाह हमारा।

तदबीरे-सफ़र में हैं इधर सिब्ते[10]-पयम्बर
घर में कभी ग्राते हैं, कभी जाते हैं बाहर
ग्रस्बाब निकलवाते हैं ग्रब्बासे-दिलावर
तक़्सीमे-सवारी के तरद्दुद[11] में हैं ग्रक्बर
शह को जिन्हें ले जाना है वो पाते हैं घोड़े
ख़ाली हुग्रा ग्रस्तबल चले ग्राते हैं घोड़े।

ग्रौराते[12]-मुहल्ला चली ग्राती हैं ब-सद ग़म[13]
कहती हैं ये दिन रेहलते[14]-ज़ोहरा से नहीं कम
पुर्से की तरह रोने का ग़ुल होता है हर दम
फ़र्श उठता है क्या, बिछती है गोया सफ़े-मातम

---

१. इकट्ठे २. दिल ३. शोकग्रस्त, दुखी ४. हर ग्राँख में ग्राँसू हैं ५. शोक ६. फ़ात्मा का बेटा ७. नौकर ८. क़ब्र ९. दुख इतना सस्ता हो गया है १०. रसूल का नवासा ११. चिन्ता १२. औरतें, स्त्रियाँ १३. सैकड़ों ग़मों के साथ १४. मौत

ग़ुल होता है हर सिम्त[1] जुदा होती है ज़ैनब
हर एक के गले मिलती है और रोती है ज़ैनब।

ले ले के बलाएँ यही सब करती हैं तक़रीर
इस गर्मी के मौसम में कहाँ जाते हैं शब्बीर
समझाती नहीं भाई को, ऐ शाह की हमशीर
मुस्लिम का ख़त आ ले तो करें कूच[2] की तदबीर
अल्लाह अभी क़ब्रे-पयम्बर को न छोड़ें
घर फ़ातमा ज़ोहरा का है इस घर को न छोड़ें।

उजड़ेगा मदीना जो ये घर होएगा ख़ाली
बर्बादिए-यसरब की बिना चर्ख़[3] ने डाली
क्या जाने फिर आयें कि न आयें शहे-आली[4]
हज़रत के सिवा कौन है इस शहर का वाली
ज़ोहरा हैं न हैदर न पयम्बर न हसन हैं
अब उनकी जगह आप हैं या शाहे-ज़मन हैं।

गर्मी के ये दिन और पहाड़ों का सफ़र आह
इन छोटे से बच्चों का निगहबान है अल्लाह
रस्ते की मशक़्क़त[5] से कहाँ हैं अभी आगाह
इनको तो न ले जायें सफ़र में शहे-ज़ी जाह
क़तरा भी दमे-तिश्ना[6] दहानी नहीं मिलता
कोसों तलक इस राह में पानी नहीं मिलता।

इन बीबियों से कहती थी ये शाह की हमशीर[7]
बहनो हमें यसरब से लिये जाती है तक़दीर
इस शहर में रहना नहीं मिलता किसी तदबीर
ये ख़त पे ख़त आये हैं कि मजबूर हैं शब्बीर
मुझको भी है रंज ऐसा कि कुछ कह नहीं सकती
भाई से जुदा हो के मगर रह नहीं सकती।

याद आती है हर दम मुझे अम्माँ की वसीयत
कुछ जान की थी फ़िक्र न उनको दमे-रहलत
आहिस्ता ये फ़रमाती थीं बा-सद[8] ग़म-ो-हसरत
शब्बीर सिधारे जो सुए वादिए[9]-ग़ुरबत

---

१. दिशा २. यात्रा ३. आकाश ४. इमाम हुसैन ५. रास्ते की तकलीफ़ें ६. प्यास में
७. हुसैन की बहन ८. असीम दुख के साथ ९. परदेश

उस दिन मेरी तुरबत से भी मुँह मोड़ियो ज़ैनब
इस भाई को तन्हा न कभी छोड़ियो ज़ैनब।

ये कहती थी ज़ैनब कि पुकारे शहे-ग्रादिल[1]
तैयार हैं दरवाज़े पे सब हौदज-ो-महमिल
तय शाम तलक होगी कहीं ग्राज की मंज़िल
रुख़सत करो लोगों को बस ग्रब रोने से हासिल
चलती है हवा सर्द ग्रभी वक़्ते-सहर है
बच्चे कई हमराह हैं गर्मी का सफ़र है।

रुख़सत करो उनको कि जो हैं मिलने को ग्राये
कह दो कोई गहवार-ए-ग्रसग़र को भी लाये
नादान सकीना कहीं ग्राँसू न बहाये
जाने की ख़बर मेरी न सुग़रा कहीं पाये
डर है कहीं घबरा के दम उसका न निकल जाये
बातें करो ऐसी कि वो बीमार बहल जाये।

रुख़सत को ग्रभी क़ब्रे-पयम्बर पे है जाना
क्या जानिये फिर हो कि न होय मेरा ग्राना
ग्रम्माँ की लहद[2] पर है ग्रभी ग्रश्क बहाना
इस मर्क़दे[3] ग्रनवर को है ग्राँखों से लगाना
ग्राख़िर तो लिये जाती है तक़दीर[4] वतन से
चलते हुए मिलना है ग्रभी क़ब्रे-हसन से।

सुनकर ये सुख़न बानुए-नाशाद पुकारी
मैं लुटती हूँ कैसा सफ़र ग्रौर कैसी सवारी
ग़श हो गयी है फ़ात्मा सुग़रा मेरी प्यारी
ये किसके लिए करते हैं सब गिरय-ग्रो[5]-ज़ारी
ग्रब किस पे मैं इस साहिबे-ग्राज़ार[6] को छोड़ूँ
इस हाल में किस तरह से बीमार को छोड़ूँ।

माँ हूँ मैं कलेजा नहीं सीने में सँभलता
साहब मेरे दिल को है कोई हाथों से मलता
मैं तो उसे ले चलती पे[7] कुछ बस नहीं चलता
रह जातीं जो बहनें भी तो दिल उसका बहलता

---

१. न्यायप्रिय बादशाह अर्थात् इमाम हुसैन २-३. क़ब्र ४. भाग्य ५. रोना ६. बीमार
७. पर, मगर

दरवाज़े पे तैयार सवारी तो खड़ी है
पर अब तो मुझे जान की सुग़रा की पड़ी है।

चिल्लाती थी कुब्रा कि बहन आँखें तो खोलो
कहती थी सकीना कि ज़रा मुँह से तो बोलो
हम जाते हैं तुम उठ के बग़लगीर[1] तो हो लो
छाती से लगो बाप की दिल खोल के रो लो
तुम जिसके हो शैदा[2] वो बिरादर न मिलेगा
फिर घर में जो ढूँढ़ोगी तो अक्बर न मिलेगा।

हुश्यार हो क्या सुब्ह से बेहोश हो ख़्वाहर[3]
असग़र को करो प्यार कलेजे से लगा कर
छाती से लगो उठ के खड़ी रोती हैं मादर
हम रोते हैं देखो तो ज़रा आँख उठाकर
अफ़सोस इसी तौर से ग़फ़लत[4] में रहोगी
क्या आख़िरी बाबा की ज़ियारत न करोगी।

सुनकर ये सुख़न[5] शाह के आँसू निकल आये
बीमार के नजदीक[6] गये सर[7] को झुकाये
मुँह देख के बानो का सुख़न लब[8] पे ये लाये
क्या ज़ोफ़-ो[9]-निक़ाहत है ख़ुदा इस को बचाये
जिस साहिबे[10]-आज़ार का ये हाल हो घर में
दानिस्ता[11] मैं क्योंकर उसे ले जाऊँ सफ़र[12] में।

सुन कर ये सुख़न बैठ गये सय्यदे-ख़ुश ख़ू[13]
और सूरए-अलहम्द[14] पढ़ा थाम के बाज़ू
बीमार ने पायी गुले-ज़ोहरा की जो ख़ुशबू
आँखों को तो खोला पे टपकने लगे आँसू
माँ से कहा मुझमें जो हवास आये हैं अम्माँ
क्या मेरे मसीहा मेरे पास आये हैं अम्माँ।

माँ ने कहा हाँ हाँ वो ही आये हैं मेरी जाँ
जो कहना है कह लो कि यहाँ और है सामाँ
देखो तो इधर रोते हैं बीबी शहे[15]-ज़ी शाँ
सुग़रा ने कहा उनकी मुहब्बत के मैं क़ुर्बाँ

---

१. गले मिलना २. न्योछावर, क़ुर्बान ३. बहिन ४. बेहोशी ५. बात ६. पास ७. सिर, शीश ८. होंठ ९. कमज़ोरी १०. बीमार ११. जान-बूझकर १२. यात्रा १३. इमाम हुसैन १४. कुरआन की एक सूरत १५. इमाम हुसैन

वो कौन सा सामाँ है जो यूँ रोते हैं बाबा
खुलकर कहो क्या मुझसे जुदा होते हैं बाबा।

ये घर का सब असबाब गया किस लिए बाहर
नै फ़र्श न हैं मस्नदे फ़र्ज़न्दे-पयम्बर[1]
दालान से क्या हो गया गहवारए-असग़र
उजड़ा हुआ लोगो नज़र आता है मुझे घर

कुछ मुँह से तो बोलो मेरा दम घुटता है अम्माँ
क्या सिब्ते-पयम्बर से वतन छुटता है अम्माँ।

शब्बीर का मुँह तकने लगी बानुए-मग़मूम
सुग़रा के लिए रोने लगीं ज़ैनब-ो-कुल्सूम
बेटी से ये फ़रमाने लगे सय्यदे-मज़लूम[2]
पर्दा रहा अब क्या, तुम्हें ख़ुद हो गया मालूम

तुम छुटती हो इस वास्ते सब रोते हैं सुग़रा
हम आज से आवारावतन होते हैं सुग़रा।

लू चलती है ख़ाक उड़ती है गर्मी के हैं अय्याम[3]
जंगल में न राहत न कहीं राह में आराम
बस्ती में कहीं सुब्ह तो जंगल में कहीं शाम
दरया कहीं हायल कहीं पानी का नहीं नाम

सेहत[4] में गवारा है जो तक्लीफ़ गुज़र जाये
इस तरह का बीमार न मरता हो तो मर जाये।

सुग़रा ने कहा खाने से ख़ुद है मुझे इनकार
पानी जो कहीं राह में माँगूँ तो गुनहगार
कुछ चूक का शिक्वा[5] नहीं करने की ये बीमार
तब्रीद[6] फ़क़त आपका है शर्बते-दीदार[7]

गर्मी में भी राहत से गुज़र जायेगी बाबा
आयेगा पसीना तप उतर जायेगी बाबा।

वो बात न होगी कि जो बेचैन हों मादर
हर सुब्ह मैं पी लूँगी दवा आप बना कर
दिन भर मेरी गोदी में रहेंगे अली असग़र
लौंडी हूँ सकीना की न समझो मुझे दुख़्तर[8]

१-२. इमाम हुसैन ३. दिन ४. तन्दुरुस्ती ५. शिकायत ६. दवा ७. दर्शन-रूपी शर्बत ८. बेटी

मैं ये नहीं कहती कि अमारी[1] में बिठा दो
बाबा मुझे फ़िज़्ज़ा की सवारी में बिठा दो।

शह बोले कि वाक़िफ़ है मेरे हाल से अल्लाह
मैं कह नहीं सकता मुझे दरपेश है जो राह
खुल जायेगा ये राज़ भी गो तुम नहीं आगाह
ऐसा भी कोई है जिसे बेटी की न हो चाह
नाचार ये फ़ुर्क़त[2] का अलम[3] सहता हूँ सुग़रा
है मसलहते-हक़ यही जो कहता हूँ सुग़रा।

ऐ नूरे-बसर[4], आँखों पे लेकर तुझे चलता
तू मुझसे बहलती मेरा दिल तुझसे बहलता
तप है तुझे और ग़म से जिगर है मेरा जलता
ये ज़ोफ़ कि दम तक नहीं सीने में सँभलता
जुज़[5] हिज्र[6] इलाज और कोई हो नहीं सकता
दानिस्ता तुम्हें हाथ से मैं खो नहीं सकता।

मुँह तकने लगी माँ का वो बीमार ब-सद ग़म
चितवन से अयाँ[7] था कि चलें आप मुए हम
माँ कहती थी मुख़्तार[8] हैं बीबी शहे-आलम[9]
मेरे तो कलेजे पे छुरी चलती है इस दम
वो दर्द है जिस दर्द से चारा नहीं सुग़रा
तक़दीर से कुछ ज़ोर हमारा नहीं सुग़रा।

सुग़रा ने कहा कोई किसी का नहीं ज़िन्हार[10]
सब की यही मर्ज़ी है कि मर जाये ये बीमार
अल्लाह न वो आँख किसी की है न वो प्यार
एक हम हैं कि हैं सब पे फ़िदा सबके हैं ग़मख़ार
बेज़ार हैं सब एक भी शफ़क़त नहीं करता
सच है कोई मुर्दे से मुहब्बत नहीं करता।

हमशीर के आशिक़ हैं, सलामत रहें अक्बर
इतना न कहा मर गयी या जीती है ख़्वाहर
मैं घर में तड़पती हूँ वो हैं सुबह से बाहर
वो क्या करें बरगश्ता[11] है अपना ही मुक़द्दर[12]

---

१. ऊँट पर बैठने के लिए रखी जाती है २. जुदाई, वियोग ३. सदमा, दुख ४. आँखों की रोशनी अर्थात् बेटी ५. सिवाय ६. वियोग, जुदाई ७. ज़ाहिर ८. मालिक ९. इमाम हुसैन १०. बिल्कुल ११. फिरा हुआ १२. भाग्य

पूछा न किसी ने कि वो बीमार किधर है
न भाइयों को ध्यान न बहनों को ख़बर है।
किससे कहूँ इस दर्द को मैं बेकस-ो-रंजूर
बहनें भी अलग मुझसे हैं और भाई भी हैं दूर
अम्माँ का सुख़न ये है कि बेटी मैं हूँ मजबूर
हमराहिए-बीमार किसी को नहीं मंज़ूर
दुनिया से सफ़र रंजो-मुसीबत में लिखा था
तन्हाई का मरना मेरी क़िस्मत में लिखा था।
सब बीबियाँ रोने लगीं सुन-सुन के ये तक़रीर
छाती से लगाकर उसे कहने लगे शब्बीर
लो सब्र करो कूच में अब होती है ताख़ीर[1]
मुँह देख के चुप रह गयी वो बेकस-ो-दिलगीर[2]
नज़दीक था दिल चीर के पहलू निकल आये
"अच्छा" तो कहा मुँह से पे आँसू निकल आये।
बानो को इशारा किया हज़रत ने कि जाओ
अक्बर को बुलाओ अली असग़र को भी लाओ
आये अली अक्बर तो कहा शाह ने आओ
रूठी है बहन तुमसे गले उसको लगाओ
चलते हुए जी भर के ज़रा प्यार तो कर लो
लेने उन्हें कब आओगे इक़रार तो कर लो।
पास आन के अक्बर ने की ये प्यार की तक़रीर
क्या मुझसे ख़फ़ा हो गयी सुग़रा मेरी तक़्सीर[3]
चिल्लाने लगी छाती पे मुँह रख के वो दिलगीर
महबूब बिरादर तेरे क़ुर्बान ये हमशीर
सदक़े तेरे सर पर से उतारे मुझे कोई
बल खायी हुई ज़ुल्फ़ों[4] पे वारे मुझे कोई।
प्यारे मेरे भैया मेरे महरू अली अक्बर
छुप जायेंगे आँखों से ये गेसू अली अक्बर
याद आयेगी ये जिस्म की ख़ुश्बू अली अक्बर
ढूँढ़ेंगी ये आँखें तुम्हें हर सू अली अक्बर
दिल सीने में क्योंकर तह-ो-बाला[5] न रहेगा
जब चाँद छुपेगा तो उजाला न रहेगा।

---

१. देर २. ग़म की मारी ३. दोष ४. केश, बाल ५. बेक़रार, बेचैन

क्या गुज़रेगी जब घर से चले जाओगे भाई
कैसे मुझे हर बात में याद आओगे भाई
तशरीफ़ ख़ुदा जानिये कब लाओगे भाई
की देर तो जीता न हमें पाओगे भाई

क्या दम का भरोसा कि चराग़े-सहरी[1] हैं
तुम आज मुसाफ़िर हो तो हम कल सफ़री हैं।

हाँ सच है कि बीमार का बेहतर नहीं जाना
सेहत से जो हैं उनमें कहाँ मेरा ठिकाना
भैया जो अब आना तो मेरी क़ब्र पे आना
हम गोर की मंज़िल की तरफ़ होंगे रवाना

क्या लुत्फ़ किसी को नहीं गर चाह हमारी
वो राह तुम्हारी है तो ये राह हमारी।

माँ बोली ये क्या कहती है सुग़रा तेरे क़ुर्बां
घबरा कि न अब तन से निकल जाये मेरी जाँ
बेकस मेरी बच्ची तेरा अल्लाह निगहबाँ
सेहत हो तुझे मेरी दुआ है यही हर आँ

क्या भाई जुदा बहनों से होते नहीं बेटा
कुन्बे के लिए जान को खोते नहीं बेटा।

मैं सदक़े गयी बस न करो गिरय-ओ-ज़ारी
असग़र मेरा रोता है सदा[2] सुनके तुम्हारी
वो काँपते हाथों को उठाकर ये पुकारी
आ ऐ मेरे नन्हे से मुसाफ़िर तेरे वारी

छुटती है ये बीमार बहन जान गये तुम
असग़र मेरी आवाज़ को पहचान गये तुम।

तुम जाते हो और साथ बहन जा नहीं सकती
तप[3] है तुम्हें छाती से मैं लिपटा नहीं सकती
जो दिल में है लब पर वो सुख़न ला नहीं सकती
रख लूँ तुम्हें अम्माँ को भी समझा नहीं सकती

बेकस हूँ मेरा कोई मददगार नहीं है
तुम हो सो तुम्हें ताक़ते-गुफ़्तार[4] नहीं है।

अब्बास ने इतने में ये ड्योढ़ी से पुकारा
चलने को है अब क़ाफ़ला तैयार हमारा

---

१. सुबह का चिराग़ २. आवाज़ ३. ज्वर, बुख़ार ४. बात करने की ताक़त

लिपटा के गले फ़ातमा सुग़रा को दोबारा
उट्ठे शहे-दीं, घर तह-ो-बाला हुआ सारा
जिस चश्म को देखा सो वो पुरनम[1] नज़र आयी
एक मजलिसे-मातम थी कि बरहम[2] नज़र आयी।

अब्बासे-अली से अली अक्बर ने कहा तब
हैं क़ाफ़ला सालारे-हरम[3] हज़रते-ज़ैनब
पहले हों वो असवार तो महमिल में चढ़ें सब
हज़रत ने कहा हाँ यही मेरा भी है मतलब
घर में मेरे ज़ोहरा की जगह बिन्ते-अली है
मैं जानता हूँ माँ मेरे हमराह चली है।

पहुँची जुँ ही नाक़े[4] के क़री[5] दुख़्तरे[6]-हैदर
ख़ुद हाथ पकड़ने को बढ़े सिब्ते-पयम्बर
फ़िज़्ज़ा तो सँभाले हुए थी गोशए[7]-चादर
थे परदए-महमिल को उठाये अली अक्बर
फ़र्ज़न्द कमर-बस्ता चप-ो[8]-रास खड़े थे
नालैन[9] उठा लेने को अब्बास खड़े थे।

एक दिन तो मोहय्या[10] था ये सामाने-सवारी
एक रोज़ था वो गिर्द थे नेज़े लिये नारी
महमिल[11] था न हौदज न कजावा न अमारी
बेपर्दा थी वो हैदरे-कर्रार[12] की प्यारी
नन्हे कई बच्चों के गले साथ बँधे थे
थे बाल खुले चेहरों पे और हाथ बँधे थे।

पैदल शहे-दीं रोज़ए-अहमद[13] को सिधारे
तुर्बत से सदा आयी कि आ ऐ मेरे प्यारे
तावीज़[14] से शब्बीर लिपट कर ये पुकारे
मिलता नहीं आराम नवासे को तुम्हारे
ख़त क्या हैं अजल[15] का ये पयाम आया है नाना
आज आख़री रुख़सत को ग़ुलाम आया है नाना।

---

१. भीगी हुई २. बिखरी हुई ३. बीवियों के क़ाफ़ले की सरदार ४. ऊँट ५. निकट, पास ६. अली की बेटी ७. चादर का पल्लू ८. उल्टी और सीधी तरफ़ ९. जूता १०. प्राप्त ११. ऊँट पर रखकर बैठने वाली सवारी १२. हज़रत अली की उपाधि १३. रसूल की क़ब्र १४. क़ब्र १५. मौत

ख़ादिम को कहीं अम्न की अब जा नहीं मिलती
राहत कोई साअत[1] मेरे मौला नहीं मिलती
दुख कौन सा और कौन सी ईज़ा नहीं मिलती
हैं आप जहाँ राह वो इसला[2] नहीं मिलती

पाबन्दे-मुसीबत हूँ गिरफ़्तारे-बला हूँ
ख़ुद पाँव से अपने तरफ़े-क़ब्र चला हूँ।

फ़रमाइये अब जाये किधर आपका शब्बीर
याँ क़ैद की है फ़िक्र उधर क़ैद की तदबीर
तेग़ें हैं कहीं मेरे लिए और कहीं ज़ंजीर
ख़ूँरेज़ी को काबे तलक आ पहुँचे हैं बेपीर[3]

बच जाऊँ जो पास अपने बुला लीजिये नाना
तुर्बत में नवासे को छुपा लीजिये नाना।

ये कहके मला क़ब्र से शह ने जो रुख़े-पाक[4]
हिलने लगा सदमे से मज़ारे-शहे[5]-लौलाक
जुम्बिश जो हुई क़ब्र को थर्रा गये अफ़लाक[6]
काँपी जो ज़मीं सह्ने-मुक़द्दस[7] में उड़ी ख़ाक

इस शोर में आयी ये सदा रोज़ए-जद[8] से
तुम आगे चलो हम भी निकलते हैं लहद[9] से।

इस ज़िक्र पे रोया करे शह सर को झुकाये
वाँ से जो उठे फ़ातमा की क़ब्र पे आये
पाईने[10]-लहद गिरके बहुत अश्क बहाये
आवाज़ ये आयी कि मैं सदक़े मेरे जाये

है शोर तेरे कूच का जिस दिन से वतन में
प्यारे मैं उसी दिन से तड़पती हूँ कफ़न में।

पहलू में जो थी फ़ातमा की तुर्बते[11]-शब्बर
उस क़ब्र से लिपटे ब-मुहब्बत शहे-सफ़दर
चिल्लाये कि शब्बीर की रुख़सत हैं बिरादर
हज़रत को तो पहलू हुआ अम्माँ का मयस्सर

क़ब्रें भी जुदा हैं तहे-अफ़लाक[12] हमारी
देखें हमें ले जाये कहाँ ख़ाक हमारी।

---

१. पल, क्षण २. हरगिज ३. मेरे दुश्मन मेरा ख़ून बहाने के लिए काबे तक आ गये हैं ४. चेहरा ५. हजरत मुहम्मद का मजार ६. आसमान ७. पवित्र आंगन ८. नाना, दादा ९. क़ब्र १०. क़ब्र की पायँती ११. इमाम हसन की क़ब्र १२. आसमान के नीचे

ये कह के चले क़ब्रे-हसन से शहे-मज़लूम
रहवार[1] जो माँगा तो सवारी की हुई धूम
याराने-वतन गिर्द थे अफ़सुर्दओ मग़मूम
चिल्लाते थे ख़ादिम कि चला ख़ल्क़ का मख़्दूम[2]
ख़ाली हुआ घर आज रसूले-अरबी का
ताबूत इसी धूम से निकला था नबी का।

चिल्लाती थीं राँडें कि चली शह की सवारी
लेगा ख़बर अब कौन मुसीबत में हमारी
आँखों से यतीमों के दुरे-अश्क[3] थे जारी
मुज़्तर[4] थे अपाहज ज़ोअफ़ा[5] करते थे ज़ारी
कहते थे गदा[6] हमको ग़नी[7] कौन करेगा
मोहताजों[8] की फ़ाक़ा-शिकनी[9] कौन करेगा।

था नाके तलक शहर के एक शोरे-क़यामत
समझाते हुए सबको चले जाते थे हज़रत
रो रो के वो कहता था जिसे करते थे रुख़्सत
पायेंगे कहाँ हम ये ग़नीमत है ज़ियारत
आख़िर तो बिछड़कर कफ़े-अफ़सोस[10] मलेंगे
दस बीस क़दम और भी हमराह चलेंगे।

क़समें उन्हें दे दे के कहा शह ने कि जाओ
तकलीफ़ तुम्हें होती है अब साथ न आओ
वल्लाह को सौंपा तुम्हें आँसू न बहाओ
फिरने के नहीं, हमसे बस अब हाथ उठाओ
इस बेकस-ो-तन्हा की खबर पूछते रहना
यारो मेरी सुग़रा की ख़बर पूछते रहना।

रोते हुए वो लोग फिरे शाह सिधारे
जो साहिबे-क़िस्मत थे वो हमराह सिधारे
किस शौक़ से मरदाने-हक़[11] आगाह सिधारे
आबिद तरफ़े ख़ानए[12]-अल्लाह सिधारे
उतरे न मुसाफ़िर किसी मख़्लूक़ के घर में
आशिक़ को कशिश ले गयी माशूक़ के घर में।

---

१. घोड़ा २. दुनिया का मालिक ३. आँसू ४. परेशान ५. कमजोर, बूढ़े ६. फ़क़ीर ७. मालदार ८. ग़रीबों ९. फ़ाक़ा खुलवाना १०. अफ़सोस से हाथ मलेंगे ११. ख़ुदा को पहचाननेवाले बन्दे, १२. अल्लाह का घर, काबा

मर्सिया : ३

'जब क़त्आ की मसाफ़ते-शब आफ़ताब ने

इश्रे की सुबह और आख़िरी
शहीद की मौत का वर्णन

जब क़त्अ़ा[1] की मसाफ़ते-शब आफ़ताब ने
जल्वा[2]-किया सहर के रुख़े-बे-हिजाब ने
देखा सुए-फ़लक शहे-गर्दूं रकाब ने
मुड़कर सदा रफ़ीक़ों को दी उस जनाब ने
आख़िर है रात, हम्द-ो[3]-सनाए-ख़ुदा करो
उट्ठो, फ़रीज़ए[4]-सहरी को अदा करो।

हाँ ग़ाज़ियो[5] ये दिन है जदाल-ो[6]-क़ताल का
याँ ख़ूँ बहेगा आज मुहम्मद की आल का
चेहरा ख़ुशी से सुर्ख़ है ज़ोहरा के लाल का
ग़ुज़री शबे-फ़िराक़,[7] दिन आया विसाल[8] का
हम वो हैं ग़म करेंगे मलक[9] जिनके वास्ते
रातें तड़प के काटी हैं इस दिन के वास्ते।

ये सुब्ह है वो सुब्ह, मुबारक है जिसकी शाम
याँ से हुआ जब कूच तो है ख़ुल्द[10] में मुक़ाम
कौसर[11] पे आबरू से पहुँच जायें तश्ना-काम[12]
लिक्खे ख़ुदा नमाज़-गुज़ारों में उनका नाम
सब हैं वहीदे-अस्र,[13] ये गुल चार सू उठे
दुनिया से जो शहीद उठे, सुर्ख़-रू[14] उठे।

ये सुन के बिस्तरों से उठे वो ख़ुदा शनास
एक एक ने ज़ेबे[15]-जिस्म किया फ़ाख़िरा लिबास
शाने[16] महासिनों में किये सब ने बेहिरास
बाँधे अमामे, आये इमामे[17]-ज़माँ के पास
रंगीं अबाएँ दोश[18] पे, कमरें कसे हुए
मुश्क-ो[19]-ज़बाद-ो-इत्र में कपड़े बसे हुए।

तक़रीर में वो रम्ज़ो[20]-कनाए कि लाजवाब
नुक्ता भी मुँह से गर कोई निकला तो इन्तख़ाब[21]

---

१. जब सूर्य ने रात की यात्रा पूरी कर ली २. प्रभात ने अपने सौन्दर्य का प्रदर्शन किया ३. ख़ुदा की इबादत ४. सुबह की नमाज़ ५. बहादुरो ६. युद्ध ७. वियोग की रात समाप्त हुई ८. संयोग ९. फ़रिश्ते १०. जन्नत, स्वर्ग ११. जन्नत की नहर १२. प्यासे १३. दुनिया में उन का जवाब नहीं १४. इज्जत से १५. अच्छी पोशाक पहनना १६. सबने बालों में कंघी की १७. इमाम हुसैन १८. कन्धों पर रंगीन लबादे १९. सुगन्धित वस्तुओं के नाम २०. इशारे, संकेत २१. चुना हुआ

गोया दहन[१] किताबे-बलाग़त का एक बाब
सूखी ज़ुबानें शह्‌दे-फ़साहत[२] से कामयाब
लहजों पे शाइराने-अरब थे मरे हुए
पिस्ते लबों के, वो कि नमक से भरे हुए।

लब[३] पर हँसी गुलों से ज़ियादा शगुफ़्ता-रू
पैदा तनों से पैरहने-यूसुफ़ी[४] की बू
ग़िलमाँ[५] के दिल में जिनकी ग़ुलामी की आरज़ू
परहेज़गार-ओ[६]-ज़ाहिद-ओ-अबरार-ओ-नेक ख़ू
पत्थर में ऐसे लाल, सदफ़[७] में गुहर नहीं
हूरों का क़ौल था कि मलक हैं बशर नहीं।

पानी न था वज़ू जो करें वो फ़लक जनाब
पर थी रुख़ों पे ख़ाके-तयम्मुम से तुर्फ़ा आब[८]
बारीक अब्र में नज़र आते थे आफ़ताब
होते हैं ख़ाकसार ग़ुलामे-अबू-तराब
महताब से रुख़ों की सफ़ा और हो गयी
मिट्टी से आइनों पे जिला और हो गयी।

ख़ेमे से निकले शह के अज़ीज़ाने-ख़ुश-ख़िसाल
जिनमें कई थे हज़रते-ख़ैरुन्निसा के लाल
क़ासिम सा गुलबदन अली अकबर सा ख़ुश-जमाल
एक जा अक़ील-ओ-मुस्लिम-ओ-जाफ़र[९] के नौनिहाल
सब के रुख़ों[१०] का नूर सिपहरे[११]-बरीं पे था
अट्ठारह आफ़ताबों का ग़ुंचा[१२] ज़मीं पे था।

ठण्डी हवा में सब्ज़ए[१३]-सहरा की वो लहक
शरमाये जिससे अतलसे[१४] ज़ंगारिए-फ़लक
वो झूमना दरख़्तों का फूलों की वो महक
हर बर्गे-गुल पे क़तरए-[१५]शब्नम की वो झलक

---

१. मुँह ऐसा था मानों सुन्दर वाणी की पुस्तक हो २. सुन्दर या मीठी वाणी की ३. होंठों की मुस्कान फूलों से ज्यादा ताजगी लिये हुई थी ४. हजरत यूसुफ़ की पोशाक की सुगन्ध ५. स्वर्ग के सुन्दर लड़के ६. नेक, इबादत करने वाले नेक लोग ७. सीपी ८. चेहरों पर तयम्मुम की मिट्टी ने और चमक पैदा कर दी थी ९. इमाम हुसैन के भाई और चाचा के नाम १०. चेहरों ११. आसमान १२. अठारह सूर्यों का झुरमुट १३. जंगल की हरियाली का लहलहाना १४. आसमान का सुन्दर रंग १५. फूल के हर मुँह पर ओस की बूँदें चमक रही थीं

हीरे ख़जिल[१] थे गौहरे[२]-यकता निसार थे
पत्ते भी हर शजर के जवाहर[३]-निगार थे।

वो नूर और वो दश्त सुहाना सा वो फ़िज़ा
दुर्राज-ो-कुब्क-ो-तीहुवो-ताऊस[४] की सदा
वो जोशे-गुल वो नालए-मुर्ग़ाने[५]-ख़ुशनवा
सर्दी जिगर को बख़्शती थी सुब्ह की हवा

फूलों के सब्ज़ सब्ज़ शजर[६] सुर्ख़-पोश थे
थाले भी नख़्ल के सबदे[७] गुल-फ़रोश थे।

वो दश्त[८] वो नसीम के झोंके वो सब्ज़ाज़ार[९]
फूलों पे जा बजा वो गुहर-हाये-आबदार
उठना वो झूम-झूम के शाख़ों का बार-बार
बालाए[१०]-नख़्ल एक जो बुलबुल तो गुल हज़ार

ख़्वाहाँ[११] थे नख़्ले-गुलशने-ज़ोहरा जो आब के
शबनम ने भर दिये थे कटोरे गुलाब के।

काँटों में एक तरफ़ थे रियाज़े[१२]-नबी के फूल
ख़ुश्बू से जिन की ख़ुल्द था जंगल का अर्ज़[१३]-ो-तूल
दुनिया की ज़ेब-ो-ज़ीनते-काशानए[१४]-बतूल
वो बाग़ था, लगा गये थे ख़ुद जिसे रसूल

माहे-अज़ा[१५] के अशरए[१६]-अव्वल में लुट गया
वो बाग़ियों के हाथ से जंगल में लुट गया।

अल्लाह रे ख़िज़ाँ के दिन इस बाग़ की बहार
फूले समाते थे न मुहम्मद के गुल-अज़ार
दूल्हा बने हुए थे, अजल थी गुलों का हार
जागे वो सारी रात के वो नींद का ख़ुमार

राहें तमाम जिस्म की ख़ुश्बू से बस गयीं
जब मुस्कुराये फूलों की कलियाँ बिकस गयीं।

नागाह चर्ख़[१७] पर ख़ते-अबयज़ हुआ अयाँ
तशरीफ़ जानमाज़ पे लाये शहे-जमाँ
सज्जादे[१८] बिछ गये अक़ाबे[१९] शाहे-इन्स-ो-जाँ
सौते-हसन[२०] से अकबरे-महरू ने दी अज़ाँ

---

१. शर्मिन्दा २. बेमिसाल मोती ३. हीरों से जड़े हुए ४. परिन्दों के नाम ५. सुन्दर गाने वाले परिन्दों का गाना ६. वृक्ष, पेड़ ७. फूल बेचने वाले की टोकरी ८. दरख़्त ९. जंगल की सुबह की हवा के झोंके १०. दरख़्त के ऊपर एक बुलबुल थी तो हज़ार फूल थे ११. पेड़ पानी के इच्छुक थे १२. बाग़ १३. लम्बाई-चौड़ाई १४. महल १५. मुहर्रम का महीना १६. महीने के पहले दस दिन १७. आसमान पर सफ़ेदी छाने लगी १८. जानमाज़ें १९. पीछे २०. आवाज़

हर एक की चश्म आँसुओं से डुबडुबा गयी
गोया सदा रसूल की कानों में आ गयी।

नामूसे-शाह रोते थे ख़ेमे में ज़ार-ज़ार
चुपकी खड़ी थी सहन में बानूए नामदार
ज़ैनब बलाएँ लेके ये कहती थी बार-बार
सदक़े नमाज़ियों के मुअज़्ज़िन[1] के मैं निसार

करते हैं यूँ सना-ओ-सिफ़त ज़ुलजलाल की
लोगो अज़ाँ सुनो मेरे यूसुफ़ जमाल की।

मेरी तरफ़ से कोई बलाएँ तो लेने जाये
ऐनुलकमाल[2] से तुझे बच्चे ख़ुदा बचाये
वो ख़ुश-बयाँ[3] कि जिसकी तलाक़त[4] दिलों को भाये
दो-दो दिन एक बूंद भी पानी की वो न पाये

ग़ुर्बत में पड़ गयी है मुसीबत हुसैन पर
फ़ाका ये तीसरा है मेरे नूरे-ऐन पर।

एक सफ़ में सब मुहम्मद-ो-हैदर के रिश्तेदार
अठ्ठारह नौजवाँ हैं, अगर कीजिये शुमार[5]
पर सब जिगर-फ़िगार-ो हक़ आगाह-ो-ख़ाकसार
पैरौ इमामे-पाक के दानाए[6]-रोज़गार

तसबीह हर तरफ़ तहे-अफ़लाक[7] उन्हीं की है
जिस पर दरूद पढ़ते हैं ये ख़ाक उन्हीं की है।

फ़ारिग़ हुए नमाज़ से जब क़िब्लए अनाम[8]
आये मुसाफ़हे को जवानाने-तश्ना-काम
चूमे किसी ने दस्ते-शहन्शाहे-ख़ास[9]-ो-आम
आँखें मलीं क़दम पे किसी ने ब-एहतराम

क्या दिल थे क्या सिपाहे[10]-रशीद-ो-सईद थी
बाहम मुआनक़े[11] थे कि मरने की ईद थी।

सजदे में शुक्र कि कोई था मर्दे-बा-ख़ुदा
पढ़ता था कोई हुज़्न से क़ुआँ कोई दुआ
नाते-नबी कहीं थी, कहीं हम्दे-किब्रया
मौला उठा के हाथ ये करते थे इल्तिजा

---

१. अज़ाँ देनेवाला, २. बुरी नज़र ३. सुन्दरवाणी वाला ४. बात का सौन्दर्य ५. गिनती ६. दुनिया में सबसे अक़लमन्द ७. आसमान के नीचे ८. इमाम हुसैन ९. इमाम हुसैन के साथ १०. नेक एवं बहादुर फ़ौज ११. गले मिलना

फ़ाक़ों पे तश्नाकामि-ओ-ग़ुर्बत पे रह्म कर
या रब मुसाफ़िरों की जमाअत पे रह्म कर।

ज़ारी थी इल्तिजा थी मुनाजात थी इधर
वाँ सफ़[1] कशि-ओ-ज़ुल्म-ो-त अद्दी-ओ-शोर-ो-शर
कहता था इब्ने[2]-साद ये जा-जा के नह्र पर
घाटों से होशियार तराई से बा-ख़बर
दो रोज़ से है तश्ना दहानी हुसैन को
हाँ मरते दम भी दीजो न पानी हुसैन को।

बैठे थे जानमाज़ पे शाहे-फ़लक-सरीर
नागाह क़रीब आके गिरे तीन-चार तीर
देखा हर एक ने मुड़के सुए लश्करे-शरीर
अब्बास उठे तोल के शमशीरे-बे-नज़ीर
परवाना थे सिराजे[3]-इमामत के नूर पर
रोकी सिपर हुज़ूरे[4]-करामत ज़हूर पर।

अकबर से मुड़ के कहने लगे सरवरे[5]-ज़माँ
तुम जा के कह दो ख़ेमे में ये ऐ पिदर की जाँ
बाँधे है सर कशी पे कमर लश्करे-गराँ
बच्चों को ले के सह्न से हट जायें बीवियाँ
ग़फ़लत में तीर से कोई बच्चा तलफ़[6] न हो
डर है मुझे कि गर्दने-असग़र[7] हदफ़ न हो।

कहते थे ये पिसर से शहे-आसमाँ-सरीर
फ़िज़्ज़ा पुकारी दर से कि ऐ ख़ल्क़[8] के अमीर
हय हय अली की बेटियाँ किस जा हों गोशागीर[9]
असग़र के गाहवारे[10] तक आकर गिरे हैं तीर
गर्मी में सारी रात तो घुट-घुट के रोये हैं
बच्चे अभी तो सर्द हवा पाके सोये हैं।

बाक़र कहीं पड़ा है सकीना कहीं है ग़श
गर्मी की फ़स्ल, ये तब[11]-ो-ताब और ये अतश[12]
रो-रो के सो गये हैं सग़ीराने[13]-माह-वश
बच्चों को ले के याँ से कहाँ जायें फ़ाक़ाकश[14]

---

१. उधर लड़नेवालों ने ज़ुल्म, सितम और लड़ाई पर कमर कसी थी २. दुश्मन की फ़ौज का सरदार ३-४-५. इमाम हुसैन ६. मर न जाये ७. निशाना ८. दुनिया के अमीर यानी इमाम हुसैन ९. छिपे १०. झूला ११. सख़्त गर्मी १२, प्यास १३. बच्चे १४, फ़ाक़ा करनेवाले

ये किस खता पे तीर पयापै बरस्ते हैं
ठण्डी हवा के वास्ते बच्चे तरस्ते हैं।

उठे ये शोर सुनके इमामे-फ़लक वक़ार
ड्योढ़ी तक आये ढालों को रोके रफ़ीक़-ो-यार
फ़रमाया मुड़ के चलते हैं अब बहरे[1]-कार ज़ार
कमरें कसो जिहाद[2] पे, मँगवाओ राहवार

देखो फ़ज़ा बहिश्त की दिल बाग़-बाग़ हो
उम्मत के काम से कहीं जल्दी फ़राग़ हो।

फ़रमाके ये हरम में गये शाहे-बह्र-ो बर
होने लगीं सफ़ों में कमरबन्दियाँ इधर
जोशन पहन के हज़रते-अब्बासे-नामवर
दरवाज़े पर टहलने लगे मिस्ले-शेरे-नर

परतौ से रुख़ के बर्क़ चमकती थी ख़ाक पर
तलवार हाथ में थी सिपर दोशे-पाक पर।

ख़ेमे में जाके शह ने ये देखा हरम का हाल
चेहरे तो फ़क़ हैं और खुले हैं सरों के बाल
ज़ैनब की ये दुआ है कि ऐ रब्बे ज़ुलजलाल[3]
बच जाये इस फ़िसाद से ख़ैरुन्निसा का लाल

बानूए नेक नाम की खेती हरी रहे
सन्दल से माँग, बच्चों से गोदी भरी रहे।

आफ़त में है मुसाफ़िरे-सहराए-करबला
बेकस पे ये चढ़ाई है सय्यद पे ये जफ़ा
ग़ुर्बत[4] में ठन गयी जो लड़ाई तो होगा क्या
इन नन्हे-नन्हे बच्चों पे कर रह्म ऐ ख़ुदा

फ़ाक़ों से जाँ-ब-लब हैं अतश[5] से हलाक हैं
या रब तेरे रसूल की हम आले-पाक हैं।

बोले क़रीब जाके शहे-आसमाँ जनाब
मुज़तर[6] न हो, दुआएँ हैं तुम सब की मुस्तजाब[7]
मग़रूर हैं, ख़ता पे हैं, ये ख़ानुमाँ ख़राब
ख़ुद जाके मैं दिखाता हूँ उन को रहे-सवाब[8]

---

१. लड़ाई के लिए २, वह लड़ाई जो ख़ुदा की राह में लड़ी जाये ३. ऊँची से ऊँची शान वाले ख़ुदा ४. मुसाफ़िरी में ५. प्यास से ६. परेशान ७. क़ुबूल, स्वीकार ८. सीधा रास्ता

मौक़ा बहन नहीं ग्रभी फ़रयाद-ो-ग्राह का
लाग्रो तबर्रुकात[1] रिसालत-पनाह का।

मेराज[2] में रसूल ने पहना था जो लिबास
कश्ती में लायीं ज़ैनब उसे शाहे-दीं के पास
सर पर रखा ग्रमामए-सरदारे-हक़[3] शनास
पहनी क़बाए - पाके - रसूले - फ़लक - ग्रसास

बर[4] में दुरुस्त-ो-चुस्त था जामा रसूल का
रूमाल फ़ातमा का, ग्रमामा रसूल का।

पोशाक सब पहन चुके जिस दम शहे-ज़मन
लेकर बलाएँ भाई की रोने लगी बहन
चिल्लायी हाय! ग्राज नहीं हैदर-ो-हसन
ग्रम्माँ कहाँ से लाये तुम्हें ग्रब ये वे-वतन

रुख़सत है ग्रब रसूल के यूसुफ़ जमाल की
सदक़े गयी बलाएँ तो लो ग्रपने लाल की।

सन्दूक़ ग्रस्लहा[5] के जो खुलवाये शाह ने
पीटा मुँह ग्रपना ज़ैनबे-इस्मत पनाह ने
पहनी ज़िराह इमामे-फ़लक बारगाह ने
बाज़ू[6] पे जोशनीं जो पढ़े इज़्ज़ो जाह ने

जौहर बदन के हुस्न से सारे चमक गये
हलक़े थे जितने इतने सितारे चमक गये।

हथियार इधर लगा चुके ग्राक़ाए-ख़ास-ो ग्राम
तैयार उधर हुग्रा ग्रलमे[7]-सय्यदे-ग्रनाम
खोले सरों को गिर्द थीं सैदानियाँ तमाम
रोती थीं थामे चोबे-ग्रलम[8] ख़्वाहरे-इमाम

तेग़ें कमर में दोश[9] पे शिमले पड़े हुए
ज़ैनब के लाल ज़ेरे-ग्रलम[10] ग्रा खड़े हुए।

गह[11] माँ को देखते थे गहे जानिबे-ग्रलम[12]
नारा कभी ये था कि निसारे-शहे-उमम

---

१. रसूल जो लिबास (पोशाक) पहनते थे वो लाग्रो २. मुसलमानों का विश्वास कि ख़ुदा ने हज़रत मुहम्मद को एक बार ग्रासमान पर बुलाया था। यह उनकी पूर्णतः नबी होने की मंज़िल थी। इसे मेराज कहते हैं ३. हज़रत रसूल ४. जिस्म पर ५. हथियार ६. इज्ज़त एवं शान ने ख़ुद हाथ उठा कर दुग्रा पढ़ी यानी इज्ज़त बढ़ी ७. झण्डा जो एक लम्बी सी लकड़ी में लगा होता है ८. ग्रलम की लकड़ी ९. कन्धे पर पगड़ी के पल्लू पड़े हुए १०. झण्डे के नीचे ११. कभी १२. ग्रलम की रफ़

करते थे दोनों भाई कभी मशवरे बहम[1]
ग्राहिस्ता पूछते कभी माँ से वो ज़ी हशम
क्या क़स्द[2] है ग्रलीए वली के निशान का
ग्रम्मा किसे मिलेगा ग्रलम नाना जान का।

बे - मिस्ल थे रसूल के लश्कर के सब जवाँ
लेकिन हमारे जद[3] को नबी ने दिया निशाँ[4]
ख़ैबर[5] में देखता रहा मुँह लश्करे गराँ
पाया ग्रलम ग्रली ने मगर वक़्ते-इम्तिहाँ
ताक़त में कुछ कमी नहीं, गो भूके प्यासे हैं
पोते उन्हीं के हम हैं उन्हीं के नवासे हैं।

ज़ैनब ने तब कहा कि तुम्हें इससे क्या है काम
क्या दख़्ल[6] मुझको, मालिक-ो-मुख़तार हैं इमाम
देखो न कीजो बे - ग्रदबाना[7] कोई कलाम
बिगड़ूँगी मैं जो लोगे ग्रलम का ज़ुबाँ से नाम
लो जाग्रो बस खड़े हो ग्रलग हाथ जोड़ के
क्यों ग्राये हो यहाँ ग्रली ग्रकबर को छोड़ के।

सरको, हटो, बढ़ो न खड़े हो ग्रलम के पास
ऐसा न हो कि देख लें शाहे-फ़लक[8]-ग्रसास
खोते हो ग्रौर ग्राये हुए तुम मेरे हवास
बस क़ाबिले[9]-क़बूल नहीं है ये इलतमास[10]
रोने लगोगे तुम जो बुरा या भला कहूँ
इस ज़िद को बचपने के सिवा ग्रौर क्या कहूँ।

इन नन्हे-नन्हे हाथों से उठ्ठेगा ये ग्रलम
छोटे क़दों में सब से, सिनों में सभी से कम
निकलें तनों से सिब्ते[11]-नबी के क़दम पे दम
ग्रोहदा[12] यही है, बस यही मनसब, यही हशम
रुख़सत तलब ग्रगर हो तो ये मेरा काम है
माँ सदक़े जाये ग्राज तो मरने में नाम है।

---

१. ग्रापस में २. इरादा ३. दादा ४. झण्डा ५. ख़ैबर की लड़ाई रसूल के ज़माने की बहुत मशहूर लड़ाई थी जिसमें हज़रत ग्रली की बहादुरी की धाक जम गयी थी। ग्रोन ग्रोर मुहम्मद उनके नवासे थे ६. मेरा क्या दख़्ल है। इसके हुसैन ख़ुद-मुख़तार हैं ७. बेग्रदबी की बात न करना ८. इमाम हुसैन ९. तुम्हारी यह बिनती मंजूर नहीं हो सकती १०. प्रार्थना ११. रसूल का नवासा १२. सबसे बड़ा ग्रोहदा, शान और इज्जत बस इसी में है

नरग़े[१] में तीन दिन से है मुश्किल[२]-कुशा का लाल
अम्मा का बाग़ होता है जंगल में पाएमाल[३]
पूछा न ये कि खोले हैं क्यों तुमने सर के बाल
मैं लुट रही हूँ और तुम्हें मनसब का है ख़्याल

ग़मख़्वार तुम मेरे हो न आशिक़ इमाम के
मालूम हो गया मुझे तालिब[४] हो नाम के।

हाथों को जोड़ - जोड़ के बोले वो लाला फ़ाम
ग़ुस्से को आप थाम लें ऐ ख़्वाहरे[५]-इमाम
वल्लाह क्या मजाल जो अब लें अलम का नाम
खुल जायेगा लड़ेंगे जो ये बा - वफ़ा ग़ुलाम

फ़ौजें भगा के गंजे-शहीदाँ[६] में सोयेंगे
तब क़द्र होगी आपको जब हम न होएँगे।

बस कह के ये हटे जो सआदत[७]-निशाँ पिसर
छाती भर आयी, माँ ने कहा थाम कर जिगर
देते हो अपने मरने की प्यारो मुझे ख़बर
ठहरो ज़रा बलाएँ तो ले ले ये नौहा गर

क्या सदक़े जाऊँ माँ की नसीहत बुरी लगी
बच्चो ये क्या कहा कि जिगर पर छुरी लगी।

ज़ैनब के पास आके ये बोले शहे-ज़मन[८]
क्यों तुमने दोनों बेटों की बातें सुनीं बहन
शेरों के शेर, आक़िल[९]-ो जर्रार-ो-सफ़ शिकन
ज़ैनब वहीदे-अस्र[१०] हैं दोनों ये गुल - बदन

यूँ देखने को सब में बुज़ुर्गों के तौर हैं
तेवर ही उनके और इरादे ही और हैं।

नौ-दस बरस के सिन में ये जुरअत[११] ये वलवले[१२]
बच्चे किसी ने देखे हैं ऐसे भी मनचले
इक़बाल क्योंकर उनके न क़दमों से मुँह मले
किस गोद में बड़े हुए किस दूध से पले

---

१. घेरे में २. इमाम हुसैन ३. बरबाद ४. ख़्वाहिशमन्द, इच्छुक ५. इमाम की बहिन ६. शहीदों का ख़ज़ाना उसे कहते हैं जहाँ इमाम हुसेन के सब साथी दफ़्न हैं ७. नेक ८. इमाम हुसैन ९. अक़लमन्द, बहादुर १०. दुनिया में एक ही हैं ११-१२. जोश एवं होसला

बेशक ये विर्सादारे[१] - जनाबे - ग्रमीर हैं
पर क्या कहूँ कि दोनों की उमरें सग़ीर हैं।

बस जिस को तुम कहो उसे दें फ़ौज का ग्रलम
की ग्रर्ज़ जो सलाहे[२] - शहे[३] - ग्रास्माँ - हशम
फ़रमाया जब से उठ गयीं ज़ोहराए-ग्राकरम
उस दिन से तुम को माँ की जगह जानते हैं हम
मालिक हो तुम बुज़ुर्ग कोई हो कि ख़ुर्द[४] हो
जिसको कहो उसी को ये ग्रोहदा सुपुर्द[५] हो।

बोलीं बहन कि ग्राप भी तो लें किसी का नाम
है किस तरफ़ तवज्जए सरदारे[६]-खास-ो-ग्राम
गर मुझसे पूछते हैं शहे ग्रासमाँ-मक़ाम
क़ुर्ग्रां के बाद है तो ग्रली ही का कुछ कलाम
शौकत में, क़द में, शान में हमसर कोई नहीं
ग्रब्बास नामदार से बहतर कोई नहीं।

ग्राशिक़[७], ग़ुलाम, ख़ादिमे-दैरीना[८], जाँ निसार
फर्ज़न्द, भाई, ज़ीनते-पहलू, वफ़ा-शिग्रार
जर्राए[९] यादगारे-पिदर[१०], फ़ख़रे[११]-रोज़गार
राहत[१२]-रसाँ मुती-ग्रो - नमूदार-ो नामदार
सफ़दर है, शेर-दिल है, बहादुर है नेक है
बे-मिस्ल सैकड़ों में हज़ारों में एक है।

ग्राँखों में ग्रश्क भरके ये बोले शहे-ज़मन
हाँ थी यही ग्रली की वसीयत भी ऐ बहन
ग्रच्छा, बुलाएँ ग्राप, किधर हैं वो सफ़[१३]-शिकन
ग्रकबर चचा के पास गये सुन के ये सुख़न[१४]
की ग्रर्ज़ इन्तिज़ार है शाहे[१५]-ग़यूर को
चलिये फुफी ने याद किया है हुज़ूर को।

ग्रब्बास ग्राये हाथों को जोड़े हुज़ूरे-शाह
जाग्रो बहन के पास, ये बोला वो दीं-पनाह
ज़ैनब वहीं ग्रलम लिये ग्रायीं, ब-इज़्ज़ो-जाह
बोले निशाँ को लेके शहे-ग्रर्श-बार गाह

---

१. वारिस, उत्तराधिकारी २. सलाह, मशवरा ३. इमाम हुसैन ४. छोटा हो या बड़ा ५. यह ग्रोहदा दिया जाये ६. इमाम हुसैन ७-८. ये सब ग्रब्बास की ख़ूबियां (गुण) गिना रही हैं ९. बहादुर १०. बाप ११. संसार का गर्व १२. राहत देनेवाला, ग्राज्ञा पालन करनेवाला, शानवाला १३. बहादुर १४. बात १५. इमाम हुसैन

उनकी ख़ुशी वो है जो रज़ा पंजतन[1] की है
लो भाई लो अलम, ये इनायत[2] बहन की है।

रखकर अलम पे हाथ, झुका वो फ़लक[3] वक़ार
हमशीर[4] के क़दम पे मला मुँह ब-इफ़तख़ार
ज़ैनब बलाएँ ले के ये बोलीं कि मैं निसार
अब्बास फ़ातमा की कमाई से होश्यार
हो जाये आज सुलह की सूरत तो कल चलो
इन आफ़तों से भाई को लेकर निकल चलो।

की अर्ज़ मेरे जिस्म पे जिस वक़्त तक है सर
मुम्किन नहीं है ये कि बढ़े फ़ौजे-बद गौहर
तेग़ें खिचें जो लाख तो सीना करूँ सिपर
देखें उठा के आँख, ये क्या ताब, क्या जिगर
सावन्त हैं पिसर, असदे ज़ुलजलाल के
गर शेर हो तो फेंक दें आँखें निकालके।

मुँह करके सूए क़ब्रे-अली फिर किया ख़िताब
ज़र्रे को आज कर दिया मौला ने आफ़ताब
ये अर्ज़े-ख़ाकसार है बस या अबूतराब[5]
आक़ा के आगे मैं हूँ शहादत से कामयाब
सर तन से इब्ने-फ़ातमा के रूबरू[6] गिरे
शब्बीर के पसीने पे मेरा लहू गिरे।

ये सुनके आयी ज़ौजए[7] - अब्बासे - नामवर
शौहर की सिम्त[8] पहले कनखियों से की नज़र
लीं सिब्ते-मुस्तुफ़ा की बलाएँ ब-चश्मे[9]-तर
जैनब के गिर्द फिर के ये बोली वो नौहा गर
फ़ैज़[10] आप का है और तसद्दुक़[11] इमाम का
इज़्ज़त बढ़ी कनीज़ की, रुतबा[12] ग़ुलाम का।

सर को लगा के छाती से ज़ैनब ने ये कहा
तू अपनी माँग - कोख से ठण्डी रहे सदा
की अर्ज़ मुझ सी लाख कनीज़ें हों तो फ़िदा
बानूए - नामवर को सुहागन रखे ख़ुदा

---

१. हज़रत मुहम्मद, अली, फ़ातमा, हसन और हुसैन को मिलाकर पंजतन कहते हैं
२. मेहरबानी ३. आसमान की-सी इज़्ज़त वाला ४. बहिन ५. या अली ६. सामने
७. बीवी, पत्नी ८. तरफ़ ९. रोते हुए १०. आपकी इनायत, कृपा ११. हुसैन का सदक़ा यानी उनकी वजह से १२. शान

बच्चे जियें, तरक़्क़ीए-इक़बाल-ो-जाह हो
साये में आपके अली अकबर का ब्याह हो।

क़िस्मत वतन में ख़ैर से, फिर शह को लेके जाये
यसरब[1] में शोर हो कि सफ़र से हुसैन आये
उम्मुलनबीन[2] जाह-ो-हशम से पिसर को पाये
जल्दी शबे[3]-उरूसिए-अकबर ख़ुदा दिखाये
मेंहदी तुम्हारा लाल मले हाथ-पांव में
लाओ दुल्हन को ब्याह के तारों की छाँव में।

नागाह[4] आके बाली सकीना ने ये कहा
कैसा है ये हजूम किधर हैं मेरे चचा
ओह्दा अलम का उन को मुबारक करे ख़ुदा
लोगो मुझे बलाएँ तो लेने दो एक ज़रा
शौकत ख़ुदा बढ़ाये मेरे अम्मू[5] जान की
मैं भी तो देखूँ शान[6] अली के निशान की।

अब्बास मुस्कुराके पुकारे कि आओ आओ
अम्मू निसार, प्यास से क्या हाल है बताओ
बोली लिपट के वो कि मेरी मश्क लेते जाओ
अब तो अलम मिला तुम्हें पानी मुझे पिलाओ
तोहफ़ा कोई न दीजे न इनआम दीजिये
क़ुर्बान जाऊँ पानी का एक जाम[7] दीजिये।

बातों पे उसकी रोती थीं सैदानियाँ तमाम
की अर्ज़ आके इब्ने[8] हसन ने कि या इमाम
अम्बोह[9] है, बढ़ी चली आती है फ़ौजे-शाम
फ़रमाया आपने कि नहीं फ़िक्र का मुक़ाम
अब्बास अब अलम लिये बाहर निकलते हैं
ठहरो बहन से मिल के गले हम भी चलते हैं।

ड्योढ़ी पे ख़ादमाने[10]-महल की हुई पुकार
आते हैं अब हुज़ूर, खबरदार, होशियार
ख़िलअत[11] पहन रहे हैं अलमदारे नामदार
नज़रें ख़ुशी की देने को हाज़िर हों जाँनिसार

---

१. मदीने के आसपास का इलाक़ा यसरब कहलाता है २. अब्बास की मां का नाम जो इमाम हुसैन की सौतेली मां थीं ३. शादी की रात ४. अचानक ५. चाचा ६. अब्बास ७. प्याला ८. हसन का बेटा यानी क़ासिम ९. हुजूम, भीड़ १०. महल के नौकर ११. ख़िलअत, पोशाक

भाई बड़ा है, सर पे तो साया है बाप का
ओहदा जवान बेटे ने पाया है बाप का।

नागाह बढ़े अलम लिये अब्बासे-बावफ़ा
दौड़े सब अहले-बैत खुले सर बरहना पा
हज़रत ने हाथ उठाके ये एक-एक से कहा
लो अलविदा[1] ऐ हरम पाके-मुस्तुफ़ा

सुबहे[2]-शबे-फ़िराक़ है प्यारों को देख लो
सब मिलके डूबते हुए तारों को देख लो।

शह के क़दम पे ज़ैनवे-ज़ारो-हज़ीं गिरी
बानो पछाड़ें खाके पिसर के क़रीं गिरी
कलसूम थरथरा के बरूए-ज़मीं गिरी
बाक़र कहीं गिरा तो सकीना कहीं गिरी

उजड़ा चमन, हर एक गुले[3]-ताज़ा निकल गया
निकला अलम कि घर से जनाज़ा निकल गया।

मौला[4] चढ़े फ़रस[5] पे मुहम्मद की शान से
तरकश लगाया हर ने, ये किस आन-बान से
निकला ये जिन्न[6]-ो-इन्स-ो-मलक की ज़ुबान से
उतरा है फिर ज़मीं पे बुराक़[7] आसमान से

सारा चलन ख़िराम में कुबके[8]-दरी का है
घूँघट नयी दुल्हन का है चेहरा परी का है।

नागाह तीर उधर से चले जानिबे-इमाम
घोड़ा बढ़ा के आपने हुज्जत[9] भी की तमाम
निकले इधर से शह के रफ़ीक़ाने[10]-तश्ना-काम
बे-सर हुए परों में सराने-सिपाहे[11]-शाम

बाला[12] कभी थी तेग़, कभी ज़ेरे-तंग थी
एक-एक की जंग मालिके-उशतुर[13] की जंग थी।

---

१. रुख़सत, विदाई २. जुदाई की सुबह, वियोग की सुबह ३. तरो-ताज़ा फूल यानी नौजवान (नवयुवक) ४. इमाम हुसैन ५. घोड़ा ६. जिनों, इन्सानों और फ़रिश्तों की ज़ुबान से ७. स्वर्ग से आया घोड़ा (जो रसूल के लिए आया था) ८. अच्छी चाल वाले परिन्दे (पक्षी) ९. आख़िरी बार भी समझाने की कोशिश की १०. प्यासे दोस्त ११. शाम की फ़ौज के अफ़सर १२. तलवार बड़ी तेज़ी से कभी सिरों के ऊपर होती थी और कभी शरीर को चीरकर निकल जाती थी १३. हज़रत अली की फ़ौज के एक बहादुर सरदार का नाम

निकले पए - जिहाद[१] अज़ीज़ाने - शाहे-दीं
नारे किये कि ख़ौफ़ से हिलने लगी ज़मीं
रोबाह[२] की सफ़ों पे चले शेरे - ख़शमगीं
खींची जो तेग़ भूल गये सफ़ - कशी[३] लईं
बिजली गिरी परों पे शुमाल[४]-ो-जुनूब के
क्या - क्या लड़े हैं शाम के बादल में डूब के।

अल्लाह रे अली के नवासों की कारज़ार[५]
दोनों के नीमचे थे कि चलती थी ज़ुल्फ़िक़ार[६]
शाना कटा किसी ने जो रोका सिपर पे वार
गिनती थी ज़ख़्मियों की न कुश्तों[७] का कुछ शुमार
इतने सवार क़त्ल किये थोड़ी देर में
दोनों के घोड़े छुप गये लाशों के ढेर में।

किस हुस्न से हसन[८] का जवाने - हसीं लड़ा
घिर-घिर के सूरते - असदे ख़शमगीं[९] लड़ा
दो दिन की भूक-प्यास में वो मह - जबीं लड़ा
सेहरा उलट के यूँ कोई दूल्हा नहीं लड़ा
हमले दिखा दिये असदे[१०] - किरदिगार के
मक़तल में सोये अरज़क़[११] - शामी को मार के।

चमकी जो तेग़े - हज़रते - अब्बासे - अर्श जाह
रूहुल अमीं[१२] पुकारे कि अल्लाह की पनाह
ढालों में छुप गया पिसरे - साद रू स्याह
कुश्तों से बन्द हो गयी अम्न-ो-अमाँ की राह
झपटा जो शेर शौक़ में दरया की सैर के
ले ली तराई तेग़ों की मौजों में पैर के।

आफ़त थी हर्ब[१३]-ो - ज़र्ब[१४] - अली अकबरे-दिलैर
ग़ुस्से में झपटे सैद[१५] पे जैसे गुरिसना[१६] शेर
सब सर[१७] बुलन्द पस्त ज़बर्दस्त सब थे ज़ेर
जंगल में चार सिम्त हुए ज़ख़्मियों के ढेर

---

१. लड़ाई के लिए हुसैन के अज़ीज़ निकले २. ऐसा लगा जैसे लोमड़ियों पर ग़ुस्से में भरे शेरों ने वार किया हो ३. दुश्मन सफें बाँधना भूल गये ४. उत्तर, दक्षिण ५. लड़ाई ६. अली की तलवार का नाम ७. ज़ख्मियों की गिनती न थी ८. क़ासिम ९. गुस्से में भरा हुआ शेर १०. हज़रत अली ११. दुश्मन के एक बहादुर सिपाही का नाम १२. जिब्राईल फ़रिश्ता १३-१४. लड़ाई और तलवार की काट १५. शिकार १६. भूखा शेर १७. वे सब जो सिर उठाये थे हार गये

सर उनके उतरे तन से जो थे रन चढ़े हुए
अब्बास से भी जंग में कुछ थे बढ़े हुए।

तलवारें बरसीं सुबह से निस्फ़ुन[1]नहार तक
हिलती रही ज़मीन लरज़ते रहे फ़लक[2]
काँपा किये परों को समेटे हुए मलक
नारे न फिर वो थे न वो तेग़ों की थी चमक

ढालों का दौर बर्छियों का औज हो गया
हंगामे[3] - ज़ोह्रे ख़ात्मए - फ़ौज हो गया।

लाशें सभों की सिब्ते - नबी ख़ुद उठा के लाये
क़ातिल किसी शहीद का सर काटने न पाये
दुश्मन को भी न दोस्त की फ़ुर्क़त[4] ख़ुदा दिखाये
फ़रमाते थे बिछड़ गये सब हम से हाय हाय

इतने पहाड़ गिर पड़ें जिस पर वो ख़म[5] न हो
गर सौ बरस जियूँ तो ये मजमा[6] बहम न हो।

लाशें तो सब के गिर्द थीं, और बीच में इमाम
डूबी हुई थी ख़ूँ में नबी की क़बा तमाम
अफ़सुर्द[7]-ओ - हज़ी-ओ-परेशान-ो - तश्ना - काम
बर्छी थी दिल को फ़तह के बाजों की धूमधाम

आदा किसी शहीद का जब नाम लेते थे
थर्रा के दोनों हाथों से दिल थाम लेते थे।

मक़तल से आये ख़ेमे के दर पर शहे - ज़मन
पर शिद्दतें[8] - अतश से न थी ताक़तें[9] - सुख़न
पर्दे पे हाथ रख के पुकारे बसद[10] महन
असग़र को गाहवारे से ले आओ ऐ बहन

फिर एक बार इस महे[11] - अनवर को देख लें
अकबर के शीर[12]ख़्वार बिरादर को देख लें।

ख़ेमे से दौड़ी आले - पयम्बर बरहना सर
असग़र को लायीं हाथों पे बानूए - नौहा गर
बच्चे को लेके बैठ गये आप ख़ाक पर
मुँह से मले जो होंट तो चौंका वो सीमबर[13]

---

१. दोपहर २. आसमान ३. ज़ोह्र (दोपहर की नमाज का समय) ज़ोह्र ४. जुदाई, वियोग ६. इकट्ठा न हो ७. मुसीबत के मारे, परेशान, प्यासे ८. प्यास की सख़्ती से ६. बोलने की ताक़त १०. हज़ार रंज के साथ ११. सुन्दर बच्चे को १२. दूध पीने वाला १३. सुन्दर

ग़म की छुरी चली जिगरे - चाक-चाक पर
बिठला लिया हुसैन ने ज़ानूए पाक पर।

बच्चे से मुल्तफ़ित[1] थे शहे - आस्माँ[2] - सरीर
था इस तरफ़ कमीं[3] में बिने - काहिले - शरीर
मारा जो तीन फाल का उस बेहया ने तीर
बस दफ़अतन[4] निशाना हुई गर्दने - सग़ीर
तड़पा जो शीर - ख़्वार तो हज़रत ने आह की
मासूम ज़ब्ह हो गया गोदी में शाह की।

जिस दम तड़प के मर गया वो तिफ़ले[5]-शीरख़्वार
छोटी सी क़ब्र तेग़ से खोदी बहाले - ज़ार
बच्चे को दफ़्न करके पुकारा वो ज़ी वक़ार
ऐ ख़ाके - पाक हुरमते[6] - मेहमाँ निगाहदार
दामन में रख इसे जो मोहब्बत अली की है
दौलत है फ़ातमा की अमानत नबी की है।

---

१. सम्बोधित २. इमाम हुसैन ३. घात में ४. अचानक बच्चे की गर्दन निशाना बन गयी
५. बच्चा ६. ऐ पाक मिट्टी, मेहमान की इज्जत की रक्षा करना

मर्सिया : ४

"दोज़ख से जो आज़ाद किया हुर को ख़ुदा ने"

ज़ैनब के बेटों की शहादत

दोज़ख़ से जो आज़ाद किया हुर को ख़ुदा ने
खुलवा दिये फ़िर्दौस[१] के दर उक़्दा[२] कुशा ने
ज़ानों पे रखा सर को इमामे - दो सरा ने
आला किया अदना को बुज़ुर्गों की दुआ ने
सब जिसके तलबगार थे जन्नत में वो दुर था
हूराने[३] - जिनाँ गिर्द थीं और बीच में हुर था।

अल्लाह री वफ़ाए - रूफ़क़ाए[४] - शहे - ज़ी जाह
दिल सीनों में लब्रेज़[५] वलाए - शहे - ज़ी जाह
सर देते थे हँस - हँस के बराए[६] शहे - ज़ी जाह
करते थे सफ़र चूम के पाए शहे - ज़ी जाह
दुनिया की न जानिब हैं न दरया की तरफ़ हैं
मरते हुए आँखें शहे - वाला की तरफ़ हैं।

ईमाँ[७] शहे - वाला की वला जानते थे वो
मर जाने को तो ऐने - वफ़ा[८] जानते थे वो
जीने को हवस, दम को हवा जानते थे वो
फ़ाक़ों के बयाँ को भी गिला जानते थे वो
कुछ फ़र्क़ इताअत में वो नाकाम न लाये
पानी का ज़ुबानों पे कभी नाम न लाये।

जब दे चुके सब ग़ैर अज़ीज़ों की तरह सर
बे जाँ हुए दो एलचीए - शाह के दिलबर[९]
मरने पे कमर बाँधते थे क़ासिमे - बे पर
कहती थी झुकाये हुए सर शाह की ख़्वाहर
है सख़्त अजब दोनों की दानाई[१०] से मुझ को
इन बेटों ने महजूब[११] किया भाई से मुझ को।

सब जाते हैं और रन[१२] की वो रुख़्सत नहीं लेते
मर जाने की मामूँ से इजाज़त नहीं लेते
सैयद से सरअफ़राज़ी[१३] का ख़लअत[१४] नहीं लेते
सर दे के जो मिलती है वो दौलत नहीं लेते
पानी न मिले गर दमे - आख़िर न मिलेगा
कह दे कोई ऐसा तुम्हें दिन फिर न मिलेगा।

---

१. जन्नत २. मुश्किलों को दूर करनेवाला ३. जन्नत की हूरें ४. दोस्त, मित्र ५. भरे हुए ६. इमाम हुसैन के वास्ते ७. हुसैन की मुहब्बत को ईमान समझते थे ८. सच्ची वफ़ादारी ९. बेटे १०. समझदारी ११. शर्मिन्दा १२. युद्ध का स्थल १३. इज्ज़त बढ़ने का १४. इज्ज़त का लबादा

कम-उम्र हैं इज़्ज़त की वो क्या बात को जानें
सूखे हुए होंटों पे फिराते हैं ज़ुबानें
हय हय उन्हें शब्बीर से प्यारी हुई जानें
पछतायेंगे, रोयेंगे, न कहना मेरा मानें
अब तीर जिगर गोशए[1]-ज़ोहरा पे चलेंगे
जब वक़्त निकल जायेगा, फिर हाथ मलेंगे।

वो नाम पे मरते हैं जो हैं आक़िल-ो-ज़ी[2]होश
सब दिल में कहेंगे कि हुए जंग से रूपोश[3]
मौक़ा हो तो गोया कहीं रहते भी हैं ख़ामोश[4]
क्या जान का फिर ध्यान शुजाअत का हो जब जोश
फ़र्क़ उनके तहव्वुर[5] में किसी तौर नहीं है
बाइस ये लड़कपन का है कुछ और नहीं है।

ये ज़िक्र था नौशाह जो रोते हुए आये
मादर ने जो पूछा तो सुख़न लब पे ये लाये
अब जाते हैं लड़ने को फुफी जान के जाये
इन भाइयों से पहले न हम ख़ूँ में नहाये
अब भी हमें पैग़ामे[6]-अजल आ नहीं जाता
यूँ रोते हैं शब्बीर कि देखा नहीं जाता।

ज़ैनब ने कहा मेरी मुराद आयी सिधारें
तेग़ों में गवारा हों, मेरे दूध की धारें
दुश्मन जो हों फ़र्ज़न्दे-अली के उन्हें मारें
लड़ने पे चढ़ें, शिम्र[7] का सर तन से उतारें
ये किस का लहू देख के वो जोश में आये
जब मर चुके दो भाई तो वो होश में आये।

ख़ेमे में ये बातें थीं कि आये वो दिलावर[8]
देखा कि अलग बैठी हुई रोती है मादर
साथ अपने उन्हें ले के गयी बानुए-मुज़्तर
की अर्ज़ कि छाती से लगा लो उन्हें ख़्वाहर
ये[9] नूरे-नज़र लायक़े-अल्ताफ़-ो-अता हैं
तक़सीर हुई क्या जो हुज़ूर उन से ख़फ़ा हैं।

---

१. ज़ोहरा के दिल के टुकड़े अर्थात् बेटे २. समझदार और अक़्लमन्द ३. छिप गये ४. बोलने वाला ५. बहादुरी ६. मौत का संदेश ७. इमाम हुसैन के क़ातिल का नाम ८. बहादुर ९. ये आँखों के नूर मेहरबानी और हमदर्दी के लायक़ हैं।

ये ज़िक्र था जो ख़ेमे में दाखिल हुए शब्बीर
देखा कि हैं बेटों से ख़फ़ा ज़ैनबे - दिलगीर
फ़रमाया शिकायत के सुख़न कीजो न हमशीर[1]
मिलते हैं किसे ऐसे पिसर[2] साहिबे - तौक़ीर

तलवारों में हर दम मेरे क़दमों पे झुके थे
ये शेरे - दिलावर मेरे रोके से रुके थे।

मालिक हो तुम इन दोनों से बिगड़ो कि ख़फ़ा हो
बेहतर है वो ग़ुस्सा जो मुनासिब हो बजा हो
ऐसे हैं कि हक़ दूध का उन से न अदा हो
मैं क्या करूँ जब दोनों का मरना तुम्हीं चाहो

समझा कि मैं हाथों से उन्हें खोओगी ज़ैनब
जब ये न मिलेंगे तो बहुत रोओगी ज़ैनब।

किस तरह मैं इस दौलते[3] - बेदार को खोता
जीता मैं जो उनमें से कोई पास न होता
मौत आती तो सर दे के मैं इस दश्त[4] में सोता
रोते ये मेरी लाश पे मैं उनको न रोता

कुछ बस नहीं चलता जो अजल आती है ज़ैनब
मौत उनको मेरे घर से लिये जाती है ज़ैनब।

ज़ैनब ने कहा आप अलम उनका न कीजे
तालिब हैं तो बेहतर है इजाज़त उन्हें दीजे
क़ुरबान हैं सब भांजे हों या कि भतीजे
गर ध्यान है मेरा तो क़सम रोने की लीजे

बेटे भी फ़िदा आप पे हैं, मैं भी फ़िदा हूँ
देर इतनी हुई क्यों, मैं इसी पर तो ख़फ़ा हूँ।

थर्रा के वो बोले कि हमारी नहीं तक़सीर
क़िस्मत में ख़जालत[5] थी, न यावर हुई तक़दीर
फ़रमाया, शुजाअत[6] के मनाफ़ी[7] है ये तक़रीर
मुस्लिम के पिसर काहे को थे साहिबे[8] - शम्शीर

जाते हुए किस वक़्त को आक़ा ने न रोका
रोका तुम्हें, उन को शहे[9]-वाला ने न रोका।

---

१. बहिन २. इज्ज़त वाले बेटे ३. क़ीमती माल ४, जंगल ५. शर्मिन्दगी ६. बहादुरी
७. विरुद्ध ८. बहादुर ९. इमाम हुसैन

जो मर्द हैं, पहले वो ही मर जाते हैं प्यारो
आज़ुर्दा[1] थी, पर ख़ैर ख़ुशी अब हूँ, सिधारो
सदक़े गयी उलझी हुई ज़ुल्फ़ें[2] तो सँवारो
वारी, ये तमन्ना है कि सर मामूँ पे वारो
सर दे के जिसे पाते हैं वो राह यही है
सदक़े गयी शादी है यही, ब्याह यही है।

पौशाक बदल कर जो सजे जंग के हथियार
गुल था कि चले शाह की हमशीर के दिलदार
मुजरे को झुके माँ के जो वो आईनए-रुख़्सार
सीने में तड़पने लगा जैनब के दिले-ज़ार
फ़रमाया अदा सर से करो हक़ शहे-दीं का
लो जाओ, मुबारक हो सफ़र ख़ुल्दे[3]-बरीं का।

फ़ौजों को मेरे दूध की तासीर[4] दिखाना
दादा की तरह जौहरे[5]-शमशीर दिखाना
मज़लूमियते-हज़रते-शब्बीर दिखाना
तन तन के यदुल्लाह की तसवीर दिखाना
तलवारें अगर लाख चलें सर न फ़रो[6] हो
जो सामने आ जाये वो एक ज़र्ब[7] में दो हो।

बल्वा हो तो परवाना रहे भाई पे भाई
मिस्ले जसद-ो-रूह[8] न दम भर हो जुदाई
दिखलाइयो इन छोटे से हाथों की सफ़ाई
जानें जो लड़ाओगे तो सर होगी लड़ाई
गर मर गये तौक़ीर भी इज़्ज़त भी मिलेगी
मैं दूध भी बख़्शूंगी शहादत भी मिलेगी।

दम होंटों पे आ जाये अगर प्यास के मारे
ग़श खाके जो गिरियो भी तो दरिया के किनारे
पानी को तरस्ते रू[9] फ़क़ा मर गये सारे
ये आबे[10]-रवाँ बन्द है मामू पे तुम्हारे
तलवारें[11] हैं, मौजों की रवानी न समझना
दरिया है लहू का, इसे पानी न समझना।

---

१. नाराज़ २. बालों की लटें ३. जन्नत ४. असर ५. तलवार के जौहर अर्थात् बहादुरी ६. झुके ७. वार ८. शरीर और आत्मा ९. दोस्त १०. बहता पानी ११. तात्पर्य यह है कि यह मौजें मारता हुआ दरिया जो है उसे तुम तलवारों के वार समझना। इस पानी को ख़ून समझना। इसलिए कि जो पानी हुसन के लिए बंद है, वह पानी तुम्हारे लिए हराम है.

की अर्ज़ यही होएगा ऐ मादरे-ग़मख़्वार
क्या बात है जीते हैं तो मरना नहीं दुश्वार[1]
इस प्यास में साबिर हैं ग़ुलामाने-वफ़ादार
दरिया को नज़र भर के जो देखें तो गुनेहगार
दीजेगा सज़ा फ़र्क़ इताअत में अगर आये
फिर देखें न मुंह आप जो रुख़ पर सिपर आये।

ये कहते हुए ख़ेमे से सफ़दर निकल आये
एक बुर्ज से दो चाँद बराबर निकल आये
रुमाल रखे आँखों पे अक्बर निकल आये
शब्बीर भी रोते हुए बाहर निकल आये
क़दमों पे झुके वो जो शहंशाहे-ज़मन[2] के
किस जब्र से रुख़्सत किया बेटों को बहन के।

थामे जो रहे बाज़ुओं को क़ासिम-ो-अक्बर
घोड़ों पे चढ़े ज़ैनबे-नाशाद के दिलबर
उलफ़त से चले साथ अलमदारे-दिलावर[3]
तब कहने लगे जोड़ के हाथों को वो सफ़दर
कुछ फ़ौजे-शक़ावत[4] नहीं दूर आप ठहर जायें
आक़ा पे मुसीबत है हुज़ूर आप ठहर जायें।

फ़रमाया कि दिल सीने में ठहरे तो मैं ठहरूँ
दो ज़ख़्म न हों दिल पे जो गहरे तो मैं ठहरूँ
दरिया से हटा लूं जो ये पहरे तो मैं ठहरूँ
पानी हों सितमगारों के ज़हरे[5] तो मैं ठहरूँ
लाज़िम है कि जाऊँ तो सफ़े तोड़ के जाऊँ
ज़ैनब से कहूँ क्या जो तुम्हें छोड़ के जाऊँ।

झुकने लगे घोड़ों से जो वो आईनए-रुख़्सार
मग़मूम[6] फिरे हज़रते-अब्बास अलमदार
तेग़ों में चले जिन्से-शहादत के तलबगार
बागें जो उठायीं तो हवा हो गये रहवार
साथ उन के हरन जस्त में, नै गश्त में पहुँचे।
उड़ते हुए ताऊसे-चमन[7] दश्त[8] में पहुँचे॥

---

१. मुश्किल २. इमाम हुसन ३. हज़रत अब्बास ४. ज़ालिमों की फ़ौज ५. पित्त ६. दुखी, रंजीदा ७. बाग़ीचे के मोर ८. जंगल

यँ आये कि जिस तरह नसीमे - चमन[1] आये
घोड़े थे कि दो आहुए चीन - ो - ख़ुतन[2] आये
सँवलाये हुए धूप में गुल पै रहन आये
फ़ौजों में हुआ शोर कि वो सफ़[3] शिकन आये
शेर आते हैं लश्कर से बली इब्ने वली के
हज़रत ने सदा दी कि नवासे हैं अली के।

वो शान, वो अजलाल[4] वो शेरों की निगाहें
नारे जो किये बन्द हुईं अम्न की राहें
दावा कि फ़ना[5] कर दें अभी हम जिसे चाहें
हिम्मत वो कि जो मुँह से कहें उस को निबाहें
फ़ौजों को भगाया है तो हम बढ़ के थमे हैं
सरके नहीं जब खेत[6] में ये पाँव जमे हैं।

फ़ौजों की सफ़ाई जो न देखी हो तो देखो
लश्कर में दुहाई जो न देखी हो तो देखो
हाँ क़िल्आ[7] कुशाई जो न देखी हो तो देखो
बच्चों की लड़ाई जो न देखी हो तो देखो
ये मुँह कभी तेग़ों से फिरे हैं न फिरेंगे
मरते हुए दस बीस क़दम बढ़ के गिरेंगे।

कड़कीं वो कमानें कि हुआ फ़ौज का कड़का
तेग़ों की सफ़ेदी थी कि था नूर का तड़का
गेह बुझ गया ख़ुर्शीद का शोला कभी भड़का
हर दिल को हिला देता था सर कटने का धड़का
नारे थे कि हैदर के दिलैरों से वग़ा[8] है
घोड़े भी भड़कते हैं कि शेरों से वग़ा है।

लो नीमचे[9] शहज़ादों के चलते हैं ख़बर दार
लो बाँबियों से नाग निकलते हैं ख़बर दार
रंग अफ़अई ख़ूंख़ार[10] बदलते हैं ख़बर दार
लो मारे - सियाह[11] ज़हर उगलते हैं ख़बर दार
जल जाता है वो आँच ज़रा लगती है जिस को
पड़ जाते हैं नील उन की हवा लगती है जिसको।

---

१. बाग़ की हवा २. चीन का प्रसिद्ध शहर जहां के हिरन प्रसिद्ध हैं ३. जंग की सफ़ (पंक्ति)
तोड़ने वाले बहादुर ४. जलाल, गुस्सा ५. ख़त्म कर दें ६. युद्ध-स्थल ७. अर्थात् लड़ाई
जीत लेना ८. जंग, युद्ध ९. छोटी तलवार १०. ख़ून पीने वाले सांप ११. काले सांप

तीरों को जो चिल्लों में कमांदारों ने जोड़ा
तीर आये तो बदकेशों[1] ने मुँह सहम के मोड़ा
दोनों ने बुज़ुर्गों के तरीक़े को न छोड़ा
सफ़ एक ने उल्टी तो परा एक ने तोड़ा
तलवारों की घाटों में शनावर[2] रहे दोनों
मौजें भी जो आयीं तो बराबर रहे दोनों।

बढ़ कर सिपर इस भाई ने काटी तो सर उसने
ज़ख़्मी किया दुश्मन का दिल इसने जिगर उसने
सद्र[3] इस ने किया चाक तो काटी कमर उसने
दिखलाये अली के चलन इसने हुनर उसने
मतलब था कि नै उम्र को नै जैद को छोड़ें
दो शेर जब ऐसे हों तो कब सैद[4] को छोड़ें।

छोटा था बड़े भाई से ख़ूँ रेज़[5] ज़्यादा
कुछ हाथ भी कुछ नीमचा भी तेज़ ज़्यादा
सर खेज ज़्यादा शरर अंगेज़ ज़्यादा
इस घोड़े से घोड़ा भी सुबक खेज़ ज़्यादा
हैदर की शुजाअत भी, जलालत भी, ग़ज़ब भी
ग़ुस्सा भी, तहव्वुर भी, बिरादर का अदब भी।

गुल था कि न देखी थी वग़ा[6] आज तक ऐसी
आफ़त किसी लश्कर पे न डाले फ़लक[7] ऐसी
दोज़ख़ के भी शोलों में न होगी लपक ऐसी
ज़ाइल हुई जाती है बसारत[8] चमक ऐसी
आफ़त थी क़यामत थी इसे या उसे रोकें
दो बिजलियाँ गिरती हैं बराबर किसे रोकें।

जिस ग़ौल पे जिस सफ़ पे चले नीमचे उनके
बेजाँ हुए वो वार चले दोनों पे जिनके
कुश्ता किया गिन्ती की सवारों को जो गिनके
थर्राने लगे दाँतों में सब दाब के तिनके
फ़ौजें वो कहाँ और कहाँ तश्ना[9] दहाँ दो
दो लाख के लश्कर में ये ग़ुल था कि अमाँ[10] दो।

---

१. बुरे लोगों ने २. तैरनेवाले ३. सीना ४. क़ैदी ५. ख़ून बहानेवाला ६. जंग, युद्ध
७. आसमान ८. आँखों की रोशनी ९. प्यासे १०. शरण

ये कहते थे लश्कर का निशाँ दो तो अमाँ दें
दुनिया की मुहब्बत पे न जाँ दो तो अमाँ दें
हाँ सुल्हा की हज़रत को ज़ुबाँ दो तो अमाँ दें
असग़र को जो ये आबे[1] - रवाँ दो तो अमाँ दें
ख़ूने - पिसरे - साद बहा दो तो रुकें हम
हाँ शिम्र का सर काट के ला दो तो रुकें हम।

थर्राते हैं सुन सुन के ये नारे वो जफ़ा[2] जू
ढालों में छुपा था पिसरे - साद स्याह रू
कहता था कि इन बच्चों में है शेर की ख़ू[3] बू
टुकड़े मेरे कर देंगे अगर पायेंगे काबू
आफ़त में मददगार हो रंजों से बचाओ
यारो मुझे इन शेरों के पंजों से बचाओ।

ये सुनते ही सब शाम का बादल[4] उमड़ आया
एक दल का हटाना था कि एक दल उमड़ आया
एक ज़ुल्म का दरिया सुए मक़्तल[5] उमड़ आया
नेज़ों की नयस्ताँ[6] था कि जंगल उमड़ आया
पास आ के लड़ा एक न इस फ़ौजे - उदू में
नहला दिया बोछार ने तीरों की लहू में।

ज़ख़्मी हुए जब शेर तो लश्कर में दर आये
आफ़त हुई बरपा ग़ज़ब आया जिधर आये
वो नीमचे जब सन से किसी ग़ौल पर आये
हाथ उड़ के गये वाँ तो इधर कट के सर आये
दोनों के फ़रस[7] अब्र कहीं बर्क़ कहीं थे
दस्ताने कहीं ख़ौद कहीं फ़र्क़[8] क़हीं थे।

बैठी थीं पसे - पर्दा इधर ज़ैनबे - नाचार
चेहरा था कभी ज़र्द कभी सुर्ख़ थे रुख़्सार
बेताबी में फ़िज़्ज़ा से ये फ़रमाती थीं हर बार
तू देख तो पहुँचे हैं कहाँ तक मेरे दिलदार
खाये हैं अभी ज़ख़्म न घोड़ों से गिरे हैं
मालूम ये होता है कि फ़ौजों में घिरे हैं।

१. बहता पानी २. ज़ालिम ३. ख़सलत ४. अर्थात् शाम देश की सेना ५. क़त्ल का मैदान
६. बांसों का जंगल ७. घोड़े ८. सिर, शीश

निकली जो असा[1] थाम के वो खेमे के बाहर
खम[2] थी कमर और मुंह अरक़े - शर्म से था तर
चलने में क़दम काँपते थे ज़ोफ़[3] से थर थर
हिलता था ज़ईफ़ी[4] की सबब से सरे - अनवर
क्योंकर ये न हो खादिम-ए - आले - अबा[5] थी
बुर्क़ा न असाबा[6] न क़साबा[7] न रिदा[8] थी।

शहज़ादों की सब मार्का आराई[9] भी देखी
जुरअत[10] भी जलालत[11] भी तवानाई[12] भी देखी
दानाई[13] भी, ग़ुर्बत[14] भी शकेबाई[15] भी देखी
जाँबाज़ी भी मज़लूमी भी तनहाई भी देखी
शेरों का लहू में भी नहाते हुए देखा
आ जो बढ़ें तीर भी खाते हुए देखा।

रोती हुई खेमे में जो आयी वो दिलअफ़गार[16]
ज़ैनब ने कहा, क़त्ल हुए क्या मेरे दिलदार
की अर्ज़ नहीं तो, अभी लड़ते हैं वो जर्रार[17]
आफ़त है बपा भागते फिरते हैं जफ़ाकार[18]
वो कौन सा यकता है जो चौरंग नहीं है
सब कहते हैं तूफान है ये जंग नहीं है।

लाखों तो बलाएँ हैं वो बच्चे किसे टालें
तलवारें इधर हैं तो उधर नेज़ों की भालें
ज़िरहों पे न चार आईना नै हाथों में ढालें
मोहलत नहीं जो सीनों से तीरों को निकालें
तलवारों में भाई की सिपर होता है भाई
बहता है जो भाई का लहू रोता है भाई।

क़ायम रहे इन भाइयों की खल्क़[19] में जोड़ी
हलचल थी उधर बाग जिधर रख़्श[20] की मोड़ी
उल्टा जो परा उसने तो सफ़ उसने भी तोड़ी
छोटे ने कोई बात अली की नहीं छोड़ी
तेवर वही आवाज वही आन वही थी
नारे वही तौक़ीर वही शान वही थी।

---

१. लकड़ी २. झुकी हुई ३. कमजोरी ४. बुढ़ापा ५. रसूल की औलाद ६. लकड़ी ७. सिर का रूमाल ८. चादर ९. जंग युद्ध १०. होसला, साहस ११. शान १२. ताक़त, शक्ति १३. अक़लमन्दी १४. लाचारी; असमर्थता १५. धैर्य १६. जख्मी दिल १७. बहादुर १८. जालिम १९. दुनिया, संसार २०. घोड़ा

बीबी वो जलालत[1] मुझे भूलेगी न वो शान
ऐ शेर के बच्चे तेरी हिम्मत के मैं क़ुरबान
भाई ने जो ख़ातिर से कहा ख़ैर मेरी जान
घोड़े का उड़ाना था कि बस ले लिया मैदान
दिखला दिये अन्दाज़ वग़ा-ए-अब-ो-जद[2] के
ग़ुल था कि ग़िज़ाल[3] आ गये पंजे में असद[4] के।

सुनकर ये बयाँ शाद हुई ज़ैनबे-ख़ुश ख़ू
फिर जोशे-मोहब्बत से रहा दिल पे न क़ाबू
हर बीबी से इरशाद किया पोंछ के आँसू
मैदान से सरके नहीं अब तक मेरे गुलरू
लाखों से लड़े तश्ना दहन काम किया है
सुनती हूँ कि छोटे ने बड़ा नाम किया है।

सब बीबियाँ बोलीं कि ये है आपका इक्बाल
इन दोनों का सोचो तो अभी क्या है सिन-ो-साल[5]
पर वाह री तौक़ीर जहैं हश्मत-ो-अजलाल[6]
फ़रमाया कि हाँ साहिबे-ग़ैरत[7] हैं मेरे लाल
भाई के सिवा मुझको नहीं फ़िक्र किसी की
इज़्ज़त से वो मर जायें मैं तालिब[8] हूँ इसी की।

ये ज़िक्र अभी था कि सदा[9] रोने की आयी
दर्वाज़े से अक्बर ने ये आवाज़ सुनायी
लूटी गयी हय हय, फुफी अम्माँ की कमाई
मारे गये वो साथ के खेले हुए भाई
रोते हुए अब्बास भी हमराह गये हैं
ख़ुद लाशें उठाने के लिए शाह गये हैं।

ये सुनते ही क़िब्ले की तरफ़ झुक गयी ज़ैनब
सजदे से उठीं जब तो कहा शुक्र है या रब[10]
तालिब थी मैं जिस की वो बर[11] आया मेरा मतलब
सब मिट गये धड़के कोई तश्वीश[12] नहीं अब
लुटने से मुहम्मद की कमाई को बचा ले
सब क़त्ल हों पर तू मेरे भाई को बचा ले।

---

१. शान २. बुज़ुर्गों की जंग ३. हिरन ४. शेर ५. उम्रें ६. शान और शौकत, तेज
७. ग़ैरत वाले ८. इच्छुक ९. आवाज़ १०. ख़ुदा ११. पूरा हुआ १२. चिन्ता

फ़िज़्ज़ा की सदा आयी, ऐ पीटने वालो
सब मिल के अरे मेरे ख़ुज़ादों[1] को सँभालो
रोती हैं कहाँ बानुए-आलम को बुला लो
लूटा गया घर ख़ाके-अज़ा बालों पे डालो[2]

मक़तल से हुसैन इब्ने अली लाये हैं लाशें
सैदानियो! ड्योढ़ी पे चलो आये हैं लाशें।

मातम[3] था कि बर्बाद ये घर हो गया हय हय
ज़ोहरा के नवासों का सफ़र हो गया हय हय
किस की नज़रें बद का गुज़र हो गया हय हय
ये चाँद हर एक ख़ून में तर हो गया हय-हय

तक़दीर में सर पीटना या नौहा गरी थी
ख़ाली हुई वो गोद जो बच्चों से भरी थी।

लाशों को शहे-दीं सफ़े-मातम पे जो लाये
सब अहले-हरम पीटते रोते हुए आये
ज़ैनब ने न फ़रयाद की न अश्क बहाये
बैठी रहीं[4] सर ज़ानुए-अक़दस पे झुकाये

लब[5] ख़ुश्क थे मुँहज़र्द मिज़ाह अश्क से तर थी[6]
न अपनी न भाई की न लाशों की ख़बर थी।

बानो जो क़रीब आयी तो बोली ये वो मग़मूम[7]
बीबी मुझे कुछ आँखों से होता नहीं मालूम
किस जाँ अली अक्बर हैं, किधर हैं शहे-मज़लूम[8]
किस की ख़बर आयी है कि मातम की है ये धूम

परदेस में जीने से किसे यास हुई है
ये कौन सी माँ बेटों से बे आस हुई है।

अर्सा[9] हुआ बच्चों को मेरे रन में सिधारे
क्या जानिये सर मामूँ पे वारे कि न वारे
धड़का है कि कमसिन हैं बहुत वो मेरे प्यारे
दरिया पे कहीं जा न पड़ें प्यास के मारे

सर दे के फिरें धूम हो साबित[10] क़दमी की
मैं दूध न बख़्शूँगी जो लड़ने में कमी की।

---

१. मालिक की औलाद २. बालों पे धूल उड़ाओ ३. रोना ४. घुटने पर सिर टेके ५. होंठ सूखे थे ६. पलकों पर आँसू थे ७. ग़म की मारी ८. इमाम हुसैन ९. देर हुई १०. दृढ़ता

बोले ये ब सद[1] दर्द अली अक्बरे-ज़ीशाँ
हाज़िर है ये महजूब[2] ग़ुलाम ऐ फुफी अम्माँ
शब्बीर पुकारे कि बहन मैं तेरे क़ुरबाँ
ज़िन्दा था सहर तक मगर अब मैं हुआ बेजाँ
फ़ौजों को भगाया है हजारों से लड़े हैं
ये औन-ो-मुहम्मद हैं जो बेजान पड़े हैं।

होश आ गया ज़ैनब को सदा भाई की सुन कर
की अर्ज़ ये सब आप का सदक़ा है बिरादर
ख़ुश्नूद हैं आक़ा तो रज़ामन्द है मादर
लो बख़्श दिया दूध उन्हें या शहे-सफ़्दर
ये आप पे क़ुरबान हुए राहे-ख़ुदा में
नाम उनके ख़ुदा अर्श पे लिक्खे शौहदा में।

हज़रत ने कहा रो लो गले उनको लगाकर
अब पास तुम्हारे नहीं ये आयेंगे जाकर
पानी न पिया नज़्आ[3] में भी बर्छियाँ खाकर
रुख़सत हुए मामूँ को लबे-ख़ुश्क[4] दिखाकर
किस से कहूँ जैसे ये वफ़ादार पिसर थे
दम निकले तो दोनों के मेरे पाँव पे सर थे।

बानो ने रखे ज़ानुए ज़ैनब पे सर उनके
जो बीबियाँ थीं आ गये मुँह को जिगर उनके
ज़ैनब ने जो की झुक के रुखों[5] पर नज़र उनके
दिखलाई दिये चाँद से मुँह ख़ूँ में तर उनके
रुख़सार[6] भी मजरूह[7] थे अब्रू[8] भी कटे थे
शाने[9] थे जुदा चाँद से बाज़ू भी कटे थे।

मुँह छातियों पे रख के ये नाशाद पुकारी
आराम में हो या है ग़शी प्यास की तारी
होता है बयाँ शौकता-ो-हिम्मत का तुम्हारी
तस्लीमें करो क़िब्लए[10]-कौनैन को वारी
समझी मैं कि बाइस[11] है ये बेदारिए-शब[12] का
प्यारो, ये तरीक़ा नहीं अर्बाबे[13]-अदब का।

---

१. शोकग्रस्त होकर, अत्यन्त दुख के साथ २. शर्मिन्दा ३. मौत का वक़्त ४. ख़ुश्क ५. चेहरों ६. गाल ७. जख़्मी ८. भौं ९. कन्धे १०. इमाम हुसैन ११. कारण १२. रात के जागने का १३. अदब करने वाले, आदर करने वाले

तारीफ़ इमामे-दोसरा करते हैं उट्ठो
अब्बास अलमदार सना[1] करते हैं उट्ठो
हम शक्ले-नबी[2] मद्हे-वग़ा[3] करते हैं उट्ठो
सब लोग न उठने का गिला करते हैं उट्ठो
आक़ा से मुसीबत में जुदा हो नहीं जाते
सदक़े गयी यूँ जंग के दिन सो नहीं जाते।

तुम तो कहीं यूँ रात को ग़ाफ़िल नहीं सोये
पानी नहीं काहे से ये माँ चेहरों को धोये
अब तुम न मिलोगे जो कोई जान भी खोये
क़िस्मत में ये लिक्खा था कि माँ लाशों पे रोये
सर दे के मेरे हक़ से अदा हो के फिरे हो
समझी मैं कि मामूँ पे फ़िदा हो के फिरे हो।

तजवीज़ है क़ब्रों की कहाँ मैं नहीं आगाह
ग़ुर्बत में मरोगे ये न थी मुझको ख़बर आह
ये[4] दैह्‌र है बे मेह्‌र ये दुनिया है गुज़रगाह
जाता है तही दस्त[5] गदा[6] हो के शहंशाह
मामूँ की न तक्सीर न कुछ इसमें है माँ की
क़ब्रें भी मिलेंगी वहीं है खाक जहाँ की।

अब जीने से अम्माँ का भी दिल सैर है प्यारो
जीती हूँ ये क़िस्मत का मेरी फेर है प्यारो
तुम मर गये दुनिया मुझे अन्धेर है प्यारो
क्या जानें मेरी मौत में क्या देर है प्यारो
है क़ौन सी दौलत जिसे खोने को रही हूँ
मालूम नहीं अब किसी रोने को रही हूँ।

अब ध्यान मेरा शाम-ो-सहर कौन रखेगा
उलफ़त की मुहब्बत की नज़र कौन रखेगा
परदेस में अब माँ की ख़बर कौन रखेगा
झुक-झुक के मेरे पाँव पे सर कौन रखेगा
सब होंगे मगर गोद के पाले न मिलेंगे
अब तुम से मुझे चाहने वाले न मिलेंगे।

---

१. तारीफ २. अकबर ३. लड़ाई की तारीफ़ ४. ये दुनिया बे-मुहब्बत और गुज़रने का रास्ता है ५. ख़ाली हाथ ६. फ़क़ीर

हर साल बहार आयेगी खिल जायेंगे सब गुल[1]
सरसब्ज़ जवानाने-चमन[2] होएंगे बिल्कुल
सब्ज़ा कहीं होगा कहीं नसरीं[3] कहीं सुम्बुल[4]
वो सर्द हवाएँ वो खुश इल्हानिए-बुलबुल[5]
दुनिया के न बुस्ताने[6]-फ़रह नाक में होंगे
गुल बाग़ में तुम ज़ेरे-ज़मीं[7] खाक में होंगे।

तारीकी में वारी तुम्हें नींद आयेगी क्योंकर
शब होगी तो बच्चों को ये माँ पायेगी क्योंकर
मादर दिले-बेताब को समझायेगी क्योंकर
वाँ तक मेरे रोने की सदा जायेगी क्योंकर
निकलूँ जो तजस्सुस[8] को तो बेजा नहीं वारी
माँ हूँ मेरा पत्थर का कलेजा नहीं वारी।

इस दाई ने की थी गिला[9] आमेज़ जो तकरीर
उस वक़्त न थी होश में ये बेकस-ो-दिलगीर
मंज़ूर ये था पहले हो तुम फ़िदयए[10]-शब्बीर
शर्मिन्दा हूँ महजूब हूँ बख़्शो मेरी तक़सीर
रोते थे कि अम्माँ में खफ़ा होने की खू है
घुड़का था, कलेजा मेरा इस ग़म से लहू है।

जंगल में क़याम आज कहाँ होगा बताओ
माँ सद्के, मुक़ाम आज कहाँ होगा बताओ
दिन तुम को तमाम आज कहाँ होगा बताओ
बिस्तर सरे-शाम आज कहाँ होगा बताओ
हमवार ज़मीं शब[11] के बिछोने को मिलेगी
कैसी है ज़मीं जो तुम्हें सोने को मिलेगी।

टुकड़े थे कलेजे ये बयाँ दर्द का सुन कर
एक हश्र था, सैदानियाँ सब पीटती थीं सर
बानो ने कहा, क़िब्लए-कौनैन[12] से उठ कर
मर जायेगी माँ लाशों को ले जाइये बाहर
फ़र्ज़न्द का ग़म ख़ालिके-आलम[13] न दिखाये
अल्लाह किसी माँ को ये मातम न दिखाये!

---

१. फूल २. बाग़ के पेड़ ३-४. फूलों के नाम ५. बुलबुल का गाना ६. बाग़ में ७. जमीन के नीचे ८. तलाश ९. शिकायत १०. क़ुर्बान ११. रात १२. इमाम हुसैन १३. दुनिया को बनाने वाला

क्या लाशों के जाने का कहूँ हाल "अनीस" आह
दर तक गये सब पीटते रोते हरमे-शाह[1]
अल्लाह ही ज़ैनब की मुसीबत से है आगाह
गुज़रे किसी मादर पे न ये सद्मए-जाँकाह[2]
बालाए-जमीं अर्श के तारों को न देखा[3]
गश से जो खुली आँख तो प्यारों को न देखा।

१. हुसैन के घर वाले २. जान लेने वाला ग़म ३. जमीन पर वे आसमान के तारे नजर न आये

मर्सिया : ५

"जब हज़रते-ज़ैनब के पिसर मर गये दोनों"

क़ासिम, इमाम हसन के बेटे की शहादत

जब हज़रते-ज़ैनब के पिसर[1] मर गये दोनों
था शोर कि प्यासे लबे-कौसर[2] गये दोनों
छोटे थे मगर नाम बड़े कर गये दोनों
दर्बारे - मुहम्मद में बराबर गये दोनों
ज़ोहरा की तरह आशिक़े-औलाद थी ज़ैनब
बेटों का तो मातम था मगर शाद थी ज़ैनब।

फ़र्ज़न्दों से माँ को कोई होता नहीं प्यारा
जिन बेटों की आशिक़ थी उन्हें भाई पे वारा
बेदम हुए दो लाल पे दम उसने न मारा
पूछा न कि जन्नत की तरफ़ कौन सिधारा
चादर न गिरी सर से न थीं आयीं जबीं[3] पर
दो शुक्र कि सजदे किये झुक झुक के जमीं पर।

जब मर चुके ज़ैनब के पिसर फ़ौजे-सितम में
और गुल्शने-हस्ती[4] से गये बाग़े-इरम[5] में
तारीक जहाँ था नज़रे - शाहे - उमम में
ज़ैनब ने बुरा हाल किया बेटों के ग़म में
चिल्लाती थी दौलत मेरी सब लुट गयी लोगो
परदेस में फ़र्ज़न्दों से मैं छुट गयी लोगो।

इन बातों पे ज़ैनब की हरम करते थे मातम
मैदाँ में मबारज़[6] तलबी करते थे अज़लम[7]
कुछ मशवरा था अक्बर-ो-अब्बास में बाहम
क़ासिम का इरादा था कि लें उनकी रज़ा हम
पर शिद्दते-गिर्या[8] से न मारा था सुख़न का
मुँह माँ का कभी देखते थे गाह दुल्हन का।

मादर[9] था इशारा था कि क्या क़स्द[10] है वारी
चुपके रहो घूंघट में दुल्हन करती है ज़ारी
कहता था पिसर जान चचा से नहीं प्यारी
कुछ आप सुफ़ारिश करें अब उनसे हमारी
अक्बर को न शब्बीर कहीं इज़्ने-वग़ा[11] दें
जी जायें अगर ये हमें मरने की रज़ा दें।

---

१. बेटे २. जन्नत की नहर ३. माथा ४. दुनिया का बाग़, संसाररूपी बाग़ ५. जन्नत का बाग़ ६. लड़ाई के लिए ललकारना ७. ज़ालिम लोग ८. रोने की अधिकता ९. माँ १०. इरादा ११. जंग का हुक्म

रुख़सत का सुख़न मुँह से निकलता न हमारे
फ़र्ज़न्द[1] फुफी जान के दुनिया से सिधारे
कुछ मुँह से नहीं बोलतीं ये शर्म के मारे
हूरें हमें ग़ुर्फ़ों[2] से ये करती हैं इशारे
क्या देखते हो प्यार से सूरत को दुल्हन की
अब सैर करो उठके शहादत के चमन की।

हरचन्द नहीं दिल को फ़िराक़[3] उनका गवारा
जुज़[4] ख़्वाहिशे-तक़दीर कुछ इसका नहीं चारा
वल्लाह कि सदमे से कलेजा है दो पारा
किस वक़्त में अफ़सोस हुआ ब्याह हमारा
क्या राहत-ो-आराम में जल्दी ख़लल आया
बातें भी न की थीं कि पयामे-अजल[5] आया।

फ़क़ हो गयी माँ सुन के ये फ़र्ज़न्द की तक़रीर
बानो ने कहा, हाय मेरी बच्ची की तक़दीर
ख़ामोश थी घूँघट में दुल्हन सूरते-तस्वीर
दूल्हा का सुख़न सुन के कलेजे पे लगा तीर
चाहा कि कहे काश हमारी अजल[6] आये
कुछ मुँह से न निकला मगर आँसू निकल आये।

आँखों को रँड़ापे का नज़र आ गया सामाँ
सीने पे चली वस्ल[7] में तेग़े-ग़मे-हिजराँ[8]
ख़ुद हो गये सब गूँधे हुए बाल परेशाँ
माथे से सितारों की तरह गिर गयी अफ़शाँ
वो रश्के-चमन ग़म से जो सरगर्म-फ़ुग़ाँ[9] थी
हर आह में सहरे के भी फूलों पे ख़िज़ाँ थी।

ज़ानों पे झुका जाता था सर शर्म के मारे
सीने से निकल जाते थे आहों के शरारे
वो कहती थी अब नाक से नथ कोई उतारे
रो-रो के सकीना से ये करती थी इशारे
इस ताश के जोड़े को बस अब आग लगा दो
सादे हों जो कपड़े वो मुझे लाके पिन्हा दो।

---

१. बेटे २. झरोखे ३. जुदाई ४. सिवा ५. मौत का संदेश ६. मौत ७. मिलन
८. जुदाई की तलवार ९. रो रही थी

खोलो उसे, कँगने से बस ग्रब हाथ उठाया
क्यों हाय ये कँगना मुझे ग्रम्मा ने पिन्हाया
बेटी को रँड़ापे की मुसीबत में फँसाया
क्या उनका बिगड़ा जो दुल्हन मुझको बनाया

मर जाने की रुख़्सत के तलबगार हैं मुझ से
सौंपा था जिन्हें वो भी तो बेज़ार हैं मुझ से।

ग्रब होती हूँ बेवा मुझे क्या चाहिए ज़ेवर
काली कफ़नी बर[1] में हो ग्रौ नीली-सी चादर
मसनद मुझे ग्रौर ख़ाक का बिस्तर है बराबर
क़िस्मत में लिखा था कि फिरूँ शहरों में दर-दर

क्या कहिये मुक़द्दर[2] था ग्रजब वाह हमारा
जन्नत के मुसाफ़िर से हुग्रा ब्याह हमारा।

दूल्हा ने जो देखा कि दुल्हन ग़म से है मुज़्तर
चलने लगे सीने पे ग़म-ो-दर्द के ख़ंजर
एक ग्राह भरी, ज़र्द हुग्रा चेहरए-ग्रनवर
झुक कर कहा ज़ानू से उठाग्रो तो ज़रा सर

लिल्लाह न रोग्रो तुम्हें समझाते हैं साहिब
कुछ बात करो, मरने को हम जाते हैं साहब।

ग्रब फिर के नहीं ग्राने के, होती है जुदाई
हसरत है कि ग्रावाज़ भी तुमने न सुनायी
तक़दीर ने ग्राईने में सूरत तो दिखायी
फिर शान न उस मुसहफ़े-रुख़[3] की नज़र ग्रायी

लब बन्द ही रक्खे, दरे-गुफ़्तार[4] न खोला
इन नर्गिसी ग्राँखों को फिर एक बार न खोला।

कुछ बात करो हम से कि फ़ुर्सत है बहुत कम
राहत से खुशी से जो गुज़र जाये कोई दम
एक ग्रान में सोहबत ये कहाँ ग्रौर कहाँ हम
हो जायेगा शादी का मकाँ ख़ानए-मातम

ज़िन्दाने-मुसीबत[5] तुम्हें रोने को मिलेगा
ग्रौर गोशए-तुर्बत[6] हमें सोने को मिलेगा।

१, बदन पर, २. भाग्य ३. चेहरे का ग्राईना ४. बात न की ५. क़ैदख़ाना
६. क़ब्र का कोना

तलवारों से वाँ जिस्म मेरा होएगा सद चाक[1]
लूटेंगे उदू[2] आन के याँ ब्याह की पोशाक
भर जायेगी इस माँग में सन्दल के एवज़[3] ख़ाक
कँगना न खुलेगा कि रसन बाँधेंगे सफ़्फ़ाक[4]
ख़ंजर मेरी गर्दन से कोई दम को मिलेगा
रँड़साला न तुमको न कफ़न हमको मिलेगा।

हम छोड़ के तन्हा न तुम्हें घर से निकलते
साये की तरह पास से एक आन न टलते
इस गुल-से कफ़े-पा[5] से सदा आँखों को मलते
क्या कीजिये, हैं तीर चचा जान पे चलते
सौ बार हूँ सदक़े तो न हक़ उनके अदा हों
मज़लूम का फिर कौन है गर हम न फ़िदा हों।

इन्साफ़ करो तुम कि अजब सख़्त घड़ी है
अम्मू[6] तो अकेले हैं, इधर फ़ौज खड़ी है
दुनिया में किसी पर भी मुसीबत ये पड़ी है
दिल पास तुम्हारे है इधर जान लड़ी है
क्या जानिये क्या वक़्ते - अजल[7] होएगी मुश्किल
रुख़सत हमें अब दोगी तो हल होएगी मुश्किल।

जिस वक़्त सुनी दर्द की तक़रीर ये सारी
ता देर तो बोली न दुल्हन शर्म की मारी
दूल्हा ने रखा पाँव पे जब सर कई बारी
आहिस्ता कहा, आह ये तक़दीर हमारी
समझी मैं ये बस मुझको न समझाइये साहिब
क्या ज़ोर मेरा, ख़ैर चले जाइये साहिब।

है आपको मंज़ूर मेरा राँड़ बनाना
रास आया न साहिब को मुझे ब्याह के लाना
आना मेरा औ आपका सर देने को जाना
रोकूँ तो कहोगे, मेरे कहने को न माना
इतना तो कहे जाओ कि कब होगी मुलाक़ात
दूल्हा ने कहा हश्र[8] में अब होगी मुलाक़ात।

---

१. टुकड़े-टुकड़े २. दुश्मन ३. बदले में ४. ज़ालिम लोग ५, फूल-जैसे तलवे ६. चाचा
७. मौत के वक़्त ८. क़यामत का दिन

फ़रमाके ये मसनद[1] से जो उट्ठा वो खुशइक़बाल
बोली न दुल्हन कुछ, ये हुआ माँ का अजब हाल
चिल्लायी कि मरने को चला हाय मेरा लाल
फ़रियाद है मुझ राँड़ की खेती हुई पामाल
परदेस में छोड़े चले जाते हैं दुल्हन को
ऐ बीबियो! रोको कोई फ़र्ज़न्दे-हसन को।

वाँ पुर्से को ज़ैनब के जो थे जमा हरम सब
ग़ुल पड़ गया लो और क़यामत ये हुई अब
कुब्रा को रँड़ापे से बचा लीजियो या रब
बैठा न गया उठ के लगी पीटने ज़ैनब
बेटी के लिए ग़म से मुई जाती थी बानो
बच्चे को लिये गोद में थर्राती थी बानो।

सब खेमए-क़ासिम में जो आये ब-दिले-ज़ार[2]
दूल्हा नज़र आया उन्हें बाँधे हुए हथियार
रुख़्सत हुआ मादर[3] से ये कहकर वो दिल-अफ़गार[4]
इस वक्त रहें आप ज़रा इनसे खबरदार
जो बात मुनासिब हो वो समझाइयो इनको
लाश आये जो मेरी कि न दिखलाइयो इनको।

ड्योढ़ी पे ये तक़रीर खड़े सुनते थे सरवर[5]
अब्बास से फ़रमाया कि ऐ जाने-बिरादर
क़ासिम से भी लो हम को छुड़ाता है मुक़द्दर[6]
राँड़ अब हुई एक रात की ब्याही मेरी दुख़्तर
अब सब्र हो क्यों कर दिले-मुज़्तर[7] से हमारे
भाई की भी औलाद चली घर से हमारे।

बस इतने में क़दमों पे गिरा आन के नौशाह
की अर्ज़ कि मरने की रज़ा[8] दीजिये लिल्लाह
लिपटा के गले से उसे शब्बीर ने की आह
फरमाया कि रुख़्सत है बड़ा सद्मए-जाँकाह[9]
पर ख़ैर चचा बेकस-ो-मजबूर है बेटा
जाओ यही अल्लाह को मंज़ूर है बेटा।

---

१. मसनद, फ़र्श २. ग़म की हालत में ३. माँ ४. रंजीदा ५. इमाम हुसैन ६. क़िस्मत
७. बेचैन दिल ८. इजाज़त, आज्ञा ९. जान लेने वाला ग़म

मैं देखता था तुमको जो याद ग्राते थे भाई
गोया कि हुई ग्राज बिरादर[1] से जुदाई
मातम भी दिखाया हमें शादी भी दिखायी
तुम मरने चले ग्रौ न हमारी ग्रजल ग्रायी
क्या जानते थे हाथ से यूँ खोयेंगे तुमको
तुम हमको न रोग्रोगे, हमीं रोयेंगे तुमको।

सदक़े हो चचा, पास तो ग्राग्रो मेरे प्यारे
बेताब है दिल, गिर्द फिरूँगा मैं तुम्हारे
वो पाँव पे हज़रत के झुका शर्म के मारे
लिपटा के गले से शहे-वाला[2] ये पुकारे
दे सब्र इलाही कि क़रार ग्राये जिगर को
उम्मत पे फ़िदा करता हूँ भाई के पिसर को।

बेटी के रँडापे का भी कुछ मुझको नहीं ग़म
ख़ुश्नूद[3] ग्रगर तू है तो शादी है ये मातम
है लुत्फ़[4] तेरा ज़ख्मे-जिगर का मेरे मरहम
मक़बूल[5] मेरी नज्र हो, ऐ ख़ालिक़े-ग्रालम[6]
हरचन्द कि हदया[7] है ये क्या ग्रौर मैं क्या हूँ
सौ बार जिऊँ मर के तो सौ बार फ़िदा हूँ।

ये कह के किया चाक भतीजे का गरीबाँ
फ़रमाया कफ़न है यही पोशाक मेरी जाँ
माँ ड्योढ़ी पे चिल्लायी कि ग्रल्लाह निगहबाँ
किस शान से घोड़े पे चढ़े क़ासिमे-ज़ीशाँ[8]
मक़तल में जो ज़ैग़म[9] की तरह नारा ज़न ग्राये
था शोर कि भाई की मदद को हसन ग्राये।

दी रन की रज़ा शाह ने जब इब्ने-हसन को
एक ईद हुई मरने की उस ग़ुंचा-दहन[10] को
शेराना[11] चला तेग़ ब-कफ़[12] ख़ेमे से रन को
ग्रादा ने कहा देख के इस रश्के-चमन को
नूरे-हसनी चेहरए-ज़ेबा[13] से ग्रयाँ है[14]
हमशौकत-ो-शाने-ग्र स दुल्लाह ये जवाँ है[15]।

---

१. भाई २, ग्रर्थात् इमाम हुसैन ३. ख़ुश ४. मेहरबानी ५. स्वीकार ६. दुनिया को बनानेवाला ७. तोहफ़ा, उपहार ८ बड़ी शानवाले ६. शेर १०. फूल-सा मुँह ११. शेर की तरह १२. हाथ में तलवार तोले हुए १३. सुन्दर चेहरा १४. प्रकट है १५. यह युवक ग्रली की-सी शानवाला है

बोला कोई बेदर्द कि लड़का है ये जाँबाज़[1]
निकला है न सब्ज़ा न मसें हैं अभी आग़ाज़
तेवर में मगर शेर की चितवन का है अन्दाज़
बरगश्ता[2] है इससे फ़लके-तफ़रक़ा परदाज़[3]
आती है महक ब्याह के फूलों की बदन से
किस वक़्त में दूल्हा को छुड़ाया है दुल्हन से।

साबित-क़दमी[4] में कोई उसका नहीं हमसर[5]
टल जाये ज़मीं, पर ये नहीं हटने का सफ़दर[6]
है इसके लिए काह से कम कोह का लश्कर[7]
जाँबाज़[8] है लख़्ते - जिगरे - हैदरे - सफ़दर
ज़ोर उनका किसी जंग में घटते नहीं देखा
पीछे कभी इस क़ौम को हटते नहीं देखा।

इतने में रजज़[9] पढ़ने लगा क़ासिमे-नौशाह
आगाह हो, आगाह हो, आगाह हो, आगाह
दादा है हमारा अ स दुल्लाह[10], य दुल्लाह[11]
अम्मू हैं हुसैन इब्ने-अली, सय्यदे-ज़ीजाह
मैं लख़्ते-दिले[12] फ़ातमा का लख़्ते-जिगर हूँ
पानी में जिसे जहर दिया उसका पिसर हूँ।

सब जानते हैं पंजतने-पाक का रुत्बा
आदम से किया पहले खुदा ने उन्हें पैदा
की शेरे - ख़ुदा ने मददे - हज़रते - मूसा[13]
था तूर[14] पे भी नूरे - मुहम्मद ही का जल्वा
दाख़िल सुखन अपना ये तअल्ली में नहीं है[15]
रोशन है कि तकरार तजल्ली में नहीं है[16]।

हम साहिबे-शमशीर हैं हम शेरे-जरी हैं
हम बन्दए - मक़बूल हैं, इस्याँ[17] से बरी हैं
दुनिया से कोई दम में अदम को सफ़री हैं
क्या समझें जो वो मस्ते-मए-बेख़बरी[18] हैं

---

१. बहादुर २. फिरा हुआ ३. जुदाई करनेवाला आसमान ४. स्थिरता, दृढ़ता ५. बराबर ६. बहादुर ७. यह पहाड़ सा लश्कर उसके लिए घास-फूस है ८. बहादुर ९. बहादुरी के शेर १०-११. हजरत अली की उपाधियाँ १२. दिल का टुकड़ा १३. एक पैग़म्बर १४, जिस पहाड़ पर मूसा ने ख़ुदा का नूर (प्रकाश) देखा था १५. यह मैं शेख़ी नहीं कर रहा हूँ १६. सब जानते हैं कि रोशनी रोशनी ही है १७. गुनाह, पाप १८. जो बेखबर हैं

देवेगा ख़ुदा दाद जो बेदाद करोगे
भूले हो अभी तो, पे बहुत याद करोगे।

जान-ो-दिले-ज़ोहरा के अबस[1] दर्पए-जाँ[2] हो
किस सिम्त[3] को बहके हुए फिरते हो कहाँ हो
अफ़सोस कि जो मुसहफ़े-नातिक़[4] की ज़ुबाँ हो
सब पानी पियें और वोही तश्ना-दहाँ[5] हो
हैं सैकड़ों तेग़ें अलम एक जान की ख़ातिर
दुनिया में यही होती है मेहमान की ख़ातिर।

सैयद ने जो की हो कोई तक़सीर[6] तो कह दो
जोड़ा हो कमाँ में जो कोई तीर तो कह दो
छीनी हो किसी शख़्स की जागीर तो कह दो
उम्मत पे कभी खींची हो शमशीर तो कह दो
तुम लोगों ने किस रोज़ नहीं जब्र[7] किया है
इस साबिर-ो-शाकिर ने सदा सब्र किया है।

क़ब्ज़े पे अगर इब्ने-अली[8] हाथ धरेगा
देखेंगे कि सीने को सिपर कौन करेगा
एक दम में ये मैदाने-सितम ख़ूँ से भरेगा
जो तेग़ से बच जायेगा, दहशत से मरेगा
लश्कर को उलट देंगे उन्हें ग़ैज़[9] जब आया
तेग़े-अ स दुल्लाह खिंची और ग़ज़ब आया।

उनका तो है क्या ज़िक्र अगर हुक्मे-वग़ा[10] दें
वल्लाह ग़ुलाम उनके अभी तुम को भगा दें
ज़र्बे[11]-अ स दुल्लाह का अन्दाज़ दिखा दें
सौ सौ के सर एक दम में तनों पर से उड़ा दें
एक उनमें से मैं आया हूँ जुरअत मेरी देखो
सिन देखो मेरा और शुजाअत[12] मेरी देखो।

क्या देर है, मुँह पर मेरी शमशीर के आओ
देखूँ तो भला कुछ हुनरे-जंग दिखाओ
बोला पिसरे-साद सवारों से कि जाओ
हाँ क़ासिमे-नौशाह का सर काट के लाओ

---

१. बेकार २. जान के लागू ३. तरफ़, ओर ४. ख़ुदा की वाणी ५. प्यासा ६. ख़ता, दोष ७. सख़्ती ८. अली का बेटा ९. गुस्सा १०. जंग, युद्ध ११. काट १२. बहादुरी

दामाद का दो दाग़ इमामे-मदनी[1] को
ठण्डा करो तेग़ों से चराग़े-हसनी को।

दरिया की तरह फ़ौज को जुम्बिश[2] हुई एक बार
तेग़ों की उठी मौज म्याने-सफ़े-कुफ़्फ़ार[3]
ढालों का हुआ अब्रे-स्याह दिन में नमूदार[4]
बदली जो हवा पड़ने लगी तीरों की बौछार
बैठा वो जरी तेग़-ब-कफ़ अहले-जफ़ा में
बिजली-सी लगी कौंधने ढालों की घटा में।

नौशाह ने पायी थी अजब हिम्मते - आली
हमला किया जिस सफ़ पे वो सफ़ हो गयी ख़ाली
तलवार ने आफ़त सरे-कुफ़्फ़ार पे डाली
लड़ने के लिए तेग़-ो-सिपर जिसने सँभाली
तलवार का आना हुआ साबित न लईं पर
दो टुकड़े नज़र आये बराबर सरे-ज़ीं पर

सहमे ये क़मांदार[5] कि रुख़ जंग से फेरा[6]
चिल्लाये कि हल्क़े में हमें मौत ने घेरा
था ग़ैज़ से नौशाह की आँखों में अँधेरा
नारा था कि हाँ वार कोई रोके तो मेरा
मैं दस्त-व-क़ब्ज़ा हूँ वो जाँबाज़[7] कहाँ हैं
गोशों से तो निकलें, क़दर अन्दाज़[8] कहाँ हैं।

था मुज़तर-ो-हैराँ पिसरे-साद सितमगर
पैहम ये ख़बरदार ख़बर देते थे आकर
सरदारों के सर कट गये पस्पा[9] हुआ लश्कर
दरिया तलक आ पहुँचा है लख़्ते-दिले-शब्बर
इस शेरे-ग़ज़बनाक को टोका नहीं जाता
सब कहते हैं बिजली को तो रोका नहीं जाता।

घबरा कें कहा उसने कि अरज़क़[10] को बुला ला
आया वो जफ़ाकार सँभाले हुए भाला
बोला ये अमर[11], हो गया लश्कर तह-ो-बाला
घोड़े को मगर तूने परे से न निकाला

---

१. इमाम हुसैन २. हरक़त ३. दुश्मन की फ़ौज के बीच में ४. ज़ाहिर, प्रकट ५. फ़ौज का अफ़सर ६. जंग से मुँह फेरा ७. बहादुर ८. ऐसे तीर फेंकने वाले जिनका निशाना चूके नहीं ९. लश्कर हार गया १०. दुश्मन की फ़ौज का बड़ा बहादुर सरदार ११. अमर साद, दुश्मन की फौज का सेना-नायक

जाकर कोई इस सफ़दर-ो-जर्रार[1] को मारे
नज़दीक है आकर किसी सरदार को मारे।

हर साल तुझे मिलता है अस्प[2]-ो-ज़र-ो-इनाम
सरदार के काम आ कि शुजाओं का ये है काम
शोहरा तेरी शमशीर का है, रूम[3] से ता शाम[4]
दूल्हा को मिटा दे तो बड़ा होगा तेरा नाम

शोर आबे-दमे-तेग़[5] का उसके लवे-गू है
गर याँ तलक आया तो न फिर मैं हूँ न तू है।

यूँ कहने लगा चीं-ब-जबीं[6] हो के वो मग़रूर
लड़के से लड़ूँ मैं ये मेरी अक्ल से है दूर
इस फ़ौज पे तू गो कि हकूमत पे है मामूर[7]
ये नग[8] किसी तरह न होगा मुझे मंज़ूर

मारा है हज़ारों को मेरी धाक है सब में
हो जाऊँगा बदनाम शुजाआने-अरब[9] में।

गो तिफ़्ल[10] हैं पर तेग़ज़नी विर्स है उनका[11]
ये बत्न[12] से मादर के जरी होते हैं पैदा
जाँबाज़ हैं ऐसे कि नहीं जान की परवा
बढ़-बढ़ के हज़ारों से वग़ा करते हैं तन्हा

तिफ़ली में जवानों के किये काम अली ने
गहवारे में अज़दर[13] को भी चीरा है किसी ने।

अरज़क़ ने कहा गरचे तेरी रास्त है गुफ़्तार
पर मैं तो न लड़के पे कभी खींचूँगा तलवार
क़त्ल उसका है मंजूर तो हैं मेरे पिसर चार
रोईं तन[14]-ो-ज़ोर आवर-ो-नाम-आवर-ो-जर्रार

माहिर है हर एक मेरी तरह जंग के फ़न का
सर काट के ले आयेंगे फ़र्ज़न्दे-हसन का।

तलवार का ज़ालिम ने किया वार झपट कर
ख़ाली दिया इस वार को नौशाह ने हट कर

---

१. बहादुर २. घोड़ा ३. देशों के नाम ४. तलवार की काट की शोहरत ५. माथे पे बल डाल कर ६. हाकिम है ७. ज़िल्लत ८. अरब के बहादुरों में ९. लड़का १०. तलवार चलाना उनकी विरासत है १२. माँ के पेट में १३. अज़दहा, बड़ा साँप १४. अस्फ़न्द यार की उपाधि अर्थात् बहुत बहादुर

दूल्हा ने जो हर्बा[1] किया घोड़े को डपटकर
दस्ताने भी साइद[2] भी गिरे तेग़ से कटकर
न तेग़ न पंजा न कलाई नज़र आयी
एक हाथ में हाथों की सफ़ाई नज़र आयी।

एक भाई के मरते ही बढ़ा दूसरा भाई
उसने भी लड़ाई में बहुत जान लड़ायी
मोहलत न मगर हाथ से नौशाह के पायी
आया वो उधर से कि इधर से अजल आयी
ढूंढ़ा किये कासिम भी कि क्या हो गया दुश्मन
एक बर्क़-सी चमकी कि फ़ना हो गया दुश्मन।

फ़र्ज़न्दे[3]-सोम फ़ौज से निकला सिफ़ते-शेर[4]
था भाइयों के ग़म से जहाँ आँखों में अँधेर
दूल्हा से रही रद्दोबदल[5] तीरों की ता देर
था गरचे ज़बर्दस्त पे क़ासिम ने किया ज़ेर[6]
वार अपना ये करते थे जो वार उसका बचाकर
रह जाता था गुस्से से वो होंठों को चबाकर।

लब पर जो उधर बे-अदबाना सुख़न आया
सुनते ही इधर ग़ैज़ में इब्ने-हसन आया
उस वक़्त कोई तोड़ न ज़ालिम को बन आया
बालाए-दहाँ नेज़ए-दन्दाँ शिकन आया
जाँ बह्‌रे-सफ़र तन की सरा से निकल आयी
नेज़े में ज़ुबाँ छिद के क़फ़ा[7] से निकल आयी।

चौथे की तरफ़ देख के क़ासिम ये पुकारे
तू आ कि वो तीनों तो जहन्नुम को सिधारे
तलवार अलम करके चला तैश[8] के मारे
थे ढंग इधर जंगे-यदुल्लाह के सारे
फ़ुर्सत भी न हर्बे[9] की मिली दुश्मने-दीं को
एक ज़र्ब में दो कर के क्या चाक लईं को।

चारों पिसर अरज़क को नज़र आये जो बे-दम
एक आग अनासिर[10] में भड़कने लगी उस दम

---

१. हमला २. कलाई ३. तीसरा बेटा ४. शेर की तरह ५. दोनों तरफ़ से तीर चलते रहे ६. नीचा दिखाया ७. पीछे से ८. सख़्त ग़ुस्से में ९. हमला १०. जिस्म में, शरीर में

तारी हुआ ग़ुस्सा न मिली फ़ुर्सते-मातम
बाँधा कमरे-नह्स को ज़ंजीर से मोहकम
बेटे हुए सरबर जो न क़त्ताले-अरब[1] से
आँखें हुई दो कासए-खूँ[2] जोशे-ग़ज़ब से।

शब्बीर[3] ने अरज़क को जो आते हुए देखा
बस बैठ गये थाम के हाथों से कलेजा
फरमाया बड़ा क़ह्र हुआ आह करूँ क्या
वो देव ये कमज़ोर, वो सैराब[4] ये प्यासा
गिरता है फ़लक गोद के पाले पे हमारे
अब पेच पड़ा गेसुओं वाले पे हमारे।

या रब मेरे क़ासिम को इस आफ़त से बचा ले
बेकस को सितमजार की ज़र्बत से बचा ले
कुब्रा को रँडापे की मुसीबत से बचा ले
बच जाये जो तू अपनी इनायत से बचा ले
उम्मत पे फ़िदा कर चुका औलाद बहन की
ये लाल मेरे पास अमानत है हसन की।

ये कह के जो बेताब हुए शाहे-ख़ुश[5] इक़्बाल
ग़ुल पड़ गया लो बाग़े-हसन होता है पामाल
ज़ोहरा की बहू-बेटियों ने खोल दिये बाल
माँ ख़ाक पे ये कह के गिरी हाय मेरे लाल
पीटी जो दुल्हन सर को तो घबरायी सकीना
रोती हुई ख़ेमे से निकल आयी सकीना।

याँ होने लगी क़ासिमो-अरज़क में लड़ाई
नेज़ों की चमक देखती थी सारी ख़ुदाई
अरज़क की तो करता था अमर मद्हा[6] सराई
अकबर का ये नारा था कि हाँ ऐ मेरे भाई
अब घोड़े की टापों तले पामाल है अरज़क़
तुम शेर के फ़र्ज़न्द हो क्या माल है अरज़क।

परकार[7] से मैदान में फिरने लगे मरकब[8]
रद कर दिया नौशाह नें वार उसने किया जब

१. अर्थात् क़ासिम जो अरब के बहादुर थे २. ख़ून के दो प्याले ३. इमाम हुसैन ४. पानी पिये हुआ ५. इमाम हुसैन ६. प्रशंसा ७. गोल-गोल चक्कर में ८. घोड़े

बँधता था कोई बन्द न बनता था कोई ढब
जुरअत में यदुल्लाह[१] ये थे और वो मरहब[२]
उठते थे ततक गर्द के[३] मैदाने-बला में
चिंगारिया उड़ती थीं सिनानों से हवा में।

क़ासिम की तरफ़ बढ़ के लगा कहने वो बेपीर
मशहूर है दस्ते-मलकुल मौत[४] ये शमशीर
ख़ाली गये गो नेज़-ओ-गुर्ज़ो तबर-ो-तीर
ऐ तिफ़ले-हसन ! अब न बचेगा किसी तद्बीर
दो टुकड़े करूँगा तुझे यक्ताए-जहाँ हूँ
तू मोर से कमज़ोर है मैं पीले-दमाँ हूँ।

चमका के वोही तेग़ जो दुश्मन को बतायी
हटने की भी मोहलत न सितमगार ने पायी
एक बर्क़-सी आँखों में चमकती नज़र आयी
ज़ालिम ने सिपर सर के बचाने को उठायी
एहसन्त[५] का ग़ुल फ़ौज के अम्बोह से उट्ठा
मालूम हुआ अब्रे-स्याह कोह से उट्ठा।

ज़ैनब का जो था हाल बहुत ग़म से परेशाँ
फूली न समायी ये हुई ख़ुर्रम-ो-शादाँ[६]
बानो ने कहा जा कि दुल्हन से कि मेरी जाँ
लो शुक्र का सज़्दा करो मुश्किल हुई आसाँ
ज़ोहरा का तेरे फ़र्क़ ये दामन रहे बेटी
तू ता सद-ो-सी साल[७] सुहागन रहे बेटी।

माँ ख़ल्क़ में आबाद तुझे छोड़ के मर जाये
दूल्हा तेरा क़ायम रहे तू ख़ल्क़[८] में सुख पाये
रोता हुआ तुझ को कभी अल्लाह न दिखाये
हँसता हुआ मैदाने-शहादत से बना आये
खिलते हुए बर में गुले-उम्मीद को देखूँ[९]
मसनद पे क़िराने-मह-ो-ख़ुर्शीद को देखूँ[१०]।

---

१. अली २. अली का बहादुर दुश्मन, जिसे उन्होंने युद्ध में मारा था ३. मिट्टी के पद-से उठते थे ४. मौत के फ़रिश्ते का हाथ ५. वाह वा का शोर ६. ख़ुशी हो गयी ७. एक सो तीस साल ८. दुनिया ९. गोद में बच्चा देखूँ १०. मसनद पर दोनों दूल्हा-दुल्हन को साथ बैठे देखूँ

बैठी थी दुल्हन शक्ल जो राँड़ों की बनाये
था सोच कि क्या देखिये तक़दीर दिखाये
मुज़दे[१] जो खुशी होने के हश्मत ने सुनाये
ये दिल में हुई शाद कि आँसू निकल आये
दूल्हा नहीं आयेगा ये हरगिज़ न खबर थी
घूँघट से कभी माँ पे कभी दर पे नज़र थी।

सच कहते हैं, हैं शादिओ-ग़म ख़ल्क़ में तौअम[२]
मालूम न था ये कि बिछेगी सफ़े-मातम
दूल्हा पे उधर टूट पड़ा तश्करे-अज़लम
तेग़ों में घिरे बर्छियाँ चलने लगीं पैहम[३]
तीर आते थे सीने पे कलेजे पे जबीं[४] पर
कट-कट के गिरे पेच अमामे[५] के ज़मीं पर।

ज़ख़्मों का लगा ख़ून रकाबों से टपकने
ताक़त गयी लड़ने की लगा हाथ बहकने
पानी के लिए तन में लगी रूह फड़कने
मुड़ - मुड़ के सुए ख़ेमा लगे यास से तकने
सीने पे सिनाँ गुर्ज़ लगा कासए-सर पर[६]
त्यौरा के झुके थे कि पड़ी तेग़ कमर पर

अम्मू को सदा दी कि चचा जान ख़बर लो
होता है ग़ुलाम आप पे क़ुरबान ख़बर लो
दुनिया में कोई दम का हूँ मेहमान ख़बर लो
तकलीफ़ न देता मगर इस आन ख़बर लो
ज़र्रीयते-हैदर[७] की ये तौक़ीर[८] हुई है
पामाल हमें करने की तदबीर हुई है।

आवाज़े-हसन[९] आने लगी हाय मेरे लाल
सब्ज़े की तरह गुल को मेरे करते हैं पामाल[१०]
कुब्रा ने उधर खोल दिये गूंधे हुए बाल
दौड़े तरफ़े-फ़ौज शहन्शाहे-खुश इक़बाल
दामाद का मातम था कमर ज़ोफ़ से खम थी[११]
तेग़े[१२]-दो - ज़बाँ दस्ते-मुबारक में अमल थी।

---

१. ख़ुशी की ख़बरें २. दुनिया में ख़ुशी और ग़म जुड़वां हैं ३. निरन्तर ४. सिर ५. पगड़ी ६. सिर के ऊपर ७. अली की औलाद ८. इज्जत ९. इमाम हुसैन के बड़े भाई, इमाम हसन का स्वर १०. पैरों से रौंदना ११. कमजोरी से कमर झुक गयी थी १२. दुधारी तलवार

आदा[1] को भगा कर जो लगे ढूंढ़ने सरवर[2]
पामाल मिले क़ासिमे-नौशाह सरासर
गोदी का पला, पाँव रगड़ता था ज़मीं पर
रोकर पिसरे-फ़ातमा[3] ने पीट लिया सर
देखा जो हसन को तने-सद पाश से लिपटे
चिल्ला के हुसैन इब्ने-अली लाश से लिपटे।

रोकर कहा सदक़े हो चचा मुँह से तो बोलो
क्या हाल है ऐ माह लक़ा मुँह से तो बोलो
बेटा मैं तड़पता हूँ ज़रा मुँह से तो बोलो
गर उठ नहीं सकते तो भला मुँह से तो बोलो
मादर[4] को बड़ा दाग़ दिये जाते हो क़ासिम
बेटी को मेरी राँड़ किये जाते हो क़ासिम।

ये कहते थे जो मौत की हिचकी उसे आयी
मुँह खोल के हज़रत को ज़ुबाँ ख़ुश्क़[5] दिखायी
मखदूमए - आलम[6] ने ये आवाज़ सुनायी
मैं साग़रे - कौसर[7] हूँ तेरे वास्ते लायी
पी ले इसे ऐ लाल कि तर ख़ुश्क गला हो
दादी तेरे सूखे हुए होंठो पे फ़िदा हो।

लब बन्द किये क़ासिमे-नौशाह ने एक बार
पानी न पिऊँगा कि हैं प्यासे शहे-अबरार
दुनिया से सफ़र कर गया वो आईनए-रुख़सार
लाश उसकी चले लेके शहे-बेकस-ो-बेयार
ड्योढ़ी पे जो पहुँचे तो कहा देख के सब को
वो आये हैं दूल्हा था बनाया जिन्हें शब को

हय हय बने क़ासिम का हुआ शोर जो दर पर
बानो ने कहा लुट गयी लोगो, मेरी दुख़्तर
फ़र्ज़न्द के लाशे से लिपटने लगी मादर
सर पीटती दौड़ी, शहे मज़लूम की ख़्वाहर[8]
फिर कौन रहे बिन्ते-अली जब निकल आये
खेमे में दुल्हन रह गयी और सब निकल आये।

---

१. दुश्मनों को २-३. इमाम हुसैन ४. माँ ५. सूखी ज़ुबान ६. फ़ात्मा, हज़रत रसूल की बेटी ७. जन्नत की नहर का नाम ८. बहन

एक शोर उठा हाय ग़ज़ब मर गये क़ासिम
सब ख़ून में सर ता ब-क़दम[1] भर गये क़ासिम
शह बोले कि बरबाद हमें कर गये क़ासिम
प्यासे मेरे घर से लबे-कौसर गये क़ासिम
लो ख़ेमे में ले जाओ तुम इस रश्के-चमन को
शर्म आती है मैं मुँह न दिखाऊँगा दुल्हन को

ड्योढ़ी से जो ख़ेमे में शहे-बहर-ो-बर आये
रोते हुए और शर्म से गर्दन को झुकाये
आग़ोश में थे लाशए-नौशाह उठाये
अक्बर भी थे हमराहे-पिदर अश्क बहाये
ख़ामोश 'अनीस' अब नहीं ताक़त है बयाँ की
हालत कहूँ किस से शहे-कौन-ो-मकाँ की।

---

१. सिर से पैर तक

मर्सिया : ६

"या रब जहाँ में भाई से भाई जुदा न हो"

हज़रत अब्बास का वर्णन

या रब जहाँ में भाई से भाई जुदा न हो
दुश्मन भी इस बला में कोई मुब्तला न हो
बाज़ू के टूटने की किसी पर जफ़ा न हो
मर जाये ख़ुद, पे ये ग्रलमे-जाँगज़ा[1] न हो

तन्हा है वो ग़रीब जो ग्रालम[2] शरीक है
इस ग़म में बाप का भी तो मातम शरीक है।

जिससे न ग्रपनी जान को प्यारा करे बशर[3]
किस तरह उसका हिज्र[4] गवारा करे बशर
क्या इस ग़ज़ब के दर्द का चारा करे बशर
भाई के बाद किस का सहारा करे बशर

ताबो[5]-तवाँ कहाँ रहे बाज़ू ग्रगर न हो
लेटे जो क़ब्र में भी तो सीधी कमर न हो।

कोई हसन के दाग़ को पूछे हुसैन से
दुनिया में एक दम उन्हें गुज़रा न चैन से
रहता था हश्र[6] मादरे-क़ासिम के बैन से
बहते थे ग्रश्क चश्मे[7]-शहे-मशरक़ैन से

ग़म में शरीके-महफ़िले-शादी न होते थे
ग्राते थे जब सलाम को क़ासिम तो रोते थे।

बरसों हसन के ग़म में न सीधी हुई कमर
रातें तड़प तड़प के हुईं ग्राप को बसर
तन्हा जो हो उसी को है इस दाग़ की ख़बर
रोना है पीटना है, तड़पना है उम्र भर

यूँ सब हैं पर बिरादरे[8]-ग़मख़्वार ग्रौर है
ये उल्फ़तें ही ग्रौर हैं ये प्यार ग्रौर है।

ग्रब्बास पल के नामे[9]-ख़ुदा जब हुए जवाँ
कुछ बाज़ुए[10]-शिकस्ता में ग्राने लगी तवाँ
ग्रल्लाह क्या थी तर्बियते[11]-शाहे-इन्स-ो-जाँ
उनसे फ़ज़ायले[12]-शहे-मरदाँ हुए ग्रयाँ

रौशन हुग्रा जो नाम ग्रली के चराग़ का
मरहम मिला हुसैन को भाई के दाग़ का।

---

१. जान लेने वाला ग़म २. दुनिया ३. इन्सान, ग्रादमी ४. जुदाई, वियोग ५. शक्ति, ताक़त ६. क़यामत ७. हुसैन की ग्रांखों से ८. ग़म घटाने वाला भाई ९. ख़ुदा के फ़ज्ल से, भगवान की कृपा से १०. टूटे बाज़ू ११. इमाम हुसैन का पालन-पोषण १२. हज़रत ग्रली के गुण

ये जिस तरह थे शेफ़्तए[1]-शाहे[2]-नामदार
परवाना यूँ चराग़ पे होता नहीं निसार[3]
बुलबुल में और गुल में कहाँ इस तरह का प्यार
इज़्ज़त थी ख़ादिमी में ग़ुलामी में इफ़्तख़ार[4]
उल्फ़त इसी तरह थी उन्हें अपने शाह से
जो इश्क़ था अली को रिसालत पनाह से।

अब दिल में अपने भाइयों वाले करें ख़्याल
क्या होगा करबला में शहे[5]-तश्ना लब का हाल
रुख़्सत[6] तलब है, असलहा[7] बाँधे अली का लाल
क्योंकर हुसैन भाई को दें रुख़्सते[8]-जदाल
फ़ाक़ा है, तन में ज़ोर नहीं, दम में दम नहीं
इनका भी दाग़ बाप के मातम से कम नहीं।

अब्बास अर्ज़ करते हैं, ऐ क़िब्लए[9] ज़माँ
असग़र की और सकीना की अब है लबों[10] पे जाँ
आँखों में इस ग़ुलाम के तारीक[11] है जहाँ
ये तीन दिन की प्यास, सग़ीरों[12] को अलअमाँ
कोशिश ज़रूर चाहिए कारे[13]-सवाब में
ताज़ा ये बाग़ होएगा एक मश्के-आब[14] में।

फ़रमाया हाँ अतश[15] का मदावा है गर तो आब
पर मश्क भरने देंगे नहीं खानमाँ ख़राब[16]
साबिर को सब्र चाहिए भाई कि इज़्तराब[17]
हर्गिज़ नहीं तुम्हारी जुदाई की मुझको ताब[18]
कुछ होगा इज़्तराब से, नै शोसे-[19]-शैन से
मर जायें सब, पे तुम न जुदा हो हुसैन से।

अब्बास रोके बोले कि इन सब के मैं निसार
लिल्लाह[20] इज़्न[21] दीजिये या शाहे[22]-नामदार
आँसू बहा के कहने लगे शाहे-जी[23] वक़ार
अच्छा सिधारो ख़ैर मेरा क्या है इख़्तियार

---

१. न्योछावर २. इमाम हुसैन ३. क़ुर्बान, न्योछावर ४. गर्व ५. प्यासे हुसैन का करबला में क्या हाल होगा ६. आज्ञा माँग रहा है ७. हथियार ८. लड़ाई की इजाजत ९. अर्थात् इमाम हुसैन १०. होंठों पर दम है ११. दुनिया अँधेरा है १२. बच्चों की हालत ख़राब है १३. नेक काम में १४. पानी की मश्क १५. प्यास को केवल पानी ही बुझा सकता है १६. उनका घर खराब हो १७. परेशानी १८. ताक़त, बर्दाश्त १९. हाय पुकार २०. ख़ुदा के वास्ते २१. आज्ञा २२-२३. इमाम हुसैन का लक़ब

पहुँचादे अब ख़ुदा कहीं जन्नत के क़स्र[1] तक
तुम ज़ोह्‌र[2] तक न होगे, न हम होंगे अस्र[3] तक।

ख़ेमे में पहुँची रुख़सते-अब्बास की ख़बर
सब बीबियाँ हिरास में दौड़ीं बरहना सर
फ़िज़्ज़ा से बोली ज़ौजए[4]-अब्बासे-नामवर
क्या घर में वो न आयेंगे बाँधे हुए कमर
अच्छा सिधारते हैं तो ख़ेमे में आके जायें
फ़र्ज़न्द[5] रोते हैं, उन्हें सूरत दिखा के जायें।

फ़िज़्ज़ा से रोके कहने लगी ख़्वाहरे[6]-इमाम
मेरी तरफ़ से दे ये अलमदार[7] को पयाम
सुनती हूँ मैं कि जाते हो सूए सिपाहे-शाम
क्योंकर जियेंगे हिज्र में शब्बीरे[8]-तश्ना काम
किसको ख़बर है नह्‌र पर जाकर कब आओगे
बेकस बहन से क्या न गले मिलके जाओगे।

अब्बास आये ख़ेमे के अन्दर झुकाये सर
तसलीम करके झुक गये ज़ैनब के पाँव पर
सर को लगा के छाती से बोली वो नौहागर
अब्बास तुम न होगे तो लुट जायेगा ये घर
जाता है यूँ किसी से कोई आँख मोड़ के
भैया किधर चले, मेरे भाई को छोड़ के।

की अर्ज़[9] क्या करूँ जो न सर को करूँ निसार
एक भाई से किया मुझे क़िस्मत ने शर्मसार[10]
अक्बर पिदर से माँगते हैं इज़्ने[11]-कारज़ार
कीं मैंने मिन्नतें तो रुका भी वो गुल[12] अज़ार
हक़[13] रक्खे शह के साये में इस नौनिहाल को
जीता मैं ज़ख़्मी देख के अक्बर से लाल को।

दामन पकड़ के ज़ौजए-अब्बास ने कहा
ऐ इब्ने-मुर्तुज़ा[14], ये कनीज़ आपकी फ़िदा
दो लाल आपके हैं और एक मैं शिकस्ता[15] पा
पहुँचा[16] दो मुझको ता ब-नज़फ़ बह्‌रे मुस्तफ़ा

---

१. महल २. दोपहर का वक़्त ज़ब नमाज़ होती है ३. शाम का वक़्त जब नमाज़ होती है ४. अब्बास की पत्नी ५ बेटे ६. इमाम की बहन अर्थात् हज़रत ज़ैनब ७. अब्बास ८. प्यासे हुसैन ९. कहा १० शर्मिन्दा, लज्जित ११. जंग की आज्ञा १२. अर्थात् अली अक्बर १३. ख़ुदा १४, अली के बेटे १५. अभागिन १६. ख़ुदा के वास्ते मुझे नजफ़ पहुँचा दो (नजफ़ में अली का मज़ार है)

इज़्ज़त अब इस कनीज़ की साहिब के हाथ है
लाज़िम है मुझ पे रह्म कि बच्चों का साथ है।

कहने लगे ये रोके अलमदारे-नामदार[1]
राँड़ों[2] का और यतीमों का हामी है किरदिगार
हमराह होंगे क़ैद में सज्जाद दिलफ़िगार
मालिक हैं सब की ज़ैनबे-ग़मगीन-ो-सोगवार
लाज़िम[3] है सब्र-ो-शुक्र तुम्हें, बातमीज़ हो
मैं शाह का ग़ुलाम तुम उनकी कनीज़ हो।

मश्कीज़ा[4] ले के आयी सकीना चचा के पास
रोये गले लगा के अलमदार हक़ शनास[5]
कहने लगी लिपट के वो बच्ची ब दर्द-ो-यास[6]
लिल्लाह[7] अम्मू जान बुझा दो हमारी प्यास
तुमको दुआएँ दूंगी अगर जल्द आओगे
आने में देर की तो मुझे फिर न पाओगे।

मश्के-सकीना लेके बरामद हुए जनाब[8]
ताले[9] हुआ सिपह्रे-शराफ़त का आफ़ताब
घोड़े पे जल्वागर जो हुए मिस्ले[10]-बू तराब
बर्छो[11] उड़ा, सिमट के समन्दे[12]-सबा शिताब
ग़ुल था ये साज़ है, कि दुल्हन का बनाव है
बिजली है या बुराक़ की ये आव जाव है।

पहुँचा जो इस शिकोह[13] से रन में वो ज़ी-हशम[14]
दुलदुल[15] की तरह उड़ के थमा अस्पे-ख़ुशक़दम[16]
नारा जो करके खोल दिया दामने[17]-अलम
अल्लाह रे रोब! हटने लगा लश्करे-सितम
एक शोर था कि मश्क भी हमराह लाये हैं
भागो अली जिहाद को मैदाँ में आये हैं।

---

१. अब्बास जिनका नाम दूर-दूर तक मशहूर था २. राँडों और बे-बाप के बच्चों का ख़ुदा मदद करने वाला है ३. तुमको सब्र और शुक्र करना चाहिए कि समझदार हो ४. छोटी मश्क ५. ख़ुदा को पहचानने वाला ६. दुख और निराशा के साथ ७. ख़ुदा के वास्ते चचा हमारी प्यास बुझा दो ८. अब्बास ९. ऐसा लगा कि शराफ़त के आसमान का सूरज चमक उठा १०. अली की तरह ११. बहुत ऊँचा उछला १२. तेज दौड़ने वाला १३. शान १४. शान वाला १५. इमाम हुसैन का घोड़ा १६. अच्छी चाल चलने वाला घोड़ा १७. झण्डा

अल्लाह[1] री बेहवासिए-फ़ौजे-जफ़ा पसन्द
दहशत[2] से रुस्तमों के लरज़ते थे बन्द बन्द
बढ़कर पुकारे हज़रते - अब्बासे - अरजुमन्द[3]
जमकर लड़ो कि नाम शुजाओं[4] में हो बुलन्द
मरते हैं मारे प्यास के वाँ बेगुनाह दो
लड़ते नहीं तो नह्र पे जाने की राह दो।

ये सुनके इब्ने-साद लईं ने परे जमाये
दस्ते सितम के, घाट पे दरिया के, और आये
एक शोर था कि अब ये बहिश्ती[5] न बढ़ने पाये
तलवार रखके काँधे पे अब्बास मुस्कुराये
मौत आयी उसके सर पे जो आफ़त[6]-नसीब था
छेड़ा तो रख़्श[7] उड़के सफ़ों के क़रीब था।

शबरेज़[8] को उड़ा के गये जिस सवार पर
शेर आ पड़ा सिमट के यकायक शिकार पर
सर से वो तेग़े-तेज़ गयी राहवार[9] पर
निकली तो ख़ूँ की छींट न थी उसकी धार पर
क़ब्ज़े[10] से रास्ती न गयी कज अदाई में
देखी नहीं कभी ये सफ़ाई लड़ाई में।

आयी जिधर तनों से सरों को जुदा किया
एक एक नख़्ल[11] से समरों[12] को जुदा किया
शानों को गर्दनों को सरों को जुदा किया
काटीं सफ़ें, परों से परों को जुदा किया
लाखों से इस तरह कोई तन्हा लड़ा नहीं
फ़ौजों में तफ़रक़ा[13] कभी ऐसा पड़ा नहीं।

अल्लाह रे रोब-ो-सौलत[14]-ो-शौकत दिलैर की
गिन्ती महाल हो गयी लाशों के ढेर की
सब शान थी नबर्द[15] में ख़ालिक़ के शेर की
ख़ुद पहुँचे गर हरीफ़[16] ने बढ़ने में देर की

---

१. ज़ालिमों की फ़ौज की बेहवासी बहुत बढ़ गयी २. ख़ौफ (भय) से बड़े-बड़े वीर काँप रहे थे ३. तेज ४. वीरों में नाम हो ५. सक़्क़ा ६. बदनसीब, अभागा ७. घोड़ा उड़कर दुश्मन की सफ़ों पर जा पड़ा ८. काला घोड़ा ९. घोड़ा १०. अर्थात् तलवार टेढ़ी थी, मगर क़ब्ज़े पर हाथ सीधा जमा हुआ था ११. पेड़ १२. फल १३. खलबली १४. बहादुर की शान और धाक १५. लड़ाई १६. प्रतिद्वन्द्वी, मुक़ाबला करने वाला

घोड़ा उड़ाके जाते थे यूँ हर सवार पर
जंगल में बाज़ गिरता है जैसे शिकार पर।

वो तेग़ की तड़प वो तग-ो-दौ[1] समन्द की
वहशत हरन की, तेज़[2] परी थी परन्द की
तरकीब कुछ जुदा थी हरएक जोड़ बन्द की
पिन्हा हुआ सवार जो गर्दन बुलन्द की

परियों की जान जाती थी याल[3] उसकी देखकर
ताऊस[4] सर झुकाते थे चाल उसकी देखकर।

चुमकारकर ये कहते थे अब्बासे-नेकख़ू
हक़्क़े[5]-वफ़ा जो है वो अदा कर चुका है तू
पामाल[6] फ़ौज हो चुकी अब चल किनारे[7]-जू
बस अब फ़क़त है मश्क के भरने की आरज़ू

मातम बपा है घर में शहे-मशरक़ैन[8] के
पानी बग़ैर मरते हैं बच्चे हुसैन के।

फ़रमाके ये तराई[9] में मानिन्दे-शेर आये
चिल्लाये सब वो घाट पर जो थे परे जमाये
हाँ सफ़्दरो[10]! इधर ये बहिश्ती न आने पाये
काँधे पे रख के तेग़ को अब्बास मुस्कुराये

फ़रमाया रोकना हमें क्या बे-शऊर[11] हो
प्यारी अगर है जान तो दरिया से दूर हो।

काँधे पे तेग़ रखके पुकारा वो रश्के[12]-माह
क्यों और भी है कोई जो रोके हमारी राह
दब दब के घाट छोड़ गयी शाम की सिपाह
पहुँचा कछार में पिसरे[13] - ज़ैग़मे - इलाह

की आह ख़ेमए-शहे वाला को देखकर
आँसू भर आये आँखों में दरिया को देखकर।

वो मश्क दोश[14] पर वो लचकता हुआ अलम
एक बर्क़[15]-नूर गिरती थी मौजों पे दम-बदम

---

१. भाग-दौड़ २. परिन्दों की तरह उड़ता था ३, घोड़े की गर्दन के बाल ४. मोर ५. वफ़ादारी का हक़ ६. फ़ौज रौंदी जा चुकी ७, नदी के किनारे ८. इमाम हुसैन की उपाधि ९. नदी में शेर की तरह १०. वीरों ११. बेअक़्ल, मूर्ख १२. चाँद को जिस पर रश्क हो १३, ख़ुदा के शेर अर्थात् अली का बेटा १४. कन्धे पर १५. नूर की बिजली

ग़ुल था कि आज कौसर[1]-ो-तौबा हुए बहम
वो अक्स[2] रूए-पाक का वो शौकत-ो-हशम
टपका अरक़[3] जबीं से तो पानी गुलाब था
बाहर था आप थे, तहे[4]-आब आफ़ताब था।

निकला जो मश्क भरके वो बच्चों का ख़ैरख़्वाह
आयी नज़र घटा की तरह शाम की सिपाह
हाथों पे मश्क रख के दुआ की कि या इलाह
ज़ख़्मी हूँ मैं, पे ये मेरी मेहनत न हो तबाह
तन का लहू बहे तो बहे आब बह न जाये
सक़्क़ा बना हूँ जिसका वो महरूम रह न जाये।

आयी निदाए[5]ग़ैब कि ऐ हामिए-रसूल
कौसर[6] पे होगा तेरी दुआ का समर हुसूल[7]
बच्चों का आज और तड़पना करो क़बूल
अर्सा न कुछ है अज्र[8] में नै कुछ जज़ा[9] में तूल
सैराव[10] होंगे सब जो अली के ग़ुलाम हैं
कल तू है और चश्मए[11]-कौसर के जाम हैं।

ऐ वाज़ुए-हुसैन-ो-अबुल[12] फ़ज्ले-बा वफ़ा
सक़्क़ाए-अहले-बैते-नबी है लक़ब तेरा
कौसर किया है हमने तेरे बाप को अता[13]
ये मश्क क्या, फ़रात[14] का पानी है गर तो क्या
ज़ाये हो आब अगर तो एवज़[15] हमसे लीजियो
मश्कों में भर के ख़ुल्द[16] में प्यासों को दीजियो।

दरिया से निकले अश्क बहाते हुए जनाब
क़तअन यक़ीं हुआ कि बचेगी न मश्के-आब[17]
तलवार तोल कर ये किया फ़ौज से ख़िताब[18]
मुमकिन नहीं कि तुमसे रुके इब्ने-बू-तराब[19]
सीने पे ख़ंजर-ो-तबर-ो-तीर खायेंगे
जिस तरह आये हैं, यूँ ही दरिया से जायेंगे।

---

१. जन्नत (स्वर्ग) की नहर तथा वृक्ष २. चेहरे का प्रतिबिम्ब और तेज ३. माथे का पसीना ४. पानी के नीचे ५. ख़ुदा की तरफ़ से आवाज़ ६. जन्नत की नहर ७. दुआ क़बूल होगी ८-९. बदला और सिला नेकी का १०. प्यास बुझेगी ११. जन्नत का चश्मा १२. हज़रत अब्बास की उपाधि १३. प्रदान किया, दिया गया १४. करबला की नहर का नाम १५. बदला १६. जन्नत, स्वर्ग १७. पानी की मश्क १८. कहा १९. अली का बेटा

मक़्तल पे अपने लाखों से लड़ते हुए जो आये
नेज़े कहीं लगे कहीं छाती पे तीर खाये
शानों से हाथ कट गये ग़ाजी के हाय हाय
पानी बहा तो देख के गर्दूं[1] को मुस्कुराये
जो इस वग़ा[2] में भाग गये थे वो फिर पड़े
झुकने लगा निशाँ[3] तो अलमदार गिर पड़े।

एक गुल हुआ कि शेर को मारा कछार में
वो टूटता है अर्श का तारा कछार में
अब कौन होगा मारका[4]-आरा कछार में
बेजाँ हुआ हुसैन का प्यारा कछार में
हम जिनके डर से काँपते थे वो गुज़र गये
ली जो ख़बर हुसैन हैं ज़िन्दा कि मर गये।

हज़रत से दौड़ कर अली अक्बर ने ये कहा
ताक़त हमारी घट गयी मारे गये चचा
सुनते ही काँपने लगे हज़रत के दस्त-ो-पा[5]
ख़ेमे का दर पकड़ के कहा वा मुसीबता
बतलाओ लाश लेने चलें या बुका[6] करें
हम पर पहाड़ टूट पड़ा हाय क्या करें।

गिरते हुए जो भाई के लाशे पे आये शाह
देखा कि नज़्आ[7] में हैं अमलदारे[8]-अर्श-जाह
मुँह क़िब्ला-[9]-रू है मश्क-ो-अलम की तरफ़ निगाह[10]
लब पर यही सुख़न[11] है कि हज़रत न आये आह
प्यासों का या मुफ़ारक़ते[12] शह का ग़म करूँ
या रब[13] किसे सुपुर्द ये मश्क-ो-अलम करूँ।

फैला के दोनों हाथ पुकारे शहे[14]-ज़माँ
आया ग़रीब[15]-ो-बेकस-ो-मज़लूम-ो-नातवाँ
तड़पे सदा ये सुनके अलमदारे-नौजवाँ
गोया निकल के आयी दुबारा बदन में जाँ
दिल ढूँढ़ता था बस कि शहे-मशरक़ैन[16] को
हसरत से आँखें खोल के देखा हुसैन को।

१. आसमान २. लड़ाई ३. झण्डा ४. लड़ेगा ५. हाथ-पैर ६. रोना ७. मौत का वक़्त ८. अब्बास ९. मक्के की तरफ़ जहाँ मुसलमानों का हज होता है १०. नज़र ११. बात १२. जुदाई १३. ख़ुदा १४-१५-१६. इमाम हुसैन

गोदी में सर को रख के पुकारे इमामे[1]-दीं
ऐ इब्ने-मुर्तुज़ा मुझे पहचाना या नहीं
क़दमों पे मुँह को रख के पुकारा वो मह[2]-जबीं
ऐ जाने - फ़ातमा[3] जिगरे - ख़त्मे[4]-मुरसलीं
आँखों में गो है दम, पे हूँ आरिफ़[5] इमाम का
आग़ोश[6] में हुज़ूर के सर है ग़ुलाम का।

सब हसरतें बर आयीं मेरी या शहे-अनाम
दो दाग़ ख़ल्क़[7] से लिये जाता है ये ग़ुलाम
एक ये कि छोड़ता हूँ सकीना को तश्ना - काम[8]
ग़म दूसरा ये है कि अकेले हैं अब इमाम
बेटे का इफ़्तख़ार[9] जो सदक़े हो बाप पर
अक्बर के बाद कौन फ़िदा होगा आप पर।

यह कह के अश्क आँखों से अब्बास ने बहाये
हिचकी कभी कराह की ली गाह[10] मुस्कुराये
करवट बदल के मुँह क़दमे - शाह तक जो लाये
चिल्लाये शाह, छोड़ चले हम को हाय हाय
पुतली फिरी हुई सुए शब्बीर रह गयी
आँखों से दम निकल गया तस्वीर रह गयी।

आग़ोश में जो भाई के भाई गुज़र गया
खंजर अलम का दिल से जिगर तक उतर गया
चिल्लाते थे कि शेर हमारा किधर गया
जीने का जिस के दम से मज़ा था वो मर गया
ये चाँद सोये क़ब्र में क़िस्मत ज़मीन की
हय हय ! कमाई लुट गयी उम्मुल[11]-बनीन की।

ऐ मेरी ज़िन्दगी के सहारे तेरे निसार
बहनों की जान, भाई के प्यारे तेरे निसार
ऐ तीन दिन की प्यास के मारे तेरे निसार
ऐ बचपने के दोस्त हमारे तेरे निसार
सीने में दम की आमद-ो[12] - शुद का असर नहीं
कैसी ये नींद है कि हमारी ख़बर नहीं।

१. इमाम हुसैन २. अब्बास ३. इमाम हुसैन की माँ का नाम ४. आख़िरी रसूल अर्थात् हज़रत मुहम्मद ५. पहचानने वाला ६, गोद ७. संसार, दुनिया ८. प्यासा ९. गर्व, गौरव १०. कभी ११. अब्बास की माँ की उपाधि १२. साँस का आना-जाना

हम रोते पीटते हैं तुम्हें कुछ नहीं ख़्याल
अब्बास आँखें खोल के देखो हमारा हाल
तुम क्या सिधारे, मर गया ख़ैरुन्निसा[1] का लाल
अब तश्ना लब सकीना की है ज़िन्दगी महाल[2]
पानी का माजरा[3] न कहूँ उस से या कहूँ
इतना बताओ तुम कि सकीना से क्या कहूँ।

देखा जो बाप का अली अक्बर ने ग़ैर[4] हाल
की अर्ज़ चलिये ख़ेमे में अब बह्‌रे-ज़ुल[5]-जलाल
लाशे पे जब से आये हैं मौलाए[6] - ख़ुश- ख़िसाल
दर पर खड़े हैं अह्‌ले - हरम खोले सर के बाल
छुरियाँ ग़म-ो-अलम की कलेजे पे चलती हैं
एक शोर है कि ख़ेमे से ज़ैनब निकलती हैं।

ज़िद करती है सकीना कि दरिया पे जाऊँगी
मैं आप हाथ थाम के अम्मू को लाऊँगी
पानी न हो, मैं अपने चचा को तो पाऊँगी
कुछ उन पे बन गयी तो किसे मुँह दिखाऊँगी
क़ायम[7] रखे करीम, अली की निशानी को
वो घर में आयें, आग लगे ऐसे पानी को।

फ़रमाया लाश ले चलो ख़ेमे में ऐ पिसर
की अर्ज़ चूर-चूर हैं अब्बासे नामवर
बाज़ू जुदा हैं, गुर्ज़ से है पारा[8]-पारा सर
कहने लगे हुसैन गिरीबाँ को फाड़ कर
चादर में रख के ले चलो लाशे को इस तरह
घर में अली को लाये थे मस्जिद से जिस तरह।

की अर्ज़[9] जो रज़ाए - शह - शाहे - बहर-ो-बर
लेकिन है तीन जानों के जाने का इसमें डर
एक तश्ना[10]-लब सकीनए - नाशाद-ो-नौहागर
दो छोटे-छोटे हज़रते - अब्बास के पिसर
हम[11] जाँ-ब-लब हैं शेर को पामाल देखकर
बच्चे जियेंगे ? लाश का ये हाल देखकर।

१. इमाम हुसैन की माँ का लक़ब (उपाधि) २. मुश्किल, कठिन ३. हाल ४. बुरा हाल है ५. ख़ुदा के वास्ते ६. इमाम हुसैन ७. ख़ुदा अब्बास को हमेशा ज़िन्दा रखे ८. टुकड़े-टुकड़े ९. कहा, वैसे जो आपका हुक्म हो १०. प्यासी-दुखी सकीना ११। जब शेर-से जवान को देखकर हमारी जान होंठों पर है

आयी सदा[१] अली की ये पहलू से एक बार
ऐ इब्ने[२] - फ़ात्मा तेरी ग़ुर्बत के मैं निसार
सच है कि सर[३] - बसर तने - अब्बास है फ़िगार
आफ़त की बर्छियाँ हैं कलेजे के आर - पार
होगी तकाने[४] - राह से ईज़ा दिलैर को
सोने दो ऐ हुसैन तराई में शेर को।

मश्क-ो - अलम उठा के चले अक्बरे - हज़ीं[५]
बेटे के पीछे चाक[६] - गिरीबाँ थे शाहे - दीं
हज़रत के पीछे अस्पे[७] - अलमदारे - मह - जबीं
बागें कटी थीं, ख़ून में डूबा हुआ था ज़ीं
हैवान के भी क़त्ल के दरपै[८] शरीर थे
सीना था चूर तेग़ों से पट्ठों पे तीर थे।

मक़्तल[९] से रोते - पीटते घर में हुसैन आये
बैठी हुई थीं बीबियाँ मातम की सफ़ बिछाये
ख़ूँ में भरा हुआ अली अक्बर-अलम जो लाये
एक ग़ुल हुआ कि मर गये अब्बास हाय हाय
सर खोलने को ज़ौजए - अब्बास हट गयीं
मुँह पीट कर, अलम से सकीना लिपट गयीं।

सब मिल के सफ़ पे राँड़ को ले आयीं बीबियाँ
पुरसे का शोर होने लगा दर्द के बयाँ
चिल्लाती थी ये ज़ौजए - अब्बासे - नौजवाँ
साहिब, अलम को छोड़ के तुम चल बसे कहाँ
गर्मी जो थी, हवा तुम्हें भायी फ़रात की
अब तुम हो और सर्द तराई फ़रात की।

साहिब[१०] तो जान देके हर एक ग़म से छुट गये
सद्मों से मुतमइन हुए मातम से छुट गये
माँ से छुटे, इमामे[११] - दो - आलम से छुट गये
हम तुम से आज छुट गये तुम हम से छुट गये
हुर्मत[१२] अब इस कनीज़ की साहिब के हाथ है
क्योंकर निबाह होगा कि बच्चों का साथ है।

१. आवाज़ २. फ़ात्मा के बेटे ३. अब्बास का सारा जिस्म टुकड़े है ४. रास्ते की थकान से बहादुर को तकलीफ़ हो गयी ५. ग़मज़दा, दुखी, शोकग्रस्त ६. हुसैन, जिनका गिरीबान फटा हुआ था ७. अब्बास का घोड़ा ८. जानवर को भी दुश्मन क़त्ल करना चाहते थे ९. क़त्ल का मैदान १०. पति के लिए सम्बोधन ११. इमाम हुसैन १२. इज़्ज़त

ये बैन करके रोयी जो वो ताज़ा सोगवार[1]
मातम से बीबियों में हुआ हश्र[2] आश्कार
ख़ामोश अब 'अनीस' के दिल को नहीं क़रार[3]
बेख़ुद[4] हैं बज़्मे - ग़म में, शहे - दीं के दोस्त दार
हामी हर एक अलम[5] में इमामे[6] - जलील हैं
मद्दाह[7] जिन का तू है वो तेरे कफ़ील[8] हैं।

१. शोकग्रस्त २. क़यामत हो गयी ३. ठहरना ४. इस शोक-सभा में हुसैन के सब दोस्त बेहवास हैं ३. ग़म, शोक ६. इमाम हुसैन ७. प्रशंसक ८. मददगार, सहायक

मर्सिया : ७

"जब ग़ाज़ियाने-फ़ौजे-ख़ुदा नाम कर गये"

अली अकबर की शहादत

जब ग़ाज़ियाने[1] - फ़ौजे - ख़ुदा नाम कर गये
लाखों से तिश्ना[2] - काम लड़े काम कर गये
उम्मत की मग़फ़िरत[3] का सर-अंजाम कर गये
फ़ैज़[4] अपना मिस्ले - अब्रो - करम, आम कर गये
पढ़ते हैं सब दरूद, जो ज़िक्र उनके होते हैं
ऐसे बशर वो थे कि मलक[5] उनको रोते हैं।

तासीर[6] कर गयी थी उन्हें सोहबते[7] - इमाम
था नज़आँ[8] में भी ख़ुश्क[9] लबों पर ख़ुदा का नाम
लब्रेज़[10] थे मौहब्बते - हैदर से दिल के जाम[11]
ज़ी - क़द्र, ज़ी - शऊर, दिलावर, ख़िजस्ता - काम
लशकर जो उन पे टूट पड़े शाम - ो - रूम के
तलवारें खायीं सीनों पे क्या झूम-झूम के।

लाखों में इन्तखाब[12] हज़ारों में लाजवाब
था ख़ुश्क[13]-ो-तर पे जिनका करम सूरते[14]-सहाब
वो नूर वो जलाल वो सूरत वो आब-ो-ताब
ज़ोहरा के घर के चाँद ज़माने के आफ़ताब
बस[15] यक-बयक जहाँ में अन्धेरा सा छा गया
दिन भी ढला न था कि ज़वाल[16] उनपे आ गया।

गुल हो गये अक़ील[17] की तुर्बत के जब चराग़
जाफ़र[18] के लाडलों ने दिये शह के दिल को दाग़
मातम से भान्जों के हुआ था न इन्फ़राग़[19]
पामाल हो गया हसने[20] - मुजतवा का बाग़
लाशे उठाये, जंग करे या बुका[21] करे
जिस पर गिरें ये कोहे-मुसीबत[22], वो क्या करे।

१. ख़ुदा की फ़ौज के बहादुर सिपाही २. प्यासे ३. निजात, मोक्ष ४. रहमत की बारिश की तरह सब पर आपने कृपा की ५. फ़रिश्ते ६. असर, प्रभाव ७. हुसैन का साथ, हुसैन की संगति ८. मौत का समय ९. सूखे होंठों पर १०. भरे हुए थे ११. प्याला १२. चुने हुए १३. ज़मीन और पानी, जल और थल १४. बादल की तरह १५. एकदम १६. सूरज डूब गया, पानी ख़त्म हो गया १७. इमाम हुसैन के चचा, हज़रत अक़ील के बेटे जब ख़त्म हो गये १८. इमाम हुसैन के चचा जाफ़र १९. फ़राग़त, फ़ारिग़ होना, फ़ुर्सत होना २०. इमाम हसन के बेटे, क़ासिम २१. रोना २२. मुसीबत का पहाड़

सदमा ये था कि लुटने लगी दौलते - पिदर
निकले नबर्द[1] को असादुल्लाह[2] के पिसर
मारे गये जिहाद में जिस दम वो शेरे - नर
रुख़्सत हुए हुसैन से अब्बासे - नामबर
दरिया बहे लहू के बड़ा कुश्त-ो-ख़ूं[3] हुआ
ढलती थी दोपहर कि अलम सर[4] निगूं हुआ।

ग़ुल था कि ख़ूं में भर गया सक़्क़ाए-अहले[5]-बैत
दुनिया से कूच कर गया सक़्क़ाए - अहले - बैत
हम लुट गये गुज़र गया सक़्क़ाए - अहले - बैत
फ़रयाद है कि मर गया सक़्क़ाए - अहले - बैत
हय हय कहाँ से अपने बहिश्ती को लायेंगे
सूखी ज़ुबान अब किसे बच्चे दिखायेंगे।

हिलता था ख़ेमा रोते थे यूं अहले - बैते - शाह
सदमे से हाले ज़ौजए[6] - अब्बास था तबाह
चिल्लाती थी कि नह्र की मुझको बताओ राह[7]
हय हय मैं लुट गयी मेरे बच्चे हुए तबाह
ख़म[8] थे गिरा था कोहे-मुसीबत हुसैन पर
मातम था बीबियों में सकीना के बैन पर।

मातम इधर था जश्न[9] में थे अहले-शर[10] उधर
बजते थे शादयानए-फ़तह[11] - ो - ज़फ़र उधर
इनआम बाँटता था हर एक को अमर[12] उधर
रोते थे देख-देख के हज़रत[13] इधर उधर
ग़ुल था कि बस हुसैन ! बहुत रोये भाई को
कोई जवाँ हो और, तो भेजो लड़ाई को।

साबिर बड़े हैं आप तो या शाहे[14] - इन्स-ो-जाँ
एक भाई के फ़िराक़[15] में ये नाला - ओ[16]-फ़ुग़ाँ
रोने से जी उठेंगे न अब्बासे - नौजवाँ
हज़रत पुकारते हैं किसे, भाई अब कहाँ

---

१. लड़ाई २. अली के बेटे अर्थात् इमाम हुसैन के भाई ३. बहुत ख़ून-ख़राबा हुआ ४. झण्डा गिर गया ५. हुसैन का घराना ६. अब्बास की पत्नी ७. रास्ता ८. झुक गये थे ९. ख़ुशी की धूमधाम १०. शरारती लोग, दुश्मन ११. जीत की शहनाइयाँ बज रही थीं १२. अमर साद, मजीद की सेना का सेनानायक १३-१४. इमाम हुसैन १५. जुदाई, वियोग १६. रोना-पीटना

मिलता है कब जहाँ में भला जो गुज़र गया
अब अपनी फ़िक्र[1] कीजिये, वो शेर मर गया।

अकबर ने की ग़ज़ब[2] की नज़र सूए-फ़ौजे-शाम
काँपे ये ग़ैज़[3] से कि उगलने लगी हुसाम
की अर्ज़ हाथ जोड़ के, ऐ क़िब्लए[4] - अनाम
सुनते हैं आप लश्करे[5] - आदा के ये कलाम
ख़ूँ तन में जोश खाता है हंगामे[6] - जंग है
मौला[7] ! बस अब तो हौसलए[8]-सब्र तंग है।

अम्मू[9] को क़त्ल करके बहुत हो गये हैं शेर
इन ज़ालिमों के ज़ोम में अब है नहीं दिलेर[10]
मालूम होगा लाशों के जब रन में होंगे ढेर
देखें तो कौन अब है ज़बर्दस्त[11] कौन ज़ेर
मजमा है उस तरफ़ हमें तन्हा समझते हैं
अच्छा यूँही सही हम उन्हें क्या समझते हैं।

हमको ये तान-ो-तंज़ की बातें नहीं पसन्द
कूफ़े में लेंगे दुम जो उठायेंगे फिर समन्द[12]
होंठों पे ग़म से अब है यहाँ जाने - दर्दमन्द
काटें तबर[13] में तेग़ से ख़ंजर से बन्द-बन्द
हँस-हँस के जिस्म पर तबर-ो-तीर खायेंगे
तेग़े[14]-ज़ुबाँ के ज़ख़्म उठाये न जायेंगे।

घबरा के देखने लगे बेटे के मुँह को शाह
फ़रमाया ख़ैर, कह लें जो कहते हैं रू-स्याह[15]
क्यूँ काँपते हो ग़ैज़ से ऐ मेरे रश्के - माह
लाज़िम है सब्र-ो-शुक्र कि राज़ी[16] रहे इलाह
ग़ुस्सा इसी तरह अगर आयेगा आप को
ख़ंजर के नीचे देखोगे किस तरह बाप को।

ये सुन के ज़र्द हो गये हम शक्ले - मुस्तफ़ा[17]
रो कर कहा, ये करते हैं इरशाद[18] आप क्या

---

१. चिन्ता २. अकबर ने बहुत क्रोध से दुश्मन की सेना की ओर देखा ३. क्रोध में ऐसे काँपे कि कमर से तलवार बाहर निकलने लगी ४. आदरपूर्ण सम्बोधन, क़िब्ला ५. दुश्मन की फ़ौज की बातें ६. लड़ाई का वक़्त है ७. मालिक, स्वामी ८. अब सब्र नहीं हो सकता, सहन नहीं हो सकता ९. चचा अर्थात् अब्बास १०. वीर ११. कौन विजयी होगा, कौन हारेगा १२. घोड़ा १३. तीर, तलवार, ख़ंजर १४. ज़ुबान का घाव १५. काले मुँह वाले अर्थात् पापी, बदकार १६. जिसमें ख़ुदा ख़ुश हो १७. अली अकबर १८. यह क्या कहते हैं

वो वक़्त वो घड़ी न दिखाये हमें ख़ुदा
बाबा न हो तो बेटे के जीने का क्या मज़ा
आमादए[१]-फ़ना हैं ख़ुशी दिल[२] से फ़ौत है
फिर ख़िज़्र[३] की हयात मिली गर तो मौत है।

क्या पहले सर कटाइयेगा या शहे[४]-ज़माँ
किस इश्तियाक़ से शहे[५] - दीं ने कहा कि हाँ
आगे जो कुछ रज़ाए-ख़ुदा, ऐ पिदर की जाँ
जीते हैं पीर[६], सामने मरते हैं नौजवाँ
देखो कि छोटे भाई के मातम में रोते हैं
पाला था जिनको हमने वो दरिया पे सोते हैं।

ये कह के उठ खड़े हुए सुलताने[७]-बहर-ो-बर
पटके से बाँधने लगे टूटी हुई कमर
क़दमों[८] पे गिर पड़े अली अकबर ब-चश्मे-तर
की अर्ज़ रहम कीजिये मर जायेगा पिसर[९]
आगे मेरे जो होगी शहादत इमाम की
दुनिया में आबरू[१०] न रहेगी गुलाम की।

इन्साफ़ आप कीजिये, या सरवरे[११] - अरब
बेटा तो घर में बैठे, लड़े बाप तश्ना-लब[१२]
मारा गया न आज तो कल ये कहेंगे सब
कैसा लहू सुफ़ैद है दुनिया का हय ग़ज़ब
सर को कटा के बाप जहाँ से गुज़र गया
बेटा जवान बाप के आगे न मर गया।

शह ने कहा, तुम्हें मेरे दिल की नहीं ख़बर
प्यारे कहाँ से लाऊँ मैं इस तरह का जिगर
है बाप का असाए[१३] - ज़ईफ़ी जवाँ पिसर
जब तुम न होगे पास तो मर जायेगा पिदर
ऐसे हँसे न थे कि हमें तुम रुलाते हो
शादी[१४] के दिन जो आये तो मरने को जाते हो।

---

१. मरने पर तैयार है २. ख़ुशी ख़त्म हो चुकी है ३. ख़िज़्र, एक पयम्बर जिनके लिए कहा जाता है कि वह अमर हैं ४-५. इमाम हुसैन ६. बूढ़े ७. इमाम हुसैन ८. पैरों पर ९. बेटा १०. इज्जत, प्रतिष्ठा ११. इमाम हुसैन १२. प्यासा १३. जवान बेटा बाप के बुढ़ापे की लकड़ी होता है १४. ख़ुशी, ब्याह

देता अगर तुम्हें कोई फ़र्ज़न्द[1], ज़ुलजलाल[2]
होती पिदर की क़द्र समझते हमारा हाल
रुख़्सत का आप से यूँही करता वो जब सवाल
तब जानते कि देते उसे रुख़्सते[3] - जदाल
क्या जाने वो मजा जिसे इसका मिला नहीं
अच्छा सिधारो तुम से हमें कुछ गिला[4] नहीं।

हैं मुबतलाए-रंज, भला क्या हमारा प्यार
तुम से जो सौ पिसर हों तो इस[5] राह में निसार
हरदम ख़ुदा से ख़ैर[6] का हूँ मैं उम्मीदवार
हाँ माँ न जाने दे तो मेरा क्या है इख़्तियार
सीने में दिल हिलेगा बदन थरथरायेगा
रुख़्सत का नाम सुनते ही ग़श उसको आयेगा।

सब जानते हैं जो है फुफी को तुम्हारी चाह
मालूम होगा जाओगे जब सूए-ख़ेमा[7] - गाह
बाहें गले में डालेगी ज़ैनब ब-अश्क-ो - आह
क़दमों पे गिरके आपकी माँ होगी सद्दे-राह[8]
ये मरहला[9] भी कम नहीं ज़ंजीर-ो[10]-तौक़ से
दोनों रज़ा[11] जो दें तो चले जाओ शौक़ से।

रोते हुए चले अली अकबर सूए - ख़्याम[12]
काँपा ये दिल कि बैठ गये ख़ाक पर इमाम
रोता हुआ जो ड्योढ़ी से आया वह नेक नाम
दौड़ी पिसर को देख के बानोए - तश्ना - काम
दामन से आके बाली सकीना चिमट गयी
ज़ैनब बलाएँ लेके गले से लिपट गयी।

माँ गिर्द फिर के बोली कि ऐ मेरे गुल-अज़ार[13]
तुम सुबह से गये थे अब आये ये माँ निसार
दर पर तड़प-तड़प के मैं जाती थी बार-बार
ख़ोलो बस अब कमर, कि मेरा दिल है बेक़रार
गर्मी ये और क़ह्त[14] कई दिन से आब का
रुख़[15] तमंतमा गया है मेरे आफ़ताब का।

---

१. बेटा २. ख़ुदा ३. युद्ध करने की आज्ञा ४. शिकायत ५. अर्थात् ख़ुदा के रास्ते में न्योछावर हैं ६. मैं तो हर समय ख़ुदा से नेक काम की उम्मीद रखता हूँ ७. जहाँ बहुत-से डेरे हैं ८. रास्ता रोकेगी ९. मंजिल १०. बेड़ियों से ११. अनमति १२. ख़ेमे (डेरे) की तरफ़ १३. सुन्दर बेटे १४. अकाल, पानी का न होना १५. चेहरा

सुग़रा की तो वतन से कुछ ग्रायी नहीं ख़बर
जल्दी कहो, कि मुँह से निकलता है ग्रब जिगर
ग्रकबर ने ग्रर्ज़ की कि हैं सब ख़ैर से मगर
लुटता है कोई ग्रान में ख़ैरुन्निसा[1] का घर
मिलती नहीं रज़ा[2] हमें, ग्राँसू बहाते हैं
बाबा गला कटाने को मैदाँ में जाते हैं।

देते नहीं रज़ा जो इमामे-फ़लक ग्रसास[3]
ख़ातिर[4] फ़कत ये ग्रापकी है ग्रौर फुफी का पास
ग्रब ग़ैरे-यास[5] कोई नहीं उनके ग्रास-पास
नाताक़ती[6] है ज़ोफ़ है फ़ाक़ा है ग्रौर प्यास
क्योंकर लड़ेंगे वो कि सरापा[7] ज़ईफ़ हैं
पीरी[8] है दिल ज़ईफ़ है ग्राज़ा ज़ईफ़ हैं।

बाबा का हुक्म है कि रज़ा जाके माँ से लाग्रो
राज़ी फुफी हों जब, तो लड़ो ग्रौर ज़ख़्म खाग्रो
मर्ज़ी है ग्रापकी कि मेरे पास से न जाग्रो
या फ़ातमा ! तुम्हीं ग्रली ग्रकबर के काम ग्राग्रो
चलने लगें न तीर शहे-मशरक़ैन[9] पर
नर्ग़ा[10] है ज़ालिमों का तुम्हारे हुसैन पर।

देखी गयी न माँ से ये बेताबिए[11]-पिसर
वारिस[12] की बेकसी पे लगा काँपने जिगर
हाथों से दिल को थामके बोली वो नौहागर
दौलत पे फ़ातमा की तसुद्दक़[13] तमाम घर
पहले न कुछ कहा था न ग्रब रोकती हूँ मैं
रोते हो किस लिए तुम्हें कब रोकती हूँ मैं।

मुझ पर हवाला[14] करते हैं गर शाहे-ख़ुश-ख़िसाल
रुख़सत न तुम को दूँ ये भला है मेरी मजाल
सदक़ा उन्हीं का है कि मिला तुम सा नौनिहाल[15]
रुख़सत का, सदक़े जाऊँ, फुफी से करो सवाल

---

१. फ़ातमा ज़ोहरा २. ग्राज्ञा ३. इमाम हुसैन ४. ख़याल ५. सिवा निराशा के ग्रब कोई भी उनके पास नहीं ६. कमज़ोरी है ७. सिर से पैर तक कमज़ोर हैं ८. बुढ़ापा है ग्रौर दिल ग्रौर शरीर सब निर्बल हैं ९. इमाम हुसैन १०. घेरा है ११. बेटे की चिन्ता, बेक़रारी १२. पति १३. न्योछावर १४. यदि मुझ पर हुसैन ने इसका फ़ैसला छोड़ा है १५. होनहार बेटा

हम सब कनीज़ें बिन्ते अमीरे[1]-अरब की हैं
असग़र हो या कि तुम, वो ही मुख़्तार[2] सब की हैं।

कहने को यूँ हैं चाहने वाले तुम्हारे सब
लेकिन है उनके रश्क़[3] से निस्बत किसी को कब
दिन को उन्होंने दिन कभी जाना न शब[4] को शब
लीजे उन्हीं से आपको जिस[5] शै की है तलब

मुझसे न कुछ न सय्यदे-आली[6] से पूछिये
गर पूछिये तो पालने वाली से पूछिये।

रोते हुए गये अली अकबर फुफी के पास
देखा कि ग़श पड़ी है ज़मीं पर वो हक़-शनास[7]
ज़ानो[8] पे सर लिये हुए कुबरा है बे-हवास
इस हाल में भी लब[9] पे यही है कलामे-यास

अब ताब[10]-ओ-ताक़ते-ज सद-ओ-रूह-ओ-दिल गयी
क्यों साहिबो! रज़ा अली अकबर को मिल गयी।

या बे हमारे चैन न आता था कोई दम
मालिक अब और हो गये कोई हुए न हम
क्या दख़्ल था जो ड्योढ़ी के बाहर रखें क़दम
हय हय वो मेरा दर्द-ओ-मुसीबत वो रंज-ओ-ग़म

जागी हूँ मैं, जो चौंक के रातों को रोये हैं
पूछो तो किसकी छाती पे बचपन में सोये हैं।

कंघी किसी के हाथ की भाती न थी कभी
बे मेरे लेटे नींद उन्हें आती न थी कभी
बे उनके, माँ की क़ब्र पे जाती न थी कभी
रोयें पिसर, पे उनको रुलाती न थी कभी

मेरे सिवा किसी को कभी जानते न थे
जो थी सो मैं थी माँ को तो पहचानते न थे।

मैंने उन्हीं पे सदक़े किये अपने दोनों लाल
तस्कीन थी कि बाक़ी है अकबर सा नौनिहाल

---

१. अली की बेटी अर्थात् ज़ैनब २. ज़ैनब ही तुम सब की मालिक हैं ३. उनकी मुहब्बत से किसीकी मुहब्बत का क्या मुक़ाबला ४. दिन को दिन न समझा, न रात को रात अर्थात् दिन-रात सेवा की ५. जो माँगना है उनसे माँगो ६. इमाम हुसैन ७. ख़ुदा को पहचानने वाली ८. गोद में ९. होंठों पर यही निराश बातें हैं १०. अब मेरे शरीर और आत्मा की सारी शक्ति ख़त्म हो चुकी

माँगे तो आके मुझ से भला रुख़सते[1] - जदाल
निकलूँगी साथ ख़ेमे से बिखराके सर के बाल
क्या ख़ूब ! जीते-जी मेरे जायेंगे मरने को
तलवार बाँध ली है हमें ज़ब्ह करने को।

बाहर सिधारे या अभी हैं माँ से कुछ कलाम
भाभी ने क्यूँ लिया था अभी रोके मेरा नाम
सीने पे मुँह को रख के ये बोला वो लाला[2]-फ़ाम
आँखें तो आप खोलिये हाज़िर है ये ग़ुलाम
ख़ादिम जुदा न था शहे-गर्दू[3] सरीर से
किस जुर्म[4] पर हुज़ूर ख़फ़ा हैं हक़ीर से।

पैदा हुआ तो आप की सोहबत[5] मुझे मिली
करती है रूह शुक्र, वो राहत मुझे मिली
यूसुफ़[6] को कब मिली थी जो दौलत मुझे मिली
रक्खा अज़ीज़ आपने इज़्ज़त मुझे मिली
सदक़ा[7] है उस क़दम का जो सर-ता-फ़लक गया
की मेहर[8] आफ़ताब ने ज़र्रा चमक गया।

मरज़ी न हो तो रन[9] को भी जाये न ये ग़ुलाम
बन्दे हैं हम इताअ़ते[10]-मालिक से हम को काम
तकरार[11] की मजाल न इसरार का मुक़ाम
मरते अगर तो उसमें भी था आप ही का नाम
रोती हैं आप किस लिए अच्छा न जायेंगे
पर याद रखिये मुँह न किसी को दिखायेंगे।

ये कह के झुक गया जो क़दम पर वो ज़ी-वक़ार[12]
बस हो गयी मोहब्बते[13]-क़ल्बी से बे-क़रार
फैलाके दोनों हाथों को उट्ठीं ब - हाले[14]-ज़ार
शिक्वे[15] के बदले मुँह से ये निकला कि मैं निसार
उमड़ा ये दिल कि चश्म[16] के साग़र छलक पड़े
देखा जो आफ़ताब को आँसू टपक पड़े।

---

१. युद्ध करने की आज्ञा २. अर्थात् अली अकबर ३. इमाम हुसैन ४. आप मुझसे किस बात पर नाराज़ हैं ५. आपके साथ रहा, आपकी तर्बियत मिली ६. एक पयम्बर जो बहुत सुन्दर थे और मिस्र देश में बहुत बड़े ओहदे पर थे ७. आप ही के पैरों का सदक़ा है कि मेरा सिर गर्व से आकाश तक ऊँचा है ८. आप तो सूरज की तरह हैं, जिनकी कृपा ने मुझ ज़र्रे को चमका दिया ९. युद्ध-स्थल १०. आज्ञा-पालन ११. ज़िद १२. इज्ज़त वाला १३. दिली मुहब्बत, हार्दिक प्रेम १४. बुरी हालत में १५. शिकायत १६. आँखों के प्याले छलक पड़े

लेकर बलाएँ बोलीं कि वारी, ख़फ़ा न हो
सदक़े है तुम पे जान हमारी ख़फ़ा न हो
बातें थीं ये तो प्यार की सारी, ख़फ़ा न हो
रोते हो क्यों मँगाश्रो सवारी ख़फ़ा न हो
आये बला हुसैन पे जो उस को रद[1] करो
अच्छा सिधारो, दुख में पिदर की मदद करो।

उलफ़त के जोश में तो ये मुँह से कहा मगर
उट्ठा ये दिल में दर्द कि थर्रा गया जिगर
कुबरा को रोते देख कि बोली वो नौहागर
क्या माजरा हुआ मुझे मुतलक़[2] नहीं ख़बर
मैं रोकने न पायी कि वार उनका चल गया
क्या मैंने कह दिया कि कलेजा निकल गया।

ज़िन्दों में होती गर तो ये कहती कि मरने जायें
इस प्यास में शहीद हों फ़ाक़ों में ज़ख़्म खायें
अट्ठारहवाँ बरस है, दुल्हन तो मुझे दिखायें
पाला है नन्हेपन से मुरादें मेरी बर आयें
मरती हूँ इश्तियाक़[3] में सेहरा तो देख लूं
सेहरे के नीचे चाँद सा चेहरा तो देख लूं।

रुख़सत के नाम से मेरा फटता है अब जिगर
ऐसा न हो कि बानुए-बेकस को हो ख़बर
गर सुन लिया तो दिल में कहेगी वो नौहागर
प्यारा हुआ न बिन्ते अली को मेरा पिसर
समझी थीं क्या जो दी उसे रुख़सत जदाल की
ज़ैनब ने हाय क़द्र न की मेरे लाल की।

सच है कि उसकी चाह से निस्बत मुझे कहाँ
हूँ लाख उनकी चाहने वाली, वो फिर है माँ
आँखों[4] का नूर क़ल्ब की ताक़त बदन की जाँ
आँच आत्मा की है, वो क़यामत कि अलअमाँ
क्या सोचते हो साहिबो कुछ तुमको ख़ैर है
माँ[5] है, तो माँ है ख़ल्क़ में, फिर ग़ैर ग़ैर है।

---

१. दूर करो २. बिलकुल ख़बर नहीं ३. शौक़ में ४. बेटा तो आंख की रोशनी, दिल की ताक़त और बदन की जान होता है ५. दुनिया में मां मां ही होती है, दूसरों का और उसका क्या मुक़ाबला

जिस दम सुने ये दूर से बानों ने सब कलाम
ग्रायी क़रीबे - हज़रते - ज़ैनब वो नेक नाम
की ग्रर्ज़ हाथ जोड़के ऐ ख़्वाहरे[1] - इमाम
मैं हूँ कनीज़ ग्राप की ग्रौर ये पिसर ग़ुलाम
किस की मजाल है जो कहेगा ये क्या किया
बीबी ने दी ग़ुलाम को रुख़सत, बजा किया।

घर मेरा जब से लुट गया इस घर में ग्रायी हूँ
शिक्वे का कोई हर्फ़ कभी लब पे लायी हूँ
किस्रा[2] की गो कि पोती हूँ सुलताँ[3] की जायी हूँ
लौंड़ी हूँ ग्रापकी ग्रली ग्रकबर की दाई हूँ
सदक़ा ये ग्राप का है जो शह को ग्रज़ीज़ हूँ
भावज न जानिये मुझे, ग्रदना[4] कनीज हूँ।

ग्राप इसकी माँ हैं ग्रापका फ़र्ज़न्द है ये लाल
दख़्ल इस मुग्रामले में कोई दे ये क्या मजाल
ये ग्राज़िमे[5] - ग्रदाल है, ग्रौर ग्रापका ये हाल
क़दमों को छोड़ता न कभी ये निकू[6] ख़िसाल
ग्राप इसको चाहती हैं ये सदक़े है ग्राप पर
पर क्या करे कि ग्राज मुसीबत है बाप पर।

किस्मत बुरी है इसमें किसी का क़सूर क्या
ग्रच्छा रहें कि जायें हमारा भी है ख़ुदा
परवा हमारी है न ख़्याल उनको ग्रापका
ताबे हम ग्रापके भी हैं उनपर भी हैं फ़िदा
ग्राबिद[7] हों या कि ये सभी ग्राँखों के तारे हैं
पर ग्रब तो ये न ग्रापके हैं न हमारे हैं।

तसलीम करके ख़ेमे से वो सीम - बर[8] चला
पीछे हरम का क़ाफ़ला सब नंगे-सर चला
बानो पुकारती थी कि प्यारा पिसर चला
चिल्लाती थी फुफी मेरा लख़्ते[9] - जिगर चला
लुटते हैं ग्रहले - बैत दुहाई[10] इमाम की
तसवीर घर से जाती है ख़ैरुल[11] ग्रनाम की।

---

१. इमाम हुसैन की बहन २. किस्रा-ईरान का शासक कहलाता था ३. बादशाह ४. बहुत कम दर्जा, छोटा ५. युद्ध पर जाने के लिए तैयार ६. सुशील ७. इमाम हुसैन के सबसे बड़े बेटे ८. चादी जैसे बदन वाला ९. कलेजे का टुकड़ा १०. इमाम हुसैन से फ़रियाद करते हैं ११. ग्रर्थात् हजरत मुहम्मद

भाई के ग़म से आबिदे - बे - कस थे बे - क़रार
उठते थे और ज़मीन पे गिरते थे बार-बार
बहनें पुकारती थीं कि भैया तेरे निसार
सीनों को पीटती थीं ख़वासे[1] - ब - हाले-ज़ार
एक हश्र था जुदा अली अकबर जो होते थे
झूले में फूट-फूटके असग़र भी रोते थे।

हिलता था ख़ेमा राँड़ों में थी ये घड़ाघड़ी
आहों की बिजलियाँ थीं तो अश्कों की थी झड़ी
कोई इधर को ग़श थी कोई थी उधर पड़ी
आफ़त का वक़्त था तो क़यामत की थी घड़ी
मातम था ये हुसैन के ताज़ा जवाब का
जाता है जैसे घर से जनाज़ा जवान का।

निकला हरम-सदा से जो वो नूरे-हक़[2] का नूर
ख़ादिम ने दी सदा कि बरामद[3] हुए हुज़ूर
हज़रत खड़े थे ख़ेमे की ड्योढ़ी से कुछ जो दूर
दस्ते[4] - अदब को जोड़के बोला वो ज़ी - शऊर
रुख़सत हूँ अब, जो हुक्मे - शहे - नामदार[5] हो
रोकर कहा हुसैन ने, अच्छा सवार हो।

हज़रत तो याँ ज़मीं पे गिरे थामकर जिगर
जासूस ने ये लश्करे-आदा को दी ख़बर
आता है एक जवाने - हसीं ग़ैरते[6] - क़मर
चेहरे थे जिसके नूरे - मुहम्मद है जलवागर[7]
शान-ो-शिकोह[8] सब असदे[9] - किब्रिया की है
कहते हैं सब, बशर नहीं क़ुदरत ख़ुदा की है।

ग़ुल था रसूले[10] - पाक के सानी को देखना
हुस्ने[11] - बहारे - बाग़े - जवानी को देखना
खिलते हैं ग़ुल[12], शगुफ़्ता बयानी को देखना
ये सब तो है पे ग़ुंचा दहानी[13] को देखना

---

१. नौकरानियाँ २. ख़ुदा के नूर के घर की रोशनी अर्थात् इमाम हुसैन का बेटा, अकबर ३. बाहर आये ४. आदर से हाथों को जोड़कर ५. इमाम हुसैन ६. जिस पर चाँद को भी रश्क आये ७. नज़र आता है ८. शान और शौकत ९. अर्थात् हज़रत अली १०. हज़रत मुहम्मद-जैसे को देखो ११. जवानी के बाग़ की बहार देखो १२. बातें ऐसी कि जैसे मुँह से फूल झड़ते हों १३. फूल की कली-जैसा मुख

नाज़ुक लब[1] इस सिफ़त के, दहन इस तरीक़ का
ख़ातिम[2] पे जड़ दिया है नगीना अक़ीक़ का।

कुछ उम्र भी नहीं, अभी अट्ठारवाँ है साल
ये बाग़ किस बहार में होता है पायमाल[3]
क़ामत[4] है ये कि सर्वे - गुलिस्ताने - एतदाल
माँ - बाप देख - देखके क्योंकर न हों निहाल
आँखों के सामने जो ये क़ामत न होएगी
बतलाओ, माँ के दिल पे क़यामत न होएगी।

नागाह फ़ौजे-कीं[5] से अमर ने किया कलाम
ये वक़्ते - कारज़ार[6] है ऐ साकिनाने[7] - शाम
बस है यही बिसाते[8] - शहन्शाहे - ख़ास-ो-आम
मारा गया ये शेर तो मर जायेंगे इमाम
लूटो जनाबे - फ़ातमा - ज़ोहरा के बाग़ को
ठण्डा करो हुसैन के घर के चराग़ को।

दुनिया न जाये, दीन का गर हो तो हो ज़रर
टुकड़े करो इसे कि ये दुश्मन का है पिसर
तुम आबदीदा[9] हो लबे[10] - ख़ुश्क इसके देखकर
क़तरा न दूं मैं घुटनियों असग़र भी आये गर
ग़ैर अज़[11] यज़ीद और कोई हुक्मराँ न हो
औलादे - मुर्तज़ा में किसीका निशाँ न हो।

हाँ ग़ाज़ियो ! न उस की जवानी का ग़म करो
नेज़े पे नेज़े मारो सितम पर सितम करो
बर्छे उठाओ हाथों में तेग़[12] अलम करो
नख़ले - मुरादे[13] - सिब्ते - नबी को क़लम करो
बेटा न जब रहा तो किधर जायेंगे हुसैन
घोड़े से ये गिरेगा तो मर जायेंगे हुसैन।

ये गुल-अज़ार[14] दुख़्तरे - हैदर की जान है
बहनों की ज़िन्दगी है बिरादर की जान है

१-२. ऐसे कोमल होंठ, ऐंसा सुन्दर मुंह, जिसे देखकर ऐसा लगता है जैसे अंगूठी पर अक़ीक़ (एक मूल्यवान पत्थर) का नग जड़ा हुआ हो ३. बर्बाद ४. यह क़द ऐसा है जैसे बाग़ में सुन्दर सर्व हो ५. दुश्मनी रखनेवालों की फ़ौज ६. लड़ाई का वक़्त है ७. ऐ शाम के रहनेवालो ८. बस अब हुसैन के पास यही एक दौलत रह गयी है ९. रो रहे हो १०. सूखे होंठ ११. सिवा यजीद के और कोई हाकिम न हो १२. तलवारें उठाओ १३. हुसैन की मुरादों के वृक्ष को काट डालो १४. ये फूल-जैसा युवक अली की बेटी की जान है

बाबा की रूह है तने[1] - मादर की जान है
बेजाँ करो इसे कि ये सब घर की जान है
जोशन[2] यही है बाज़ूए - बरना-ओ-पीर का
बाद उसके ख़ातमा है सग़ीर-ो[3]-कबीर का।

ये सुन के फ़ौजे-कीं हुई ग्रामादए[4] - नबर्द
दर्दे - दिले - हुसैन का था एक को न दर्द
गुल सुन के हो गया शहे[5]-वाला का रंग ज़र्द
काँपे जो पाँव बैठ गये भरके ग्राहे - सर्द
माँ गिर पड़ी ज़मीं पे फुफी बिलबिला गयी
बदली सितम की वाँ ग्रली ग्रकबर पे छा गयी।

लड़ने को उस तरफ़ से उदू[6] सब के सब बढ़े
तन्हा इधर से ग्रकबरे[7] - ग्राली नसब बढ़े
चूमे क़दम नहीब[8] ने झुककर ये जब बढ़े
गोया पए - जिहाद[9] ग्रमीरे - ग्ररब बढ़े
दहशत[10] से फ़ौजे-शाम की बदली सिमट गयी
क़ुदरत ख़ुदा की, दिन जो बढ़ा रात घट गयी।

थम-थमके यूँ गया सफ़े - ग्रादा पे वो दिलैर
जाता है दाँव करके ग़िज़ालों[11] पे जैसे शेर
ग़ाज़ी जो भूख-प्यास में था ज़िन्दगी से सैर
कुश्तों के पुश्ते हो गये दम में सरों के ढेर
एक सैल[12] ज़ोरशोर से ग्रायी गुज़र गयी
साबित न ये हुग्रा सफ़े - ग्रव्वल किधर गयी।

जब उस जरी ने कत्ल किये पाँच सौ जवाँ
हर सफ़ से, हर परे से उठा शोर, ग्रल[13] ग्रमाँ
चिल्लाया इब्ने - साद[14] स्याह क़ल्ब-ो-सख़्तजाँ
निकलें वो दस हज़ार कमाँदार हैं कहाँ

---

१. माँ के शरीर की जान है २. यही तो है जो बूढ़े ग्रौर जवान, सब का तावीज़ बना हुग्रा है ३. इसके बाद छोटे-बड़े सभी की समाप्ति है ४. लड़ाई पर तैयार ५. इमाम हुसैन ६. दुश्मन ७. ऊँचे ख़ानदानवाले अकबर ८. गौरव ९. मानों लड़ाई के लिए अली ग्राये हैं १०. दुश्मन की सेना ऐसी भयभीत हुई कि वह सिमट के रह गयी। ऐसा लगता था मानों दिन बढ़ गया है ग्रौर रात घट गयी है, ग्रर्थात् ग्रकबर की रोशनी से ग्रौर दुश्मन की ग्रंधेरे से उपमा दी है ११. हिरनों पर १२. लहर १३. शरण दो १४. इब्ने साद, जिसका दिल काला ग्रौर जान सख़्त थी

बर्छी का अब है काम, न तलवार चाहिए
इस नौजवाँ पे तीरों की बौछार चाहिए।

फ़ाक़ा है तीन रोज़ का सोलह पहर की प्यास
देखे ! नबीरए-असदुल्लाह[1] के हवास
दरिया से तुम क़रीब हो और इस क़दर हिरास
बरसाओ तीर दूर से, जाओ न उसके पास

बिफरे हुए असद कहीं तलवार खाते हैं
जब उठ सके न शेर तो नज़दीक जाते हैं।

ये सुन के तिश्ना-लब पे चले चार सू से तीर
पत्थर अक़ब[2] से पड़ने लगे रू-ब-रू[3] से तीर
आते थे फ़ौज फ़ौज सिपाहे-उदू से तीर
सब सुर्ख़ थे शबीहे[4]-नबी के लहू से तीर

[5]मक़तल में क्या हुजूम था इस नूरे-ऐन पर
परवाने गिर रहे थे चराग़े-हुसैन पर।

इस हाल में भी तेग़ से कीं बर्छियाँ क़लम
लेकिन जिगर पे लग गया एक नेज़ए[6]-सितम
ज़ख़्मे[7]-जिगर से बहने लगा ख़ून दम-बदम
निकले हुए रकाबों से थर्राते थे क़दम

खींचा जो उसने सीने से नेज़ा तकाँ के साथ
दो पारए-जिगर निकल आये सिनाँ के साथ।

हज़रत खड़े थे ख़ेमे की पकड़े हुए तनाव[8]
सुनकर ये ग़ुल रही न दिले-नातवाँ को ताब
नागाह आयी रन से सदा, ऐ फ़लक[9]-जनाब
बेटा जहाँ से जाता है, अब आइये शिताब[10]

लाशे पे ज़ुल्म-ो-जौर बद-अफ़आल[11] करते हैं
घोड़ों से अहले[12]-कीं हमें पामाल करते हैं।

सुनकर ये इस्तग़ासए[13]-फ़र्जन्दे-ख़ुश-ख़िसाल
सय्यद[14] ने आह की, कि हिला अर्शे-ज़ुलजलाल[15]

---

१. अली के पोते २. पीछे से ३. सामने से ४. अली अकबर ५. क़त्ल के मैदान में उस हुसैन के प्यारे पर तीरों की ऐसी बौछार थी जैसे चिराग़ पर परवाने गिर रहे हों ६. नेज़ा ज़ालिमों का ७. जिगर का घाव ८. डोरियाँ ९. बड़े रुतबेवाले अर्थात् इमाम हुसैन १०. जल्दी, शीघ्र ११. चरित्रहीन दुश्मन १२. दुश्मन घोड़ों से रौंद रहे हैं १३. बेटे की फ़रियाद १४. इमाम हुसैन १५. आसमान हिल गया

खोले जनाबे-फ़ातमा की बेटियों ने बाल
बानो पुकारी ख़ैर तो है, ऐ अली के लाल
हय हय पिसर से कौन-सी मादर बिछड़ गयी
साहिब बताओ, क्या मेरी बस्ती उजड़ गयी।

नैज़ से किसके लाल का ज़ख़्मी हुआ जिगर
करते हैं किसकी लाश को पामाल अहले-शर
कहता है कौन रन में तड़पकर पिदर पिदर
अब घर से मैं निकलती हूँ, हय हय मेरा पिसर
पर्दा न मुझसे कीजिये सब जानती हूँ मैं
आवाज़ ये उसी की है पहचानती हूँ मैं।

बानो की क़स्में देके चले शाहे-नामदार
वो प्यास औ वो धूप का सदमा वो इज़्तरार[1]
दिल था उलट-पुलट तो कलेजा था बेक़रार
उठते थे और ज़मीन पे गिरते थे बार-बार
चिल्लाते थे शबीहे-पयम्बर, हम आते हैं
घबराइयो न ऐ अली अकबर, हम आते हैं।

आऊँ किधर को ऐ अली अकबर जवाब दो
चिल्ला रही है ड्योढ़ी पे मादर जवाब दो
अकबर बराय ख़ालिक़े[2]-अकबर जवाव दो
बेटा जवाब दो मेरे दिलवर जवाब दो
गिरते हैं हम सवाब का हाथों से काम लो
बेटा ज़ईफ़[3] बाप के बाज़ू को थाम लो।

जंगल से बेहवास फिरे नह्र पर गये
वाँ भी जो वो गौहर[4] न मिला सूए-बर गये
दौड़े किसी तरफ़ तो किसी जा ठहर गये
भाले मिले लहू के बराबर जिधर गये
टपका हुआ ज़मीं पे जिगर का लहू मिला
लेकिन कहीं न वो पिसरे-माहरू मिला।

लाशे-पिसर को ढूंढ़ते थे शाहे-बहर-ो-बर[5]
सर पीटने की जा है कि हँसते थे अहले-शर
कहता था शिम्र, ऐ पिसरे[6], सय्यदुल-बशर!
किसको हुज़ूर ढूंढ़ते हैं मर गया पिसर

---

१. बेक़रारी २. ख़ुदा ३. बूढ़े, कमज़ोर ४. मोती ५. इमाम हसैन ६. ऐ रसूल के बेटे

खुद ढूंढ़ लीजिये जसदे[1]-पाश पाश - को
वतलायेंगे न हम, अली अकबर की लाश को।

ये सुनके खींच ली शहे-वाला ने ज़ुल्फ़िक़ार[2]
चमकी जो बर्क़[3]-तेग़ तो भागे सितम-शिआर
शह को नज़र पड़ा अली अकबर का राहवार[4]
चिल्लाये ऐ उक़ाब[5]! किधर है तेरा सवार

दिखला दे मुझको लाश मेरे नूरे[6]-ऐन की
किस दश्त[7] में पड़ी है बिज़ाअत हुसैन की।

घोड़े ने हिनहिनाके सुए-दश्त की नज़र
यानी कि लाश आपके प्यारे की है उधर
जाता था आगे - आगे वो ताज़ी[8] ब - चश्मे-तर
घोड़े के पीछे - पीछे थे सुल्ताने[9]-बहर-ो-बर

जंगल में लाशए - पिसरे - नौजवाँ मिला
वो महलक़ा मिला तो, मगर नीमजाँ मिला।

हिचकी के साथ कहते हैं वा कर[10] के चश्मेतर
ऐ जान जिस्मे-ज़ार में और एक दम ठहर
ऐ मौत! बेवतन की जवानी पे रहम कर
ऐ दर्द! थम ज़रा कि फटा जाता है जिगर

फिर एक बार सय्यदे - वाला को देख लूँ
मोहलत बस इतनी दे कि मैं बाबा को देख लूँ।

दुश्मन को भी न बेटे का लाशा ख़ुदा दिखाये
हज़रत ज़मीं पे गिरके पुकारे कि हाय हाय
ज़िन्दा रहे ये पीर[11], जवाँ यूँ जहाँ से जाये
ऐ लाल! तीन रोज़ के फ़ाक़े में ज़ख्म खाये

शायद जिगर के ज़ख़्म से तुम बेक़रार हो
ज़ख़्मी तुम्हारी छाती पे बाबा निसार हो।

क्यों खींचते हो पाँव को ऐ मेरे गुल-अज़ार
क्यों हाथ उठा-उठाके पटकते हो बार-बार
आँखें तो खोल दो कि मेरा दिल है बेक़रार
बेटा! तुम्हारी माँ को तुम्हारा है इन्तिज़ार

---

१. टुकड़े-टुकड़े बदन २. अली की तलवार ३. तलवार की चमक ४-५. घोड़ा ६. आँखों का नूर ७. हुसैन की पूँजी किस जंगल में पड़ी है ८. घोड़ा जो रो रहा था ९. इमाम हुसैन १०. खोल कर ११. बूढ़ा

बहनें खड़ी हैं दर पे बड़े इश्तियाक़ में
अकबर ! तुम्हारी माँ न जियेगी फ़िराक़[1] में।

ग़श में सुना जुंही अली अकबर ने माँ का नाम
किस यास की निगाह से देखा सुए-श्याम
सूखी ज़ुबाँ दिखाके ये बोला वो तश्ना-काम
शिद्दत ये प्यास की है कि दुश्वार[2] है कलाम
अब और कोई दम का पिसर मेहमान है
इमदाद या हुसैन ! कि पानी में जान है।

फ़रमाया शह ने ऐ अली अकबर, मैं क्या करूँ
पानी नहीं है मुझको मयस्सर मैं क्या करूँ
घेरे हैं नहर को ये सितमगर मैं क्या करूँ
कुछ बस नहीं मेरा, मेरे दिलबर मैं क्या करूँ
आदा न देंगे बूंद, अगर लाख कद[3] करें
बेटा तुम्हारी साक़िए[4]-कौसर मदद करें।

हज़रत ये कहते थे कि चला ख़ल्क़ से पिसर
इतनी ज़ुबाँ हिली कि "ख़ुदा हाफ़िज़", ऐ पिदर
हिचकी जो आयी थाम लिया हाथ से जिगर
अँगड़ाई लेके रख दिया शह के क़दम पे सर
आबाद घर लुटा शहे-वाला के सामने
बेटे का दम निकल गया बाबा के सामने।

लिखता है एक राविए[5]-ग़मगीन-ो-पुर-मलाल
यानी इधर हुआ अली अकबर का इन्तिक़ाल[6]
निकली हरम से एक ज़ने-[7]फ़ातमा-जमाल
गोया जनाबे-सय्यदा[8] खोले हुए थीं बाल
थी इस तरह से रुख़ पे ज़िया उस जनाब के
हल्का हो जैसे नूर का गिर्द आफ़ताब के।

चिल्लाती थी अरे मेरा प्यारा है किस तरफ़
ऐ आसमाँ ! वो अर्श[9] का तारा है किस तरफ़
ऐ अब्रे[10]-शाम ! चाँद हमारा है किस तरफ़
ऐ अर्ज़े[11]-करबला ! वो सिधारा है किस तरफ़

---

१. जुदाई, वियोग २. बात करना मुश्किल है ३ कोशिश ४. जन्नत की नहर का पानी पिलानेवाले अर्थात् हज़रत अली ५. बात को बयान करनेवाला ६. मौत ७. फ़ातमा-जैसी शानवाली ८. इमाम हुसैन की माता का नाम ९. आसमान १०. ऐ शाम के बादल, यानी दुश्मन की फ़ौज से कह रही है ११. करबला की ज़मीन

हय हय सिनां से जान गयी मेहमान की
मय्यत किधर को है मेरे कड़यल जवान की।

ऐ मेरे लम्बे गेसुओं वाले किधर है तू
हय हय मेरी ग़रीबी क पाले किधर है तू
वारी, कहां लगे तुझे भाले किधर है तू
क्योंकर फुफी जिगर को सँभाले किधर है तू
अट्ठारवाँ बरस था कि मौत आ गयी तुझे
ऐ नूरे-ऐन[1] ! किस की नज़र खा गयी तुझे।

ये बैन करती जाती थी वो सोख़्ता-जिगर
सैदानियों का गोल था पीछे बरहना[2] सर
जाती थी बे-हवास उधर से वो नौहागर
आये इधर से लाश लिये शाहे-बहर[3]-ो-बर
देखा लहू रवाँ[4] जो तने[5]-पाश पाश से
सब बीबियाँ लिपट गयीं अकबर की लाश से।

आक़ा[6] ! 'अनीस' हिन्द में कब तक फिरे तबाह
घटती है उम्र बढ़ते चले जाते हैं गुनाह
ज़ोफ़[7] इस बरस बहुत है अजल[8] आ न जाये आह
बुलवाइये ग़ुलाम को ऐ मेरे बादशाह
क़ुर्बे[9]-मज़ारे-शाहे-दो-आलम नसीब हो
बस करबला में अब कि मोहर्रम नसीब हो।

---

१. आंखों की रोशनी २. नंगे सिर ३. इमाम हुसैन ४. बहता हुआ ख़ून ५. बदन के टुकड़े-टुकड़े ६. मालिक, अर्थात् इमाम हुसैन से सम्बोधन ७. कमज़ोरी ८. मौत ९. इमाम हुसैन के मज़ार के पास पहुँच जाऊँ और अब के मुहर्रम कर्बला (जहाँ इमाम हुसैन का मज़ार है) में हों

मर्सिया : ८

"जब दौलते-सरवर पे ज़वाल आ गया रन में"

अली असग़र, पुत्र
इमाम हुसैन की शहादत

जब दौलते[1]-सरवर पे ज़वाल[2] आ गया रन[3] में
जिस गुल पे तसद्दुक़[4] थे वो मुर्झा गया रन में
आँखों का जो था नूर वो खोया गया रन में
जीने का जो बाइस[5] था वो मारा गया रन में
माँ-बाप को सेहरा भी न अकबर ने दिखाया
पीरी में अजब दाग़ मुक़द्दर[6] ने दिखाया।

यूं बाप की क़िस्मत को उलटते नहीं देखा
इस तरह मुक़द्दर को पलटते नहीं देखा
यूं बढ़ के किसी सर्व को घटते नहीं देखा
इस उम्र का पौदा कोई कटते नहीं देखा
नाज़ों के, दुआओं के, मुरादों के पले थे
वा हसरत-ो-दर्दा अभी फूले न फले थे।

गेसू[7] अभी मन्नत के बढ़ाये थे न माँ ने
जो कूच[8] किया ख़ल्क़ से इस ताज़ा जवाँ ने
आईना बनाया जिसे रब्बे[9]-दो जहाँ ने
उस सीने को ज़ख़्मी किया दुश्मन की सिनाँ[10] ने
तोड़ा नहीं ऐसा गुले[11]-शादाब किसी ने
खोला किये मुंह औ न दिया आब[12] किसी ने।

अफ़सोस न कुछ उम्र ने अकबर से वफ़ा की
पूरे वो जवाँ भी न हुए थे कि क़ज़ा[13] की
क्या दख़्ल है बन्दे को मशीयत[14] में ख़ुदा की
माँ कहती थी, मुझसे अली अकबर ने दग़ा की
कुछ बस न चला आ गये यूं मौत के बस में
पैदा हुए और मर गये अट्ठारह बरस में।

होता है बराबर का पिसर क़ुव्वते[15]-बाज़ू
आरामे[16]-जिग़र, राहते-जाँ, ज़ीनते-पहलू
ऐसा पिसरे[17]-माह-लक़ा सफ़दर-ो-ख़ुशख़ू
मर जाये तो क्या दिल पे रहे बाप के क़ाबू

---

१. हुसैन की सम्पत्ति २. डूब जाना ३. रण-स्थल ४. न्योछावर ५. वजह ६. भाग्य ७. मन्नत मानकर केश बढ़ाना ८. यात्रा करना, सफ़र करना ९. दोनों संसार का मालिक १०. बर्छी ११. ताज़ा फूल १२. पानी १३. मौत आयी १४. ख़ुदा की मर्ज़ी १५. पुत्र पिता की भुजाओं की शक्ति होता है १६. दिल का सुख-चैन १७. चाँद-सा सुन्दर, बहादुर और सुशील पुत्र

गिर पड़ते हैं उठ उठ के ये कमज़ोर हैं शब्बीर
जीते हैं मगर ग़म से लबे - गोर हैं शब्बीर।

ये दर्दे - जिगर है कि सँभलने नहीं देता
ये ज़ोरे - निक़ाहत[1] है कि चलने नहीं देता
ग़म और तरफ़ दिल को बहलने नहीं देता
राशा[2] कफ़े - अफ़सोस भी मलने नहीं देता
ग़म कौन सा ख़िर्मन[3] के लिए बर्क़[4] नहीं है
पर सब्र की ताक़त में ज़रा फ़र्क़ नहीं है।

दिल का है तक़ाज़ा कि तड़पने की रज़ा दो
कहता है जिगर ख़ूँ मेरा आँखों से बहा दो
सर खींचा[5] है नालों ने कि गर्दूं[6] को हिला दो
शह कहते हैं याद अब अली अकबर की भुला दो
मुख़्तार[7] का जो हुक्म हो कुछ जब्र नहीं है
इस ज़ख़्म का मरहम कोई जुज़[8] सब्र नहीं है।

जो अहले - मुहब्बत हैं बला उनके लिए है
साबिर जो हैं, ये दर्द दवा उनके लिए है
मज़लूम जो हैं लुत्फ़े[9] - ख़ुदा उनके लिए है
हर रंज में एक ताज़ा मज़ा उनके लिए है
सौ दुख हों तो हों, महव[10] हैं उलफ़त में उसीकी
रोते हैं तो रोते हैं मुहब्बत में उसीकी।

अकबर था तो वो क्या था अगर हम हैं तो क्या हैं
सौ ऐसे जो बन्दे हों तो ख़ालिक़ पे फ़िदा हैं
कुछ ग़म नहीं गर हमसे जुदा हैं तो जुदा हैं
ये किस की इनायत है कि राज़ी ब[11]-रज़ा हैं
ग़म था जो सर इस राह में फ़र्ज़न्द न देता
क्या करते अगर वो हमें दिलबन्द[12] न देता।

अट्ठारह बरस तक जो रहा पास वो दिलदार
थी ये भी इनायत कि वो है राहिम-ो-ग़फ़्फ़ार[13]
हर हाल में बन्दे को इनाअत[14] है सज़ावार
मजबूर हैं हम और वो है क़ादिर-ो-मुख़्तार[15]

---

१. कमज़ोरी २. कँपकँपी ३. खलियान ४. बिजली ५. रोने ने ज़ोर बांधा है ६. आसमान ७. ख़ुदा जो हर चीज़ का मालिक है ८. सिवा ९. कृपा, मेहरबानी १०. लीन ११. ख़ुदा की मर्ज़ी में राज़ी हैं १२. बेटा, पुत्र १३. दया करने और बख़्शने वाला १४. आज्ञा-पालन १५. हर चीज़ करने का जिसको इख़्तियार हो

अकबर सा जवाँ रश्के[1]-क़मर किसने दिया था
वो सब्र भी बख़्शेगा पिसर जिसने दिया था।

जीने का यक़ीं रहलते[2]-अब्बास में कब था
मर जाना बिरादर का क़यामत था ग़ज़ब था
अल्लाह पे रोशन है जो कुछ दिल पे तअब[3] था
तड़पे नहीं ये किसकी इनायत का सबब था

बहतर था हमारे लिए तन्हाई का मरना
सब सहल है जब देख चुके भाई का मरना।

रोने से मिलें गर अली अकबर तो मैं रोऊँ
छाती से लिपट जाये वो दिलबर[4] तो मैं रोऊँ
आबाद जो हो उजड़ा हुआ घर तो मैं रोऊँ
रोने से ये दौलत हो मयस्सर तो मैं रोऊँ

फिर खोये हुए लाल को पाते नहीं देखा
दुनिया से गया जो उसे आते नहीं देखा।

रोये जो मुसीबत में तो क्या होता है ऐ दिल
होता है जो क़िस्मत का लिखा होता है ऐ दिल
हर दर्द का उल्फ़त में मज़ा होता है ऐ दिल
साबिर से रज़ामन्द ख़ुदा होता है ऐ दिल

मतलब तेरे ये मरहले[5] त करके मिलेंगे
जीते हैं तो फ़र्ज़न्द से अब मरके मिलेंगे।

बातें थीं इधर शुक्र की औ सब्र-ो-रज़ा की
बँधती थीं सफ़ें[6] रन में उधर अहले[7]-जफ़ा की
नागाह हुई ख़ेमे में एक धूम बुका[8] की
समझे शहे-मज़लूम[9] कि असग़र ने क़ज़ा की

फ़रमाया कि यारब कहीं जल्दी अजल आये
तड़पा ये दिले-ज़ार कि आँसू निकल आये।

ड्योढ़ी के क़रीब आके ये शब्बीर पुकारे
जीते हैं कि असग़र सुए-फ़िर्दौस[10] सिधारे
फ़िज़्ज़ा ने कहा ऐ असदुल्लाह के प्यारे
मासूम का दम होंटों पे है प्यास के मारे

सँभले हैं कुछ अब, पहले तो गर्दन भी ढली थी
जल्द आइये लौंडी तो बुलाने को चली थी।

---

१. चाँद से ज्यादा सुन्दर २. अब्बार की मृत्यु ३. तकलीफ़ ४. दिल का टुकड़ा, बेटा ५. मंज़िलें ६. पंक्तियाँ ७. ज़ालिमों ८. रोने की ९. इमाम हुसैन १०. जन्नत, स्वर्ग

रोते हुए ख़ेमे में शहे-बहर-ो[1]-बर आये
ख़ुश हो के सकीना ने कहा लो पिदर[2] आये
बानो को जो शब्बीर अकेले नज़र आये
चिल्लायी कि मैदाँ से न अकबर इधर आये
लौंडी ने बड़ी देर से देखा नहीं उनको
साहिब मेरे लुटने की ख़बर क्या नहीं उनको।

कह दे कोई मरते हैं अली असग़रे-गुल[3]-फ़ाम
लायें जो कहीं से, उन्हें पानी का मिले जाम[4]
हज़रत ने कहा उनको किसी से नहीं कुछ काम
जागे थे कई रात के अब करते हैं आराम
हम दारे[5]-महन में हैं वो गुलज़ारे[6]-जिनाँ में
वामाँदों[7] की लेता है ख़बर कौन जहाँ में।

फ़रमाके ये गहवारए[8]-असग़र पे झुके शाह
देखा जो दम उखड़ा तो हुआ सदमए[9]-जाँकाह
ख़ुर्शीदे-लबे[10]-बाम नज़र आया जो वो माह[11]
राँड़ों के जिगर हिल गये इस दर्द से की आह
छायी हुई ज़र्दी थी जो दिलबन्द के मुँह पर
शब्बीर ने मुँह रख दिया फ़र्ज़न्द के मुँह पर।

नन्हे से जो तकिये से ढली जाती थी गर्दन
दम बाप का रुक जाता था और काँपता था तन[12]
नीले थे लबे-सुर्ख़ जो मिस्ले-गुले[13]-सौसन
रोते थे लहू, ज़र्द था शह का रुख़े[14]-रौशन
छाती में धड़कता जो दिल उस माह जबीं[15] का
सदमे से उछलता था कलेजा शहे-दीं[16] का।

था नज़्अ में वो गुंचा[17]-दहन .प्यास के मारे
ऐंठी थी ज़ुबाँ मौत के आसार थे सारे
छाती पे कभी हाथ धरे, गाह उतारे
मुंह खोलना था प्यास में, पानी के इशारे
दम रुकता था सीने में जो ढल पड़ते थे आँसू
खुल जाती थीं आँखें तो निकल पड़ते थे आँसू।

---

१. इमाम हुसैन २. पिता ३. अत्यधिक सुन्दर ४. प्याला ५. रंजोग़म की जगह अर्थात् संसार ६. जन्नत का बाग़ ७. मर जानेवालों के पीछे रह जानेवाले ८. झूला ९. जान लेनेवाला दुख १०. डूबनेवाला सूरज ११. चाँद १२. शरीर १३. नीले रंग का फूल १४. चमकता चेहरा १५. चाँद-सा माथेवाला १६. इमाम हुसन १७. फूल-सा मुँहवाला

चिल्लाती थी बिखराये हुए बालों को मादर
दौलत मेरी लुटती है उजड़ता है मेरा घर
फ़र्याद है ऐ लख़्ते[1] - दिले - साक़िए - कौसर
आँखें भी झपकते नहीं अब तो अली असग़र

क्या हो गया इस साहिबे - इक़बाल को मेरे
हय हय लिये जाती है अजल[2] लाल को मेरे।

गोदी में लिया शाह ने घबराके पिसर को
लिपटा लिया ख़ुर्शीद[3] ने छाती से क़मर[4] को
ख़ेमे से चले लेके जो इस नूरे - नज़र को
ग़श आने लगा मादरे - तफ़तीदा[5]-जिगर को

समझी कि ये अब जाके न फिर आयेंगे रन से
फ़र्ज़न्द चला क्या कि चली जान बदन से।

अश्क[6] आँखों से बहने लगे दिल ग़म से भर आया
गेहवारए - बे शीर जो ख़ाली नज़र आया
रिक़्क़त[7] का हुआ जोश तो मुँह को जिगर आया
रंग उड़ने लगा तीर[8] कलेजे में दर आया

गहवारे पे सर धर के जो ग़श कर गयी बानो
हर बीबी पे साबित ये हुआ मर गयी बानो।

सब बीबियाँ चिल्लाके ये करने लगीं ज़ारी
घबराके उठी और ये हज़रत को पुकारी
या सिब्ते[9]-नबी तन से चली जान हमारी
एक लहज़ा[10] ठहर जाइये मैं आपके बारी

साहिब मेरी आग़ोश[11] के पाले को दिखा दो
एक बार फिर इस हँसलियों वाले को दिखा दो।

हज़रत[12] ने कहा शौक़ से बेशीर[13] को देखो
लो आके फिर इस चाँद सी तसवीर को देखो
बेताब हो क्यों असगरे - दिलगीर को देखो
क्या सब्र किया है, दिले - शब्बीर को देखो

मौत आज जो उनकी है तो चारा नहीं साहिब
क्या लाल तुम्हारा हमें प्यारा नहीं साहिब।

---

१. इमाम हुसैन २. मौत ३. सूरज ४. चाँद ५. माँ जिसका कलेजा जल रहा था ६. आँसू ७. रोना ८. कलेजे में एक तीर-सा पार हो गया ९. ऐ रसूल के नवासे १०. एक पल ११. गोद १२. इमाम हुसैन १३, बच्चा जिसे दूध नहीं मिला

तुम माँ हो बड़े दुख से इसे तुमने है पाला
है हक़ ब[1]-तरफ़ गर हो कलेजा तह-ो-बाला
पर जान हमारी भी है ये गेसुग्रों वाला
हर तरह मगर सब्र किया दिल को सँभाला
ख़ुश्नूद[2] हैं वो इश्क़ है अल्लाह से जिनको
अकबर को फ़िदा करके लिये जाता हूँ इनको।

धड़का है कि बे-रहम कहीं तीर न मारें
शर्मिन्दा हूँ तुमसे जो ये कौसर[3] को सिधारें
वाँ तीर हैं मेरे लिए तलवारों की धारें
ग़ुल है कि हुसैन आयें तो सर तन से उतारें
क़ातिल हैं वो अकबर के तो सज्जाद के दुश्मन
हैं मुझसे ज़्यादा मेरी औलाद के दुश्मन।

बरगश्ता[4] है तक़दीर मुख़ालिफ़ है ज़माना
दुश्वार है अब जाके मेरा ख़ेमे में आना
सच कहती हो तुम इनका मुनासिब नहीं जाना
उलफ़त है अगर हमसे तो आँसू न बहाना
दुख दर्द रँड़ापे का भी सह लीजियो बानो
जो कहना हो अल्लाह से कह लीजियो बानो।

लो गोद में फ़र्ज़न्द को अल्लाह निगेहबाँ
हर हाल में ज़ैनब की इताअत[5] का रहे ध्याँ
बानो ने कहा जोड़ के हाथों को ये उस आँ
लौंडी से ख़फ़ा कुछ हुए, मैं आपके क़ुर्बां
यूँ आप जिसे चाहिए दे जाइये इनको
कब मैंने कहा था कि न ले जाइये इनको।

मैं भी हूँ कनीज़ आपकी या हज़रते-शब्बीर
हर दुख में रज़ा[6] जूए-ख़ुदा ताबए-तक़दीर
बेताब था, दिल की हो जो बेजा कोई तक़रीर
हैं आप खता[7]-पोश बहल[8] कीजिये तक़सीर
फ़र्ज़न्द का ग़म माँ के कलेजे को छुरी है
सदक़े गयी ये आतमा की आँच बुरी है।

---

१. यदि तुम्हारा हृदय व्याकुल है तो बिलकुल ठीक है २. मगर जिनको ख़ुदा से मुहब्बत होती है, वे हर हाल में ख़ुश रहते हैं ३. जन्नत को जायें ४. क़िस्मत फिरी हुई है ५. बात मानना ६. ख़ुदा के हुक्म पर रज़ामन्द और क़िस्मत जो दिखाये उसपर राज़ी ७. आप क्षमाशील हैं ८. मेरी ग़लती क्षमा करें

ख़ंजर के तले जिसका जिगर हो वो ही जाने
इस दर्द की जिस दिल को ख़बर हो वो ही जाने
दुख दर्द में यूँ जिसकी बसर हो वो ही जाने
आग़ोश[1] में जिस माँ की बसर हो वो ही जाने
शब[2] कहती है किस तरह से दिन ढलता हैं क्योंकर
पूछे कोई माँ से कि पिसर पलता है क्योंकर।

पहलू में हो या गोदी में या छाती पे सोये
धड़का है कि बच्चा कहीं बेचैन न होए
पलता है पिसर एक जो माँ उम्र को खोये
जिसने ये उठायी हो मुसीबत वो न रोये
माँ चुप रहे और गोद से जाये पिसर ऐसा
साहिब कोई ले आये कहाँ से जिगर ऐसा।

मैं आपके सदक़े मेरे माँ - बाप भी क़ुर्बां
ये खादिमए - ख़ास तो है ताबए[3]-फ़रमाँ
ख़ुश्नूद[4] हूँ ले जाइये इनको सुए - मैदां
कुछ मैंने कहा मर गये जब अकबरे - जीशाँ
हाँ सब्र ख़ुदा दे, ये दुआ कीजियो साहिब
नाम इनका जो अब लूँ तो गिला[5] कीजियो साहिब।

शह बोले ये क्या कहती हो ऐ बानुए दिलगीर
वल्लाह[6] ब-दिल तुमसे रज़ामन्द[7] है शब्बीर
दख़्ल इसमें न मेरा न तुम्हारी कोई तक़सीर
साहिब इन्हें दरिया पे लिये जाती है तक़दीर
वाजिब हमें हर हाल में ख़ुशनूदिए[8]-रब है
अकबर गये जिस जा वहीं इनकी भी तलब[9] है।

लो गोद में लेकर इन्हें छाती से लगाओ
बस सब्र करो अश्क न आँखों से बहाओ
भारी कोई कुर्ता अली असग़र को पिन्हाओ
अकबर के जो बचपन का अमामा हो तो लाओ
दूल्हा सा बनाओ कि ये परवान चढ़ेगा
तुम शुक्र करो आज कि दूध इनका बढ़ेगा।

---

१. गोद २. रात ३. हुक्म माननेवाली ४. ख़ुश हूँ ५. शिकायत ६. ख़ुदा की क़सम
७. तुमसे ख़ुश है ८. ख़ुदा की ख़ुशी ९. बुलावा

ये सुन के कहा माँ ने कि आओ मेरे प्यारे
सुर्मा भी दिया, बाल भी सब सर के सँवारे
कपड़े जो थे भारी वो पिन्हाए, ये उतारे
रोकर कहा लो जाओ मैं क़ुरबान तुम्हारे
झुक-झुक के जो फ़र्ज़न्द का मुँह पास से देखा
माँ को अली असग़र ने अजब यास से देखा।

एक शोर था अल्लाह निगेहबाँ[1] अली असग़र
चिल्लाती थीं फुफियाँ मेरे नादाँ अली असग़र
प्यासे अली असग़र मेरे ज़ीशाँ[2] अली असग़र
माँ कहती थी जाते हो मैं क़ुर्बां अली असग़र
छुटता था जो भाई तो मुई जाती थीं बहन
मुँह छाती पे रक्खे हुए चिल्लाती थीं बहनें।

बच्चे को लिये घर से जो निकले शहे-वाला
थी धूप में तेज़ी कि हरन होता था काला
निकला था कभी घर से न वो हँसलियों वाला
दामाने[3]-अबा चेहरए-फ़र्जन्द पे डाला
रोता था तो छाती से लगा लेते थे शब्बीर
हर गाम[4] पे दामन[5] से हवा देते थे शब्बीर।

यूँ कहने लगे देख के आपस में सितमगर[6]
ये क्या है जो हाथों पे लिये हैं शहे-सफ़दर
बोला कोई है ज़ेरे-अबा मुसहफ़े[7]-दावर
ताकि सुलहा करें हमसे इसे बीच में देकर
मालूम हुआ जंग से घबराते हैं शब्बीर
क़ुरआँ[8] को शफ़ाअत[9] के लिए लाते हैं शब्बीर।

बोला कोई बेदर्द नहीं, ये नहीं इस्ला[10]
है साबिर-ो-शाकिर पिसरे-हज़रते-ज़ोहरा
सादात पे इस दश्त में हैं तीसरा फ़ाक़ा
बेजान हुआ होगा किसी सैदानी का बच्चा
अश्क आँखों में हैं, चाक गिरीबान किये हैं
मय्यत किसी मासूम की शब्बीर लिये हैं।

---

१. ख़ुदा तेरा रखवाला है २. बड़ी शानवाले ३. लबादे का पल्लू ४. हर पग पर ५. पल्लू ६. ज़ालिम दुश्मन ७-८. क़ुरआन पाक, मुसलमानों की पवित्र पुस्तक ९. सिफ़ारिश के लिए १०. हरगिज

सुनकर ये कलाम उनको पुकारे शहे - आदिल[1]
तुम तो न मुहम्मद के न क़ुरआँ के हो क़ाइल
मय्यत है, न क़ुरआँ है, ये ऐ फ़िर्क़ए - जाहिल[2]
ये मुसहफ़े[3]-नातिक़ के गले की है हिमाइल[4]

देखो मेरी मज़लूमियो - अन्दोह-ो[5]-क़लक़ को
ले[6] आया हूँ ज़ोहरा के सहीफ़े के वरक़ को।

ये छोटा सा सैयद भी है मेहमान तुम्हारा
क्या तुमको मिलेगा जो इसे प्यास ने मारा
ये फ़र्श की जीनत है तो है अर्श का तारा
मेरा भी [7]जिगर-बन्द है माँ का भी है प्यारा

कुछ पानी के बदले तुम्हें लेना हो तो कह दो
दरिया से जो क़तरा[8] कोई देना हो तो कह दो।

मैं यह नहीं कहता हूँ कि पानी मुझे ला दो
तुम आप इसे आन के चुल्लू से पिला दो
मरता है ये मरते हुए बच्चे को जिला[9] दो
लिल्लाह कलेजे की मेरे आग बुझा दो

जब मुँह मेरा तकता है ये हसरत की नज़र से
ऐ ज़ालिमो ! उठता है धुआँ मेरे जिगर से।

बुझती नहीं जब आग कलेजे में लगी हो
जाने वो ही औलाद ख़ुदा ने जिसे दी हो
सोचे वो, क़ज़ा जिसके जिगरबन्द ने की हो
इन्साफ़ करे दिल पे छुरी जिसके चली हो

ग़मगीं[10] हो तो सोज़े - नफ़से - सर्द को समझे
जिस दिल में न हो दर्द, वो क्या दर्द को समझे।

औलाद की फ़ुर्क़त[11] कोई पूछे मेरे जी से
बेटे की मुहब्बत कोई पूछे मेरे जी से
ये दुख, ये मुसीबत कोई पूछे मेरे जी से
इस दर्द की लज़्ज़त कोई पूछे मेरे जी से

---

१. इमाम हुसैन २. ऐ जाहिल लोगो ३. बोलनेवाला क़ुरआन यानी हज़रत मुहम्मद ४. क़ुरआन का छोटा नुसख़ा ५. मुसीबत और दुख को देखो ६. मतलब यह है कि ज़ोहरा के घराने के एक बच्चे को लेकर आया हूँ ७. कलेजे का टुकड़ा ८. पानी की बूँद ९. जीवित कर दो १०. अगर उसने यह दुख सहा हो तो वह इन ठण्डी आहों को समझ सकता है ११. जुदाई

एक यादे[1]-इलाही तो फ़रामोश नहीं है
ये जोश[2] है ग़म का कि मुझे होश नहीं है।

मैं ख़ूब समझता हूँ कि हो ज़ुल्म के बानी
ये क्या है कि फिर तुमसे तलब करता हूँ पानी
जाँ अपनी मैं देता हूँ जो बच जाये ये जानी
मर जाऊँ मैं, पे उसकी बुझे तश्ना[3] दहानी

जब सूए[4]-अदम खल्क़ से मुंह मोड़ के जाऊँ
हसरत[5] है कि दुनिया में इसे छोड़ के जाऊँ।

ये कह के उठाया रुखे[6]-बे-शीर से दामन
चेहरे की तजल्ली[7] से जहाँ हो गया रोशन
देखी जुंही वो चाँद सी ढलकी हुई गर्दन
क्या ज़िक्र भला दोस्त का रोने लगे दुश्मन

हरचन्द के सब ज़ालिम-ो-जल्लाद थे इन में
थर्रा गये जो साहिबे[8]-औलाद थे इन में।

बोला कोई क्या पानी के देने में ज़रर[9] है
मासूम है मज़लूम है और तश्ना[10] जिगर है
बोला कोई बच्चा है तो हो ध्यान किधर है
दुश्मन इसे समझो कि ये दुश्मन का पिसर है

पछताएगा कल आज जो पानी उसे देगा
ये तिफ़्ल[11] जवाँ हो के एवज़[12] बाप का लेगा।

ये सुनके बढ़ा सफ़ से बिने-काहिले[13] बे - पीर
प्यासे अली असग़र के हुई क़त्ल की तदबीर
जोड़ा सितम[14]-ईजाद ने चिल्ले में इधर तीर
छाती तले बच्चे को छुपाने लगे शब्बीर

चिल्लाते थे पैहम[15] कि ये क्या करता है ज़ालिम
बच्चे को जो ताका तो खता[16] करता है ज़ालिम।

कब सुनता था फ़रयाद किसी की सितम आरा
एक तीरे-सितम ताक के मासूम को मारा

१-२. मतलब यह है कि दुःख की अत्यधिकता ने सिवा ख़ुदा की याद के और सब कुछ मुझसे भुलवा दिया है ३. प्यास ४. दुनिया से जब दूसरी दुनिया जाऊँ ५. यह अभिलाषा है कि दुनिया में इस बच्चे को छोड़ जाऊँ ६. चेहरे से ७. रोशनी ८. बच्चोंवाले ९. नुक़सान १०. प्यासा ११. बच्चा १२. बदला १३. दुश्मन की सेना का एक तीरन्दाज १४. जुल्म करनेवाले १५. बराबर १६. ग़लती

ढलकी हुई गर्दन पे लगा तीर क़ज़ारा[1]
बस चौंक पड़ा सहम के वो बाप का प्यारा
अश्क आँखों से शब्नम[2] की तरह रुख़ पे ढल आये
नन्हें से अँगूठे भी दहन[3] से निकल आये।

घबराके सिरी[4] को जो लगे खींचने सरवर[5]
सब ख़ून से कुर्ता भी शलूका भी हुआ तर
थर्राने लगे नन्हें से वो बाज़ुए-अनवर
ढीले हुए हाथों से कड़े, फिर गये तेवर
बेताबी में शह बैठ गये ख़ाक पे हटकर
वो गुंचा दहन मर गया बाबा से लिपटकर।

---

१. अचानक २. ओस ३. मुँह ४. तीर की नोक ५. इमाम हुसैन ६. अर्थात् अली असग़र

मर्सिया : ९

"जब नौजवाँ पिसर शहे-दीं से जुदा हुआ"

जब नौजवाँ पिसर शहे-दीं से जुदा हुआ
रौशन[1] क़मर सिपहरे[2]-बरीं से जुदा हुआ
नूरे-नज़र इमामे[3]-मुबीं से जुदा हुआ
लख़्ते-जिगर हुसैने[4]-हज़ीं से जुदा हुआ

दिल दाग़ हो गया दिलो-जाने-बतूल का
घर बे-चराग़ हो गया सिब्ते[5]-रसूल का।

पीरी में आफ़ते-ग़मे-औलाद अलअमाँ
दिल और ज़ख़्मे-ख़ंजरे-फ़ौलाद अलअमाँ
वो इज़्तराबे[6] - ख़ातिरे - नाशाद अलअमाँ
वो अश्के-शोर और वो फ़रयाद अलअमाँ

बेटा न हो तो ज़ीस्त[8] का फिर क्या मज़ा रहा
जब घर उजड़ गया तो ज़माने में क्या रहा।

रोते हुए हरम में गये क़िब्लए[9]-अनाम्
तर थी लहू से लख़्ते-जिगर की क़बा[10] तमाम
रुख़ ज़र्द, दिल में दर्द, बदन सर्द, तश्नाकाम
ताक़त न क़ल्ब में, न बदन में लहू का नाम

ये दर्द था बुका[11] में कि दिल टुकड़े होते थे
ये हाल था कि रोने पे दुश्मन भी रोते थे।

प्यारे न थे हुसैन अलैहिस्सलाम के
लायी हरमसरा में बहन हाथ थाम के
थर्रा रहे थे पांव शहे[12]-तश्नाकाम के
सर[13] दोश पर था ज़ैनबे-आली मुक़ाम के

फ़रमाते थे बहन, अली अकबर गुज़र गये
हम ऐसे सख़्त-जां हैं कि अब तक न मर गये।

पुरसा तुम्हें शहीद का देने को आये हैं
किस-किस के दाग़ आज जिगर पर उठाये हैं
पीटे हैं, ख़ाक उड़ायी है, आंसू बहाये हैं
ये हम तुम्हारे लाल के ख़ूं में नहाये हैं

---

१. चमकता चांद २. आसमान ३ इमाम हुसैन ४. ग़म के मारे हुसैन ५. रसूल के नवासे (अर्थात् इमाम हुसैन) ६. दिल इस क़दर व्याकुल और दुखी था कि ख़ुदा की पनाह ७. आँसुओं का बहना और फ़रियाद करना कि ख़ुदा की पनाह ८. जीवन ९ इमाम हुसैन १०. लबादा, कपड़े ११. रोने में १२. इमाम हुसैन १३ उनका सिर अपनी बहन ज़ैनब के कन्धे पर था

सर था हुसैने-बेकसो-तन्हा की गोद में
बेटे की जान निकली है बाबा की गोद में।

ये सुन के बीबियों के जिगर पे छुरी चली
ज़ैनब ज़मीं पे गिरके पुकारी कि या अली
[1]सिर्रे ख़फ़ी जहाँ के हैं सब आप पर जली
जाता है सरकशों[2] में ये कौनैन का वली
बेकस को आसरा है पिसर का न भाई का
आक़ा यही तो वक़्त है[3] मुश्किलकुशाई का।

या मुस्तुफ़ा[4] ! बला में फँसा है तुम्हारा लाल
या शेरे - ज़ुलजलाल[5] ! दिखाओ उन्हें जलाल
या फ़ातमा ! मैं लुटती हूँ बिखराओ सर के बाल
या रब ! उलट दे आज ये सब अर्सए[6]-क़ताल
फिर क्या किसी से काम है, सब से जुदा रहूँ
भाई को अपने ले के मैं जंगल में जा रहूँ।

क्या करतीं तुम बहन, अजल आती वतन में गर
यकसाँ है मरने वाले को जंगल हो या कि घर
[7]दरपेश है सफ़र में, हमें ख़ल्क़ से सफ़र
अब आरज़ू ये है कि कटे जल्द तन से सर
हर दुख में ख़ुश हैं वो जिन्हें उल्फ़त ख़ुदा की है
मेरा नहीं, ये सर तो अमानत ख़ुदा की है।

देखा ये कह के बाली सकीना को यास[8] से
लिप्टी वो दौड़कर शहे[9]-गर्दू-असास से
ताक़त न थी कलाम की हरचन्द प्यास से
बोली वो तश्नाकाम शहे हक़-शनास से
क्या इस बला के बन से तहय्या[10] सफ़र का है
सदक़े गयी, बताओ इरादा किधर का है।

फ़रमाया शह ने हाँ ये सफ़र नागुज़ीर[11] है
आओ, गले लगो कि ये सोहबत[12] अख़ीर है

---

१. दुनिया के सारे छिपे भेद आप जानते हैं २. अर्थात् मेरा भाई, जो दोनों जहाँ का सरदार है, सरकश दुश्मनों में जा रहा है ३. यही वक़्त तो मुश्किल में काम आने का है ४. ऐ मुहम्मद मुस्तुफ़ा (मुसलमानों के रसूल) ५. ऐ ख़ुदा के शेर (अर्थात् अली), इन दुश्मनों को अपना जलाल (ग़ुस्सा) दिखाओ। ६ ऐ ख़ुदा, आज तू इस युद्ध-स्थल को तहस-नहस कर दे ७. इस यात्रा में, दुनिया से हमारी यात्रा होनी है ८ निराशा ९. इमाम हुसैन १०. निश्चय करना ११. यह सफ़र टल नहीं सकता १२. यह आख़िरी मुलाक़ात है

अब आरज़ूए[1] - क़ुर्बे - ख़ुदाए - क़दीर है
तन्हा हैं हम सिपाहे-[2]मुख़ालिफ़ कसीर है
तै हो ये मरहला जो इनायत ख़ुदा करे
जिसका न कोई दोस्त हो, बीबी वो क्या करे।

सुनकर मुसीबते[3] - पिदरे - बेकसो - हज़ीं
बोली बलाएँ बाप की लेकर वो मह जबीं[4]
निकलो बला के बन से कहीं या इमामे - दीं
आक़ा, सिवा हुज़ूर के मेरा कोई नहीं
सदक़े गयी मदीने[5] चलो या नजफ़[6] चलो
लिल्लाह साथ ले लो मुझे जिस तरफ़ चलो।

फ़रमाया शह ने सब्र बहन चाहिए तुम्हें
ख़ालिक़[7] की याद सिर्रे - अलन[8] चाहिए तुम्हें
लब पर रज़ा[9] रज़ा का सुख़न चाहिए तुम्हें
जो माँ का था चलन वो चलन चाहिए तुम्हें
हर बार पूछते थे सबब आहे[10] - सर्द का
शिकवा[11] किया अली से न पहलू के दर्द का।

शह ने कहा कि बन्द हैं राहें[12] पिदर निसार
फैली हुई है चार तरफ़ फ़ौजे - नाबकार
पैदल[13] निकलने पाता है नाकों से, न सवार[14]
इस दश्ते[15]-कीं में क़ैद है अहमद का यादगार
क़ासिद[16] जो मेरे नाम का ख़त ले के आते हैं
सर काट कर दरख़्तों पे लटकाये जाते हैं।

घेरा है इस लिए मुझे इस बन में बे-गुनाह
ता मुझ तक आ सके न कोई मेरा ख़ैर-ख़्वाह[17]
न दोस्त न अज़ीज़ न ग़मख़्वार न सिपाह
साथी वो सब अदम[18] में, वतन दूर घर तबाह

---

१. बस अब तो ख़ुदा के पास जाने की अभिलाषा है २. दुश्मनों की सेना बहुत अधिक है ३. बाप की मुसीबत सुनकर ४. अर्थात् सकीना ५. मदीना. जहाँ हज़रत रसूल का मज़ार है ६. नजफ, जिस शहर में हज़रत अली का मज़ार है ७ ख़ुदा ८. अली का चलन ९. ज़ुबान पर बस यही बात कि जो ख़ुदा की मर्ज़ी, जो ख़ुदा की मर्ज़ी १०. ठण्डी आह ११. शिकायत १२. बाप तुम पे क़ुर्बान, रास्ते बन्द हैं १३. अर्थात् फ़ौज का वह सिपाही जो पैदल होता है १४. अर्थात् वह सिपाही जो घोड़े पर सवार होता है १५. दुश्मन के बन में १६. एलची १७. हमदर्द, साथी १८. अर्थात् मर चुके हैं

मुझ सा भी कोई बे-कस-ो-बेपर बशर न हो
मरकर न दफ़्न हों तो किसी को ख़बर न हो।

जाना है दूर, शब[1] को जो आना न हो इधर
ज़िद कर के रोइयो, न हमें चाहती हो गर
पहले-पहल है आज शबे[2]-फ़ुर्क़ते-पिदर
सो रहयो माँ की छाती पे ग़ुरबत[3] से रख के सर
राहत के दिन गुज़र गये अब फ़स्ल और है
अब यूँ बसर करो जो यतीमों[4] का तौर है।

नन्हे से हाथ जोड़ के बोली वो तश्नाकाम
बतलाइये मुझे कि यतीमी है किस का नाम
आँखों से ख़ूँ बहाके ये कहने लगे इमाम
खुल[5] जायेगा ये दर्दो-अलम तुम पे ता ब-शाम
बीबी, न पूछो कुछ ये मुसीबत अज़ीम[6] है
मर जाये जिसका बाप वो बच्चा यतीम है।

ये कहके प्यारी बेटी से देखा इधर उधर
पूछा किधर हैं बानुए-नाशाद-ो-नौहागर
फ़िज़्ज़ा ने अर्ज़ की कि उधर पीटती हैं सर
रुख़सत की भी हुज़ूर की उनको नहीं ख़बर
लब पर घड़ी-घड़ी अली अकबर का नाम है
चलिये ज़रा कि काम अब उनका तमाम है।

रक्खी थी लाके लाशे-पिसर आपने जहाँ
मुँह उस ज़मीं पे मलती हैं औ है लबों पे जाँ
करती हैं उठ के आह तो हिलता है आस्माँ
नारा ये हैं कि हाय मेरा शेरे-नौजवाँ
वारी, गये न क़ब्र में अम्माँ को गाड़ के
जंगल बसा दिया मेरी बस्ती उजाड़ के।

रोते हुए गये जो वहाँ शाहे-ख़ुश-ख़िसाल
देखा कि ग़श हैं, ख़ाक पे बिखरे हुए हैं बाल
शब्बीर बैठकर ये पुकारे ब[7]-सद मलाल
ऐ शह्र बानो, होश में आओ ये क्या है हाल

---

१. रात को २. आज बाप से जुदाई की पहली रात है ३. लाचारी ४. वे बच्चे जिनके बाप मर जायें ५. शाम तक तुम इस मुसीबत का मतलब समझ जाओगी ६. बहुत बड़ी ७. बहुत दुख के साथ

सच है फ़लक[1] ने तुमको बड़े दुख दिखाये हैं
साहिब उठो हम आखिरी रुखसत को आये हैं।

सुनकर सदा हुसैन की चौकी वो नौहागर
की अर्ज़ सर झुकाके क़दम पर ब-चश्मे-तर
तन्हा हुज़ूर आये हैं बांधे हुए कमर
साहिब कहाँ है, मन्नतों वाला मेरा पिसर

ऐसे नहीं जो दुख में जुदा हों वो बाप से
अपने मुरादों वाले को लूँगी मैं आप से।

ऐ जाने-फ़ातमा, मेरा प्यारा किधर गया
अम्माँ की ज़िन्दगी का सहारा किधर गया
वो तीन दिन की प्यास का मारा किधर गया
सैदानियों की आँख का तारा किधर गया

मरती हूँ अपने सर्वे[2]-सही क़द को देख लूं
एक बार फिर शबीहे[3]-मुहम्मद को देख लूं

बातें ये सुनके कहने लगे शाहे-बहर-ो-बर
या रब, जुदा न हो किसी माँ से जवाँ पिसर
बानो, किसे बुलाऊँ कहाँ है वो सीमबर[4]
हम-शक्ले-मुस्तुफ़ा तो गये फ़ातमा के घर

हर दुख में सब्र करते हैं जो हक़शनास[5] हैं
जिसने तुम्हें दिया था वो अब उसके पास हैं।

जागे हुए थे रात के नींद आ गयी उन्हें
हय हय मुनाफ़िक़ों[6] की नज़र खा गयी उन्हें
[7]मख़्फ़ी बहुत किया पे अजल पा गयी उन्हें
सहराए-कर्बला की फ़ज़ा[8] भा गयी उन्हें

ज़िन्दा न होगा लाल अगर मर भी जाओगी
बानो, कोई घड़ी में हमें भी न पाओगी।

दामन पकड़के शाह का बोली वो दिलफ़िगार[9]
ऐ इब्ने-फ़ातमा, ये कनीज़ आप के निसार

---

१. आसमान २. सर्व-जैसे क़दवाले ३. मुहम्मद-जैसी सूरतवाले अर्थात् अली अकबर ४. चांदी-सा शरीरवाला ५. जो ख़ुदा को पहचानते हैं ६. जाहिर में मुसलमान, दिल में ख़ुदा और उसके आदेशों को न माननेवाला ७. बहुत छिपाया मगर मौत ने उन्हें ढूंढ़ लिया ८. अर्थात् कर्बला पसन्द आ गयी ९. जिसका दिल ज़ख़्मी है

बाद आपके जो लूटने आयें, सितम-शिआर[१]
बैठे कहाँ ये बे[२]-कस-ो-ग़मगीन-ो-सोगवार
कुछ हक़ में इस कनीज़ के फ़रमाके जाइये
साहिब, किसी जगह मुझे बिठलाके जाइये।

फ़रमाया शह ने हाफ़िज़[३]-ो-हामी है ज़ुल-जलाल[४]
ज़ोहरा की बेटियों की रहो तुम शरीके-[५]हाल
ज़ैनब को देखो सर पे न भाई न दोनों लाल
साहिब तुम्हारे साथ है आबिद सा ख़ुश-ख़िसाल[६]
बे-वारिसों का वारिस-ो-वाली इलाह[७] है
देखो डिगे न पाँव कि मुश्किल की राह है।

लो अलविदाअ,[८] लाश पे अब आके रोइयो
लेकिन न ख़ाक उड़ाके न चिल्लाके रोइयो
ज़ानू पे सर को शर्म से निव्हड़ा के रोइयो
क़ब्रे-रसूले-पाक पे हाँ जाके रोइयो
लुटने में सब्र शुक्र तबाही में चाहिए
रोना बशर[९] को ख़ौफ़े-इलाही[१०] में चाहिए।

ये सुन के हश्र[११] हो गया, फ़रयाद-ो-आह से
सैदानियाँ लिपट गयीं ज़ोहरा के माह से
ठहरा गया न फिर शहे-आलमपनाह से
निकले हुसैन रोते हुए ख़ेमागाह से
चौथा फ़लक[१२] ज़िया से ज़ुलूख़ाना बन गया
ख़ुर्शीद[१३] शम्मे-हुस्न का परवाना बन गया।

लो अब सवार होता है ज़ोहरा का यादगार
थामे रकाब कौन, न यावर न ग़मगुसार
रोकर फ़रस[१४] से कहते हैं शब्बीरे-नामदार
ऐ ज़ुलजिनाह[१५], देख ये नैरंगे-रोज़गार
सब दोपहर में इब्ने-अली से जुदा हुए
जो तेरे गिर्द रहते थे वो दोस्त क्या हुए।

सब दोस्त बेमिसाल थे रोऊँ किसे किसे
ख़ुश-रू थे बाकमाल थे रोऊँ किसे किसे

---

१ जालिम लोग २. बेसहारा, ग़मज़दा ३. रक्षक एवं मददगार ४. ख़ुदा ५. साथ रहो ६. नेक ७. ख़ुदा ८. रुख़सत, विदाई ९. इन्सान १०. ख़ुदा का ख़ौफ़ (भय) ११. क़यामत १२ जमीन से लेकर चार आसमान तक नूर से रोशन हो गये १३. मानो सूरज जो था वह हुसैन के सौन्दर्य पर पतंगा बनकर न्योछावर होने लगा १४-१५. घोड़ा

हैदर के पाँच लाल थे रोऊँ किसे किसे
सात आठ ख़ुर्दसाल[1] थे रोऊँ किसे किसे
ख़ैर उन के प्यासे मरने के जब जिक्र होएँगे
सब मेरे दोस्त मेरे एवज़[2] उन को रोयेंगे।

मरता है एक दोस्त किसी शख़्स का अगर
वो शख़्स उसके हिज्र[3] में रोता है उम्र भर
एक दिन में साफ़ हो गया मेरा तो घर का घर
क्या दूर है जो मर के भी सीधी न हो कमर
इस घर में जितने घर हैं वो सब बेचिराग़ हैं
मेरे तो एक कलेजे पे अट्ठारह दाग़ हैं।

वो शान वो शिकोह, वो शौकत जनाब की
अल्लाह री ज़ौ[4], झपकती थी आँख आफ़ताब की
तसवीर थी जनाबे-रिसालत-मआब की
पीरी दिखा रही थी लताफ़त[5] शबाब की
बर[6] में नबी का जामए[7]-अम्बर शमामा है
रंगत तो फूल सी है गुलाबी अमामा है।

रन में सवारिए-शहे[8] जिन्नो-बशर चली
पीछे तमाम फ़ौजे-मलक[9] नंगे सर चली
घोड़े के साथ फ़ातमा थामे जिगर चली
[10]शबदीज़ क्या चला कि नसीम-सहर चली
लो गूंजता है शेर रजज़ख़्वाँ[11] हैं शाहे-दीं
नारा ये है कि हैं हमीं पुश्तो-पनाहे-दीं।

क्यों ज़ालिमो, रसूल का प्यारा नहीं हूँ मैं
क्यों, अर्शे-किब्रया[12] का सितारा नहीं हूँ मैं
क्यों, मुस्तहिक़े[13]-लुत्फ-ो-मदारा नहीं हूँ मैं
क्यों जाहिलो, इमाम तुम्हारा नहीं हूँ मैं
सैयद पे ज़ुल्म, कौन सी ये रस्म[14]-ो-राह है
क्या मेहमाँ को पानी का देना गुनाह है।

---

१. छोटे बच्चे २. बदले में ३. जुदाई ४. ऐसा तेज़ था कि सूरज की भी आँख झपक जाये ५. बुढ़ापे में जवानी की शान थी ६. शरीर पर ७. ऐसा लिबास जिसमें से ख़ुशबू उठ रही हो ८. अर्थात् इमाम हुसैन की सवारी ९. फ़रिश्तों की सेना १०. घोड़े की चाल ऐसी थी जैसे सबेरे की वायु हो ११. बहादुरी के शेर पढ़ना १२. ख़ुदा के आसमान १३. मैं मेहरबानी और कृपा का हक़दार नहीं हूँ १४. आदत

करता है पासदारिए[१] मेहमान हर बशर
मिलते हैं उससे झुकके जो आता है अपने घर
आजिज़[२] भी लाके सामने रखता है माहज़र[३]
फ़ाक़ा है तीसरा हमें औ तुम हो बे-ख़बर
[४]बुस्ताने - कर्बला में हवा ये बुरी चली
पानी क्या तलब तो गले पर छुरी चली।

सुन कर बयाने-शाह फ़सीहों[५] ने सर झुकाये
कितनों ने फेर - फेर के मुँह अश्क भी बहाये
अक्सर सफ़ों में शोर ये उट्ठा कि हाय हाय
क्यों हम रसूले[६] हक़ के नवासे से लड़ने आये
[७]ख़म कर के गरदनें असे-शिम्र टल गये
[८]फ़ौलाद नर्म हो गया पत्थर पिघल गये।

[९]तेग़े-दुसर को रोक के हज़रत ने ये कहा
बेकस से किस तरह तुम्हें मंजूर है वग़ा[१०]
आओ अरब की तरह जो है क़स्द जंग का
सब मिल के गर लड़ो तो फिर इसमें है देर क्या
दुनिया से वक़्ते-अस्र[११] गुज़रना है हर तरह
हाज़िर मैं हर तरह हूँ कि मरना है हर तरह।

सर को न सर न जान को हम जाँ समझते हैं
हर हुक्मे-किर्दिगार को ईमाँ समझते हैं
मुश्किल हज़ार हो उसे आसाँ समझते हैं
हम एक और लाख को यकसाँ समझते हैं
इस मार्के[१२] में खेत पड़े हैं इसी तरह
बच्चे हमारे तुमसे लड़े हैं इसी तरह।

ये ज़िक्र था कि तीर चले उस सिपाह से
गेती को ज़लज़ला हुआ ज़ोहरा[१३] की आह से
फिर ज़ब्त हो सका न शहे-दींपनाह से
बिजली गिरी सफ़ों पे ग़ज़ब[१४] की निगाह से

---

१. मेहमान का खयाल हर इन्सान करता है २. ग़रीब भी ३. जो भी हाजिर हो (खाना) ४. कर्बला के बाग़ में ५. मधुर वाणी वाले लोग ६. ख़ुदा के रसूल अर्थात् हजरत मुहम्मद ७. गरदन झुकाकर ८. लोहा ९. दुधारी तलवार १०. लड़ाई चाहते हो ११. तीसरे पहर का वक़्त जब अस्र की नमाज़ होती है १२. लड़ाई १३. इमाम हुसैन की माँ का नाम १४. ग़ुस्से की नज़र से

चमकी अली की तेग़ जो दश्ते-मसाफ़[1] में
परियाँ छुपीं जज़ीरों में सीमुर्ग़[2] क़ाफ़[3] में।

पहुँचे जो मिस्ले-शेर झपटकर इधर उधर
सर गिर पड़े तराई में कटकर इधर उधर
आया गया फ़रस[4] जो सिमटकर इधर उधर
ढालों का अब्र रह गया फटकर इधर उधर

जारोब[5] थी कि सैफ़[6] म्याने-मसाफ़ थी
दरिया की राह हमलए-अव्वल में साफ़ थी।

अल्लाह री शान ! वाह रे हमले जनाब के
ख़ाक उड़ गयी जिधर गये घोड़े को दाब के
दिखला दिये वग़ा में चलन बूतराब के
फ़तराक[7] थे कि पर फ़रसे-लाजवाब के

पुतली जिधर सवार ने फेरी ये मुड़ गया
उतरा बुराक़ बन के परी हो के उड़ गया।

अल्लाह रे तलातुमे[8]-अफ़वाजे[9]-रूस्याह
टकराते थे, पे मिलती न थी भागने की राह
ग़ुल था पनाह[10] दे हमें, ऐ आसमांपनाह
उम्मत रसूले-पाक की होती है अब तबाह

बख़्शो ख़ता ये काम है मौला सवाब का
सदक़ा मुहम्मदे-अरबी की जनाब का।

इस शोर में सुना जो रसूले-ख़ुदा का नाम
पढ़कर दरूद आपने बस रोक ली हिसाम[11]
फ़रमाया ख़ैर लेगा ख़ुदा तुमसे इन्तक़ाम
आजिज़[12] नहीं, ये बेकस-ो-मज़लूम-ो-तश्नाकाम

क्या चीज़ सर है, बात पे हम लोग मरते हैं
देखो इस इख़्तियार[13] पे यूं सब्र करते हैं।

मैं क्या लड़ूंगा ग़म से लहू है मेरा जिगर
आंखों के आगे ख़ाक पे है लाशए-पिसर

---

१. शीशे की तरह साफ़ मैदान २. सीमुर्ग़, एक प्रकार का पक्षी जो बहुत प्रसिद्ध है ३. क़ाफ़, काकेशिया (रूस) के उत्तर में एक प्रसिद्ध पर्वत ४. घोड़ा ५. झाड़ू ६. तलवार एक झाड़ू की तरह फ़ौजों की सफ़ों को साफ़ कर रही थी अर्थात् दुश्मनों को ख़तम कर रही थी ७. तसमा जो ज़ीन के दाहिने और बायें लटकाते हैं, शिकार को बांधने के वास्ते ८. तूफ़ान ९. सेनाएं १०. अर्थात् मुआफ़ कर दे ११. तलवार १२. अर्थात् मैं किसी बात से मजबूर नहीं हूं १३. जिस को हर चीज़ करने का इख़्तियार हो या जो हर काम अपनी मर्ज़ी से कर सकता हो

बाज़ू के ग़म में टूट गयी है मेरी कमर
सर हो ये मरहला जो कटे तन से जल्द सर
हसरत है ये कि तेग़ों से तन पाश[1] पाश हो
जब ज़ब्ह हों तो पहलुए-अकबर में लाश हो।

भागो न, लो न्याम[2] में रखता हूँ मैं हिसाम
मुश्ताक़े[3]-क़ुर्बे-हक़ है ये मज़लूम-ो-तश्नाकाम
दुनिया से अब ग़रज़ है न कुछ ज़िन्दगी से काम
हाज़िर है सर फ़क़ीर का क्या कूच क्या मुक़ाम
बैठे नहीं ज़मीं पे ख़ज़ाने को गाड़ के
मौत आयी उठ खड़े हुए दामन को झाड़ के।

पलटे ये सुन के भागे हुए रूसियाह[4] आह
अब्रे[5]-सितम में घिर गया ज़ोहरा का माह आह
एक तश्ना[6]-लब पे टूट पड़ी सब सिपाह आह
दो लाख हर्बे[7] एक तने-ज़ार आह आह
सब कुछ था इख़्तियार पे मजबूर हो गये
शब्बीर सर से ता-ब-कदम चूर हो गये।

वो लू वो आफ़ताब की ताबिन्दगी[8] वो बन
झीलों में शेर हांपते थे दश्त में हिरन
रोने की चार सू थी सदा बोलता था रन
ग़ुल था ख़ुदापरस्तों के लाशे हैं बेकफ़न
आंधी में ख़ाक उड़ती थी घोड़ों के गश्त से
आवाज़ "हाय हाय" की आती थी दश्त से।

जिस रोज़ था ये हश्र ये मातम ये शोरो-शर
आ पहुँचा एक मुसाफ़िरे-ग़ुर्बतज़दा[9] इधर
निकला था घर से शौक़े-नजफ़ में वो ख़ुश[10]-सियर
छोड़े हुए वतन उसे गुज़रा था साल भर
[11]बेख़ानुमाँ को इश्क़ ख़ुदा के वली का था
मुश्ताक़ वो ज़ियारते-क़ब्रे-अली का था।

पहुँचा जो कर्बला में तो देखा ये उसने हाल
तन्हा खड़ा है एक मुसाफ़िर लहू में लाल

---

१. टुकड़े-टुकड़े २. म्यान, जिस में तलवार रखी जाती है ३. ख़ुदा के पास जाने का शौक़ है ४. काले मुंहवाले दुश्मन ५ ज़ुल्म के बादलों में ज़ोहरा का चांद (हुसैन) घिर गये ६. प्यासे ७. हमले ८. सूरज की चमक, सूरज की तेज़ी ६. एक मुसाफ़िर जिससे वतन (मातृभूमि) छूटा हुआ था १०. नेकदिल ११. इस बेघर को अली से बहुत मुहब्बत थी

फौजें सितम की गिर्द हैं आमादए-[1]क़ताल
चलते हैं तीर पानी का करता है जब सवाल
[2]अज़बसके अहले-दर्द था बेताब हो गया
पानी के माँगने पे जिगर आब हो गया।

थमकर जो उसने ग़ौर से लाशों पे की नज़र
देखा है कोई शम्स[3] कोई ग़ैरते-क़मर[4]
बच्चा पड़ा है एक सितारा सा ख़ाक पर
कुर्ता भी हँसलिया भी शलूका भी ख़ूं में तर
सुर्ख़ी लहू से हल्क़ के सेबे[5]-ज़क़न में है
बाछों में सब है दूध अँगूठा दहन में है।

बरपा है एक सिम्त[6] जो ख़ेमा फ़लक[7] वकार
आती है पीटने की सदा उससे बार-बार
चिल्ला रही है ड्योढ़ी पे यूँ कोई सोगवार
सदक़े मैं तेरे, ऐ मेरे बाबा की यादगार
काँपा कलेजा थम के सुना जब दुहाई को
समझा के रो रही है बहन अपने भाई को।

दो चार गाम[8] बढ़के ये सोचा वो नामवर[9]
मज़लूम की दुआ में है सब तरह का असर
वल्लाह[10] बरगज़ीदए-हक़ है वो ख़ुश-सियर
करलीजे इल्तमास[11] दुआ हाथ बाँध कर
तेग़ों में उसके पास चलो जो ख़ुदा करे
आसाँ हों मुश्किलें जो ये बेकस दुआ करे।

बातें ये करके दिल से बढ़ा वो असीरे[12]-ग़म
लाशों को देख-देख के रोता था दम-ब[13]-दम
हातिफ़ ने दी निदा कि समझकर उठा क़दम
रुतबे में ये ज़मीं भी नहीं कुछ नजफ़ से कम
आँखें मलक बिछाते हैं इस अर्ज़[14]-पाक पर
ये सब वरक़ हैं मुसहफ़े[15]-नातिक़ के ख़ाक पर

---

१. क़त्ल करने को तैयार २. उसके दिल में बहुत दर्द और हमदर्दी की भावना थी ३. सूरज ४. ऐसा हुसैन जिसे देख कर चांद को शर्म आये ५. ठुड्डी का गड्ढा ६. एक तरफ़ ७ आसमान जैसी इज़्ज़तवाला ८. क़दम ९. नामवाला १०. ख़ुदा गवाह है कि यह नेक आदमी ख़ुदा तक पहुँचा हुआ है ११. प्रार्थना १२. ग़म में घिरा हुआ १३. बार-बार १४ पवित्र भूमि १५. बोलता क़ुरआन (अर्थात् हज़रत रसूल) का वंश ख़त्म हो रहा है

आया जो काँपता हुआ वो शाहे[1]-दीं के पास
की अर्ज़ "अस्सलामुअलैक" ऐ फ़लक-असास[2]
मौला जवाब देके ये बोले ब दर्द-ो[3]-यास
आना हुआ किधर से तेरा, ऐ ख़ुदाशनास
अर्ज़ उसने की ग़ुलामे[4]-शहे-ज़ुलफ़िक़ार हूँ
बेकस हूँ बे-नवा हूँ ग़रीबुद्दयार[5] हूँ।

मैं दो महीने फ़ौजे-सितम में रहा असीर
मौला अली के नाम के दुश्मन हैं ये शरीर
हथियार लेके आ नहीं सकता है राहगीर[6]
तब क़ैद से छुटा हूँ कि जब हो गया फ़क़ीर
सर पर यही कुलाह यही एक लिबास है
पर हूँ ग़नी[7] कि दौलते-दीं मेरे पास है।

दो साहिबों के शौक़ में छोड़ा है मैंने घर
हसरत ये है नसीब करे यावरी[8] अगर
पहले तो हूँ नजफ़[9] की ज़ियारत से बहरावर
मंज़ूर फिर वहाँ से मदीने का है सफ़र
जाऊँगा दौलतें हैं अगर सरनविश्त[10] में
रस्ते में मौत आयी तो पहुँचा बहिश्त में।

फ़रमाया आपने कि मदीने में क्या है काम
अर्ज़ उसने की वोही तो है दुनिया में एक मुक़ाम
उस सरज़मीं पे है मेरा आक़ा मेरा इमाम
बरसों से जिस के इश्क़ में रोता हूँ सुबह-ो-शाम
हैदर के जान-ो-दिल हैं शाहे-मशरक़ैन हैं
सदक़े मैं उस जगह के वहीं तो हुसैन हैं।

क्या दिन सईद[11] होगा मैं उस रोज़[12] के निसार
जिस रोज़ उनके गिर्द फिरूँगा मैं सात बार
चूमूँगा दोनों हाथ बसद[13] इज्ज़ो-इफ़्तख़ार
आँखें क़दम पे झुकके मलूँगा ब-इन्किसार
दुनिया हो और फ़ातमा का नूरे[14]-ऐन हो
देखूं उन्हें सहीह[15]-ो-सलामत तो चैन हो।

---

१. इमाम हुसैन २. ऐ आसमान-जैसे ऊँचे ३. निराशा और ग़म के साथ ४. हज़रत अली ५. जिस का वतन (मातृभूमि) छूट गया हो ६. मुसाफ़िर ७. धनवान हूं कि मेरे पास ईमान की सम्पत्ति है ८. क़िस्मत साथ दे तो ९. नजफ़ देखना मिले १०. क़िस्मत में ११. नेक १२. दिन १३. सगर्व तथा सविनय १४. आँखों का नूर (बेटा) १५. जिन्दा सलामत

दुश्मन बहुत इमाम के हैं और दोस्त कम
उम्मत दग़ा करे न कहीं है मुझे ये ग़म
अब पंजतन[1] में है तो उन्हीं का है एक दम
उज़लत[2] गज़ीं है क़ब्रे-नबी पर वो ज़ीहशम
ज़िन्दा हैं गर हुसैन तो ज़िन्दा हैं चार दम
[3]या रब, इस एक दम को अता कर हज़ार दम।

एक मेरा शाहज़ादा है हम-शक्ले-मुस्तुफ़ा
शोहरा है जिसकी [4]शक्ल-ो-शुमाइल का जा-ब-जा
माँ का मुरादों वाला पिसर है वो मह-लक़ा
साये में शह के उसको सलामत रखे ख़ुदा
इस [5]रश्के-गुल से दूर ख़िज़ाँ[6] की बला रहे
या रब चमन हुसैन का फूला-फला रहे।

ये सुन के आप आये मुसाफ़िर के मुत्तसिल[7]
फैलाके दोनों हाथ कहा, आ गले तो मिल
हाँ भाई सच है, सदमए[8]-फ़ुर्क़त है जाँगुसिल
इस दम बहल गया तेरे आने से मेरा दिल
ताक़त कलाम की नहीं पाता ये ज़ोफ़[9] है
चेहरा तेरा नज़र नहीं आता ये ज़ोफ़ है।

किस से कहें कि हम पे जो सदमा गुज़र गया
ख़ाली हुआ अज़ीज़ों से घर दश्त भर गया
दुनिया से दोपहर में मेरा घर का घर गया
बेटा जवान क़त्ल हुआ भाई मर गया
बनती नहीं जब आती है क़िस्मत बिगाड़ पर
टुकड़े हो, गिर पड़े ये मुसीबत पहाड़ पर।

मेरा है अब ये हाल कि ज़ख़्मों से चूर हूँ
जंगल में मौत आयी है बस्ती से दूर हूँ
एक ख़ाकसार बन्दए-रब्बे[10]-ग़फ़ूर हूँ
आलिम[11] है उसकी ज़ात कि मैं बेक़सूर हूँ

---

१. अर्थात् हज़रत मुहम्मद, हज़रत अली, फ़ातमा, हसन और हुसैन २. नबी की क़ब्र पर वह शानवाला (हुसैन) पनाह लिये हुए हैं ३. ऐ ख़ुदा ! वह सदैव सलामत रहे ४. सूरत-शक्ल ५. जिस पर फूल को रश्क आये ६. पतझड़ का मौसम अर्थात् तबाही ७. पास ८. जुदाई का ग़म जानलेवा होता है ९. कमज़ोरी १०. मैं तो ख़ुदा का एक बहुत छोटे दर्जे का ग़ुलाम हूँ ११. अर्थात् ख़ुदा जानता है कि मेरा कोई दोष नहीं

कहने में बात आती है, ये कुछ गिला नहीं
दिन तीसरा है आज कि पानी मिला नहीं।

अर्ज़ उसने की, हुज़ूर से बस है ये इल्तजा[1]
कीजे उठा के हाथ मेरे हक़[2] में ये दुआ
पहुँचा दे मुझ को क़ब्रे-अली पर मेरा ख़ुदा
मौला ने आसमाँ की तरफ़ देखकर कहा
जिसको नहीं ज़वाल[3] वो दौलत नसीब हो
या रब इसे अली की ज़ियारत नसीब हो।

तसलीम[4] उसने की तो ये बोले शहे-अनाम
क़ब्रे अली पे जाके ये कहना मेरा पयाम
आते हैं आप दर्दो-मुसीबत में सब के काम
मैं बकस-ो-ग़रीब भी हूँ आप का ग़ुलाम
तन्हा हूँ दुश्मनों में ख़बर आके लीजिये
[5]हंगामे-ज़ब्हा गोद में सर आके लीजिये।

सुनकर बयाने-शाह रही ज़ब्त[6] की न ताब
आँसू बहाके सर को झुकाया बसद हिजाब[7]
दिल से कहा कि अब है लबे[8]-बाम आफ़ताब
बेकस के काम आओ कि इसमें भी है सवाब
अहसाँ[9] का या एवज़ है कि अहसान कीजिये
अब सर अली के नाम पे क़ुरबान कीजिये।

हज़रत[10] से अर्ज़ की कि न जायेगा अब ग़ुलाम
बस जी चुके बहुत यही मरने का है मुक़ाम
अब दीजिये रज़ा कि बढ़ूँ खींचकर हिसाम[11]
वो काम चाहिए कि रहे ता ब-हश्र[12] नाम
दींदार[13] हूँ न तर्के-रिफ़ाक़त करूँगा मैं
अब मरके शेरे[14]-हक़ की ज़ियारत करूँगा मैं।

घबरा के बोले शाह कि हा हा क़सम न खा
रस्ता है याँ से रात[15] का बसे नजफ़ को जा

---

१. बिनती २. मेरे वास्ते ३. वह दौलत जो समाप्त न हो, ४. सलाम किया ५. जब दुश्मन मुझे ज़ब्ह करें तो मेरा सिर अपनी गोद में ले लीजियेगा ६. सहन, बर्दाश्त ७. लज्जा से ८. अर्थात् उम्र की आख़िरी मंज़िल आ गयी ९. एहसान का बदला एहसान है १०. इमाम हुसैन ११. तलवार १२. क़यामत तक नाम श्रद्धा से लिया जाये १३. मैं धार्मिक आदमी हूँ, आप से अलग न होऊँगा १४. हज़रत अली १५. रात-भर का

बचना मेरा महाल[1] है गर जान दी तो क्या
ऐ भाई, तू है साहिबे-दुख़्तर[2] न ले रज़ा
दामन को आँसुओं से भिगोती है रात - दिन
बेटी तेरी, तेरे लिए रोती है रात - दिन।

रुख़्सत के वक़्त वो जो बिलकती थी दम[3]-ब-दम
वादा किया था तूने कि जायेंगे जल्द हम
मरती है इन्तज़ार में वो साहिबे[4]-अलम
आलूदा[5] इस अलम में हूँ मैं भी असीरे-ग़म
हिजराँ[6] कशीदा रंजो-बला-ो-महन में है
बीमार एक मेरी भी बेटी वतन में है।

बेटी का ज़िक्र सुनके ये बोला वो खुशख़िसाल[7]
फ़रमाइये, जनाब से किस ने कहा ये हाल
आगाह इससे कोई नहीं ग़ैरे[8]-ज़ुल जलाल
शायद है इल्मे[9]-ग़ैब में भी आप को कमाल
[10]हर शै का इल्म आपको इस बेकसी में है
ये तो सिफ़त इमाम में है या नबी में है।

क़दमों पे लोटकर ये पुकारा वो दर्दनाक
इज़हारे[11]-इस्मे-अक़दसे-आला में क्या है बाक
बतलाइये कि ग़म से मेरा दिल है चाक चाक
चुप हो गये तड़पने पे उसके इमामे-पाक
ये तो न कह सके कि शहे[12]-मशरक़ैन हूँ
मौला ने सर झुका के कहा "मैं हुसैन हूँ"।

सर अपना पीटकर वो पुकारा बशोरो[13]-शैन
हय हय ये क्या ज़ुबाँ से कहा, कौन सा हुसैन
आयी निदा फ़लक[14] से कि ज़ोहरा का नूरे[15]-ऐन
बेटा अली का सिब्ते[16]-शहन्शाहे-मशरक़ैन
घर फ़ातमा का लुट गया सब इस लड़ाई में
बस एक यही हुसैन है सारी खुदाई में।

---

१. बहुत मुश्किल २. बेटीवाला ३. हर वक़्त, बराबर ४. मुसीबत की मारी ५. इसी ग़म में मैं भी ग़म का मारा गिरफ़्तार हूँ ६. विरह की मारी, रंज और मुसीबत में फँसी ७. नेक आदमी ८. ख़ुदा के अतिरिक्त ९. क्या परोक्ष की बातें भी आप जानते हैं १०. इस हाल में भी आपको सब की खबर है ११. अपना शुभ नाम मुझे बताइये १२. सारी दुनिया का बादशाह हूँ १३. रो-रोकर १४. आसमान से आवाज़ आयी १५. ज़ोहरा का बेटा १६. मुहम्मद का नवासा

खींची है तूने जिसके लिए ज़हमते[१] - सफ़र
ऐ बेख़बर, यही है वो सुल्ताने[२]-बहर-ो-बर
[३]वीराँ है यसरब-ो-नजफ़, ऐ मर्दे-खुश-सियर
शब[४] से यहाँ नबी-ओ-अली हैं बरहना[५] सर
ज़ैनब ये है जो ड्योढ़ी पे जाँ अपनी खोती है
जोहरा तो सातवीं से इसी बन में रोती है।

इस बे-वतन ने जब कि मुफ़स्सल[६] सुना ये हाल
ग़श खाके पाए[७]-शह पे गिरा वो निकू ख़िसाल
उट्ठा तड़पके जब तो पुकारा बसद मलाल
ये क्या क़यामत आ गयी, ऐ फ़ातमा के लाल
क्या थी ख़बर कि आप इस आफ़त के बन में हैं
मैं तो ये जानता था कि हज़रत वतन में हैं।

मुद्दत से थी मुझे तो ज़ियारत की आरज़ू
ख़ूबी[८] मेरे नसीब की, या शाहे-नेक ख़ू !
अब दीजिये रज़ा[९] कि जिगर ग़म से है लहू
मर जाऊँ लड़के फ़ौज से हज़रत के रूबरू[१०]
[११]लिल्लाह चश्मे-पाक को पुरनम न कीजिये
[१२]अब इस ग़ुलाम-ज़ादे को कुछ ग़म न कीजिये।

रोका बहुत मगर कहीं रुकता था वो दिलैर
तलवार लेके फ़ौज पे झपटा मिसाले - शेर
सैरे-जिनाँ के शौक़ में था ज़िन्दगी से सेर
ऐसा लड़ा कि रन में हुए ज़ख़्मियों के ढेर
दम भर रहा था इश्क़े-शहे - मशरक़ैन के
नारा था दम-बदम कि तसद्दुक़ हुसैन के।

इस बेवतन पे टूट पड़ी जब सिपाहे-शाम
रेती पे टुकड़े हो के गिरा वो फ़लक[१३] मुक़ाम

---

१. यात्रा का कष्ट झेला है २. जल व थल का बादशाह ३. ऐ नेक इन्सान, आजकल नजफ़ और मदीना सब वीरान पड़े हैं ४. रात से ५. नंगे सिर ६. विस्तारपूर्वक ७. बेहोश होकर हुसैन के पैरों के पास वह नेक आदमी गिर गया ८. यह मेरी किस्मत है, ऐ बड़े मर-बेत़ाले बादशाह हुसैन ९. आज्ञा दीजिये कि दिल दुःख से ख़ून हो रहा है १०. सम्मुख ११. ख़ुदा के वास्ते आप आँसू न बहायें १२. मैं और मेरा बाप आपके ग़ुलाम हैं, मेरा ग़म न कीजिये १३. ऊँचे दर्जे वाला

ज़ख्मी थे ख़ुद, पे उस के सरहाने गये इमाम
गोदी में लेके ज़ानू पे रक्खा सरे-ग़ुलाम
रोकर पुकारते थे ये इस ख़ुशनसीब को
ऐ भाई जान, छोड़ चले इस ग़रीब को।

ऐ मेरी बेकसी के मददगार, अलविदा[१]
ऐ तश्ना[२]-लब हुसैन के ग़मख़्वार, अलविदा
ऐ बेवतन के यारे-वफ़ादार, अलविदा
ऐ शेरे[3]-ज़ुलजलाल के ज़ुव्वार, अलविदा
जो ख़ुशनसीब हैं यूँ ही जन्नत को जाते हैं
घबराइयो न, हम भी तेरे बाद आते हैं।

फरमाके ये हुसैन तो रोते थे ज़ार ज़ार
हँसता था दोनों आँखों को खोले वो ज़ी[४]-वक़ार
पूछा सबब ख़ुशी का तो बोला वो दिलफ़िगार[५]
ऐ नूरे-चश्मे[६]-अहमदे - मुरसिल तेरे निसार
जलवा[७] ख़ुदा के नूर का है मेरे सामने
मुश्ताक़ जिनका था उन्हें देखा ग़ुलाम ने।

बालाए[८]-सर खड़े हैं रसूले-फ़लक मुक़ाम
"फ़र्ज़न्द" कहके लेते हैं शफ़क़त से मेरा नाम
दस्ते[९]-अली में चश्मए-कौसर के दो हैं जाम
फ़रमाते हैं कि पी इसे, गर तू है तश्नाकाम
नाजी[१०] है दोस्तदार मेरे नूरे-ऐन का
हिस्सा तेरा ये है तो ये हिस्सा हुसैन का।

रोने लगा ये शाह से कहकर वो तश्ना-लब
फ़रमाया शाह ने कि है रोने का क्या सबब[११]
की अर्ज़ उसने[१२] ऐ खलफ़े-सैयदुल-अरब
तन्हाइए[13]-हुज़ूर का सदमा है दिल पे अब
रुख़सत[१४] जो तन से रूह की है बेक़रार हूँ
मोहलत[१५]जो दे अजल तो फिर उठकर निसार हूँ।

---

१. रुख़सत २ प्यासे हुसैन के मदद करनेवाले ३. अली की जियारत करनेवाले ४. इज्जतवाला ५. जिसका दिल जख़्मी था ६. अर्थात् इमाम हुसैन ७. मेरे सामने तो ख़ुदा के नूर का जलवा है ८. मेरे सिरहाने रसूल खड़े हैं ९. अली के हाथ में जन्नत की नहर से भरे दो प्याले हैं १०. मेरे बेटे का दोस्त जन्नत में जायेगा ११. वजह १२. ऐ रसूल के नवासे १३. आप के अकेलेपन का सदमा है १४. मेरी जान जो निकल रही है, इसलिए परेशान हूँ १५. अगर मौत फ़ुरसत दे तो फिर उठकर आप पर निछावर हो जाऊँ

मुझको है ग़म हुज़ूर का हज़रत को ग़म मेरा
अब कूच[1] जल्द है सुए-मुल्के-अदम[2] मेरा
मुँह ढाँप दीजिये शहे-आली[3] हुमम मेरा
पढ़िए कोई दुआ कि निकलता है दम मेरा
क्या वक़्ते-बेकसी है हमारे हुज़ूर पर
किससे कहूँ जो लाश को वारे हुज़ूर पर।

ये कहते कहते आह वो ज़ुव्वार[4] मर गया
बेकस का बेवतन का, मददगार मर गया
शैदाए-नामे-हैदरे[5] कर्रार मर गया
शब्बीर रोते रह गये ग़मख़्वार मर गया
लाशे से उठके जा न सके ख़ेमागाह में
फिर घिर गये हुसैन उदू[6] की सिपाह में।

बस क्या कहूँ 'अनीस' कि सैयद पे क्या हुआ
तड़पे हुसैन शोरे-क़यामत बपा हुआ
बर्बाद ख़ानदाने-रसूले-ख़ुदा हुआ
सजदे में तन से फ़र्क़े-मुबारक[7] ख़ुदा हुआ
पुर-ख़ूं क़बाए-सैयदे-लौलाक लुट गयी[8]
उर्यां[9] हुसैन रह गये पोशाक[10] लुट गयी।

---

१. सफ़र २. दूसरी दुनिया ३. अर्थात् इमाका हुसैन ४. ज़ियारत करने वाला ५. अली के नाम का शैदा ६. दुश्मन ७. सिर मुबारक ८. हुसैन का सारा लिबास ख़ून में तर हो गया ९. नंगे १०. लिबास

मर्सिया : १०

"जब ख़ातिमा बख़ैर हुआ फ़ौजे-शाह का"

हज़रत इमाम हुसैन
की शहादत का वर्णन

जब ख़ातिमा[1] बख़ैर हुआ फ़ौजे-शाह का
कौसर पे क़ाफ़िला गया प्यासी सिपाह का[2]
घर लुट गया जनाबे-रिसालत[3] पनाह का
ख़ाक उड़ रही थी हाल ये था बारगाह[4] का
भाई न वो रफ़ीक़ न वो नूरे-ऐन[5] थे
दो बहनें रोने वालियाँ थीं एक हुसैन थे।

वो घर कि जिसमें लाते थे जिब्रील[6] वहीए-रब
वाँ तीर फ़ौजे-ज़ुल्म से आते थे हय ग़ज़ब
निहोड़ाये सर खड़े थे शहन्शाहे-तश्नालब[7]
तर था जवाँ पिसर के लहू से लिबास सब
लब प्यास से कबूद[8] थे रुख़सार ज़र्द थे
मौला[9] की एक जान थी और लाख दर्द थे।

फ़रमाते थे कि वाह ये ताख़ीर[10] ऐ अजल[11]
अकबर के बाद कौन सा था ज़ीस्त[12] का महल
अब मुझको एक बरस के बराबर है एक पल
मौत आये अब ये है शजरे-ज़िन्दगी[13] का फल
एक जा छुरी गलों पे जो चलती तो ख़ूब था
ये जान उनके साथ निकलती तो ख़ूब था।

उठता नहीं हुसैन से अब बारे-ज़िन्दगी[14]
ऐ मौत अब गिरा कहीं दीवारे-ज़िन्दगी
जीते रहें वो जो हैं तलबगारे - ज़िन्दगी[15]
अब दिक़[16] है अपनी जान से बीमारे-ज़िन्दगी
इबरत[17] की जा है ख़ाक में रंगे-चमन मिले
ज़िन्दा हो बाप और न पिसर को कफ़न मिले।

हम सब के बाद ख़ल्क़[18] से जाने को रह गये
सर पीटने को ख़ाक उड़ाने को रह गये

---

१. जब हुसैन की सब फ़ौज सच्चाई की लड़ाई लड़कर ख़त्म हो गयी २. प्यासी फ़ौज का क़ाफ़िला जन्नत की नहर पर गया ३. हज़रत मुहम्मद ४. ड्योढ़ी ५. बेटा ६. ख़ुदा का फ़रिश्ता जो ख़ुदा का कलाम (कुरआन) लेकर रसूल के पास आये ७. इमाम हुसैन ८. होंठ प्यास से नीले थे ९. अर्थात् इमाम हुसैन १०. देर ११. मौत १२. ज़िन्दगी का अवसर १३. ज़िन्दगी के वृक्ष का फल यह है कि मौत आ जाय १४. बोझ १५. ज़िन्दगी के इच्छुक १६. बेज़ार, परेशान १७. ऐ लोगो, इससे सबक़ लो कि बाप ज़िन्दा है और बेटा मर गया १८. दुनिया

पीरी[१] में आह ठोकरें खाने को रह गये
इस नौजवाँ का दाग़ उठाने को रह गये
बेटा कहाँ ख़बर जो दमे-इन्तिक़ाल[२] ले
इतना नहीं जो गिरते हुए को सँभाल ले।

फ़रमाके ये जो घर में गये शाहे-ख़ुशख़िसाल[३]
महबूबे-हक़[४] की आल का देखा अजीब हाल
बैठे हुए हैं सब सफ़े-मातम पे खोले बाल
बरपा है शोरे-मातमे-फ़र्ज़न्दे-ख़ुशजमाल[५]
बानो क़रीबे-मर्ग है ज़ैनब हलाक है
सीने तो सब कबूद[६] हैं बालों पे ख़ाक है।

बहनें पुकारती थीं कि बीरन तेरे निसार[७]
अब तक तो घर में आते थे मक़तल[८] से चन्द बार
भय्या सुँघा दो निकहते-गेसूए-मुश्कबार[९]
इस भीनी-भीनी बू के लिए दिल है बेक़रार
आये न अम्मू जान का पुरसा भी देने को
क्या बे-कहे चले गये सुग़रा के लेने को।

शह ने कहा बहिश्त में हैं अकबरे-हसीं
सुग़रा कहाँ हमारी ही उनको खबर नहीं
रुख़सत करो हुसैन को ऐ ज़ैनबे-हज़ीं[१०]
ख़ेमे तक आ न जाये कहीं फ़ौजे-अहले-कीं[११]
ला दो रसूले-पाक का रख़्ते-कुहन[१२] हमें
पहना दो अपने हाथ से ज़ैनब कफ़न हमें।

बेख़ुद थी ग़म में नूरे-नज़र के वो दिलफ़िगार[१३]
समझी न कुछ कि कौन ये रोता है ज़ार-ज़ार
जब ये सुना खड़ा है मुहम्मद का यादगार
मातम की सफ़ पे गिर पड़ी उठकर वो सोगवार
रोकर कहा न पाँव न क़ाबू में हाथ हैं
क्यों साहिबो, कहो अली अकबर भी साथ हैं।

पुर-ख़ूँ जबीं, फटे हुए कपड़े, बदन पे ख़ाक[१४]
चादर सियाह, एक ग़रीबाँ, हज़ार चाक[१५]

---

१. बुढ़ापा २. मौत ३. इमाम हुसैन ४. रसूल की औलाद ५. सुन्दर बेटा ६. नीले ७. निछावर ८. क़त्ल का मैदान ९. सुगन्धित बालों की ख़ुशबू १०. रंजीदा, दुखी ११. दुश्मन की सेना १२. पुराने कपड़े १३ बेटे के ग़म में वह होशो-हवास में न थी १४. माथा ज़ख़्मी, कपड़े फटे, बदन पर ख़ाक पड़ी १५ एक काली चादर, गिरीबान के टुकड़े-टुकड़े हुए

सर भी, जिगर भी, सीनए-पुर-ख़ूं भी, दर्दनाक[१]
बेकस बहन के हाल पे रोये इमामे-पाक
फ़रमाया आयें क्या कि सिनां[२] दिल पे खाये हैं
हम उनकी लाश छोड़ के रुख़सत को आये हैं।

जो मारज़े-फ़ना में हैं क्या उनका आसरा[३]
मैं हूँ तो क्या हूँ मालिक-ो-मुख़्तार है ख़ुदा
उठ जायें भाई भानजे या हों पिसर जुदा
साबिर उसी से सब्र की करते हैं इल्तजा[४]
वो क़ैद में न घर की तबाही में रोते हैं
रोते हैं गर तो ख़ौफ़े-इलाही[५] में रोते हैं।

वो कहती थी कि जान निकल ले तो जाइए
ख़ंजर[६]-अजल का हल्क़[७] पे चल ले तो जाइए
मुज़्तर है दिल बहन का सँभल ले तो जाइए
अच्छा ज़रा सकीना बहल ले तो जाइए
बालों पे ख़ाक उड़ा लूं, मुंह अश्कों[८] से धो तो लूं
मां - जाये भाई, मैं तुझे जी भर के रो तो लूं।

बोली क़दम पे गिरके वो बानूए - ख़ुशख़िसाल[९]
ऐ जाने-फ़ातमा, ख़लफ़े - शेरे - ज़ुलजलाल[१०]
फ़रमाइए तो साथ चले ये शिकस्ता-हाल[११]
रुख़ पे निक़ाब डालके[१२] बिखराके सर के बाल
इज़्ज़त अब इस कनीज़ की है हाथ आपके
पर्दा रहे मेरा जो मरूँ साथ आपके।

मंझदार में है नाव तलातुम[१३] है आशकार
मौजें सितम की आती हैं तूफ़ां में बार बार
ऐ नाख़ुदाए-कश्तिए-उम्मत तेरे निसार[१४]
बेकस का डूबता हुआ बेड़ा लगा दे पार[१५]
रह्म अब कि बेक़रारिए-बिस्मल का वक़्त है[१६]
हल्लाले-मुश्किलात[१७] ये मुश्किल का वक़्त है।

---

१ सिर, दिल, जिगर सब ख़ून में भरा था और दर्दनाक हालत थी २. बर्छी ३. जो मर जानेवाले हों उनका आसरा ही क्या है ४. बिनती ५. ख़ुदा से डरकर ६ मौत का ख़ंजर ७. गले ८. आंसू ९. इमाम हुसैन की सुशील पत्नी १०. ऐ फ़ातमा और अली के बेटे ११. तबाहहाल १२. चेहरे पर नक़ाब डालकर १३. तूफ़ान के आसार हैं १४-१५. ऐ उम्मत की नाव के खेवनहार, मुझ बेसहारा का डूबता बेड़ा पार उतार दे १६. दया कर, ज़ख़्मी तड़प रहा है १७. ऐ मुश्किलों को दूर करनेवाले, मैं मुश्किल में हूँ

बानो के इज़तराब[1] पे रोये शहे-उमम[2]
फ़रमाया नागवार है साहिब तुम्हारा ग़म
बानो असीर-ो-बेकस-ो-बे-आशना हैं हम[3]
यावर न भाईबन्द, न लश्कर न वो अलम
मौत अपनी ख़ुद तलब[4] न करे वो तो क्या करे
जिसका कोई न हो न मरे वो तो क्या करे।

लाज़िम है तुमको सब्र ये है सब्र का मुक़ाम
मालिक[5] की है इसी में ख़ुशी और इसी में नाम
याँ कर लुटे कि क़ैद में जाना हो सूए-शाम
हरदम रहे ज़ुबान को शुक्रे-ख़ुदा से काम
दीं ये तुम्हारा साथ तुम इन सब के साथ हो
मेरा यही है साथ कि ज़ैनब के साथ हो।

ये कहके निकले ख़ेमे से शब्बीरे-दिल-फ़िगार[6]
देखा खड़ा है ड्योढ़ी पे अस्पे-वफ़ा-शिआर[7]
गरदन पे हाथ फेरके बोला वो नामदार[8]
ताक़त न हो तो जाये प्यादा[9] तेरा सवार
ये गर्दिशे-फ़लक[10] कि जफ़ाए-ज़माना है
तू भी तो तीन रोज़ से बे-आब-ो-दाना[11] है।

फैलाके दोनों हाथ झुका वो सुए-ज़मीं
घोडे पे जलवागर हुआ हैदर[12] का नाज़नीं
पुर नूर[13] हो गया रुख़े-अनवर से सदरे-ज़ीं[14]
मरकब पे थे हुसैन कि ख़ातम पे था नगीं[15]
शोरे-दरूद ग़र्ब से ता शर्क़ हो गया[16]
बैठे जो तनके आप फ़रस बर्क़ हो गया[17]।

वो रीशे-पाक[18] और वो चेहरे की आब-ो-ताब[19]
निकला है चीरकर शबे-यलदा को आफ़ताब[20]

---

१. व्याकुलता २. इमाम हुसैन ३. ऐ बानो, हम ख़ुद मजबूर, बेकस और बेसहारा है ४. मांग ५. ख़ुदा ६ हुसैन जिनका दिल जख़्मी था ७. वफ़ादार घोड़ा ८. इज़्ज़तवाला ९. पैदल १०. क़िस्मत का चक्कर और ज़माने का अत्याचार है ११. बिना दाना और पानी के है १२. अली का बेटा, हुसैन १३-१४. हुसैन के तेजस्वी चेहरे से घोड़े का जीन भी नूर से भर गया १५. हुसैन घोड़े पर यूँ बैठे थे जैसे अंगूठी पर नग जड़ जाये १६. हुसैन बाहर आये तो पूरब से पश्चिम तक दरूद का शोर उठा १७. घोड़ा बिजली की तरह उड़ा १८. दाढ़ी १९. चमक-दमक २०. जैसे काली रात को चीरकर सूरज निकल आया हो

कुछ जा-ब-जा जो खुल गया है रीश का खिज़ाब
रुखसत है, मिल रहे हैं गले पीरियो-शबाब[1]
ता वक़्ते-अस्र और ज़माने-हयात है[2]
अब ज़िन्दगी में कोई न दिन है न रात है।

इस दबदबे से लश्करे-पैमाँ-शिकन में आये[3]
जैसे शिकार खेलने को शेर बन में आये
या बुलबुल इश्तियाक़ में गुल के चमन में आये[4]
ग़ुल पड़ गया हटो, असदुल्लाह[5] रन में आये
अगली सफ़ें उलट गयीं यूँ पिछली फ़ौज पर
तूफ़ाँ में मौज गिरती है जिस तरह मौज पर।

हलचल को देखकर ये पुकारा वो हक़-शनास[6]
ऐ अहले-शाम एक मुतनफ़्फ़िस[7] से ये हिरास
सब मर गये उमीद किसी की है अब न आस
एक मैं हूँ और हसरत-ो-अन्दोह-ो-दर्द-ो-यास[8]
मातम में अपनी फ़िक्र न लड़ने का होश है
खंजर से काट लो कि ये सर बारे-दोश[9] है।

क्यों भागते हो बेकसो - तन्हा की जंग क्या[10]
जब मर गया हो दिल तो वग़ा[11] की उमंग क्या
बे-दस्त-ो-पा[12] दिखाये लड़ाई का ढंग क्या
ताक़त हो गर तो शेर है फिर क्या पिलंग[13] क्या
पर खैर क्या मैं तुमसे एवज़[14] लूँ इनाद[15] का
लड़ लूंगा कुछ कि हुक्म है मुझको जिहाद[16] का।

ये सुनके फिर जमाये परे फ़ौजे-शाम ने
काले निशान खुल गये लश्कर के सामने
छोड़ा इधर न्याम, अली की हिसाम[17] ने
जलवा दिया उरूसे-ज़फ़र को इमाम ने[18]

---

१. बुढ़ापा और जवानी गले मिल रहे हैं २. अब बस अस्र (शाम) के वक़्त तक ज़िन्दगी की मुद्दत बाक़ी है ३. इस रोब के साथ वचन तोड़नेवाली सेना में आये ४. या जैसे बुलबुल बाग़ में फूल के शौक़ में आती है ५. हज़रत अली ६. ख़ुदा को पहचाननेवाला ७. एक अकेले इन्सान से ८. अकेला मैं (हुसैन) हूं और रंज, निराशा और हसरतें मेरे साथ हैं ९. कन्धों पर इसी सिर का बोझ है १०. तनहा अकेले की लड़ाई ही क्या ११. लड़ाई १२. बे-हाथ-पांववाला १३. चीता १४. बदला १५. दुश्मनी १६. ख़ुदा की राह में लड़ाई १७. अली की तलवार १८. इमाम ने जीत की दुल्हन को अपना जलवा दिखाया

घूंघट हटा तो बर्क़ सी चमकी लड़ाई में
नक़दे - हयात लेने लगी रू-नुमाई में[1]।

वो फ़ौज का हुजूम, वो गर्मी, वो लू, वो बन
दरिया पे शेर हाँफते थे, दश्त[2] में हिरन
भड़की थी आग जल रहे थे नारियों के तन[3]
मिस्ले[4]-सदफ़ थे ज़ख्म भी खोले हुए दहन
डूबा था वो पसीने में जो सीनाज़ोर था
फ़ौजों में ज़ुलफ़िक़ार[5] के पानी का शोर था।

अबतर सफ़ें थीं कीनावरों की इधर उधर[6]
जानें हवा थीं फ़ितनागरों[7] की इधर उधर
छायी थी एक घटा सिपरों की इधर उधर
बौछार थी ज़मीं पे सरों की इधर उधर
ग़ुल था असर है घाट में दरिया की बाढ़ का
बरसा है निस्फ़[8] तब के महीना असाढ़ का।

अल्लाह रे जंग में शहे-जी[9] क़द्र की शिकोह
जिस जा क़दम जमे न हटे फिर मिसाले - कोह[10]
क़ह्‌रे-ख़ुदा थी बरहमीए - तबअ़-हक़ - पिज़ोह[11]
बे ख़ौफ़े-जाँ न था कोई मजमा कोई गिरोह
हमलों में सारी शान ख़ुदा के वली की है
फ़ौजों में शोर था ये लड़ाई अली की है।

क्या मद्‌हा[12] हो हुसैन के जंग-ो-जदाल[13] की
तस्वीर बन गयी थी अली के जलाल[14] की
वो आओ जाओ अशहबे - ज़ैग़म - खिसाल[15] की
रौंदा जो ये परा तो वो सफ़ पायमाल की[16]
इन उबली अँखड़ियों के इशारे ग़ज़ब के थे
चल-फिर थी क़ह्‌र की तो तरारे ग़ज़ब के थे।

आफ़त थी हर परे में लड़ाई थी हर तरफ़
तलवार से सफ़ों की सफ़ाई थी हर तरफ़

---

१. तलवार लोगों की जान मुंह-दिखाई में लेने लगी २. जंगल ३. नरक में जानेवाले जल रहे थे ४. सीपी की तरह जख्मों के मुंह खुले हुए थे ५. अली की तलवार ६. द्वेष रखनेवाले दुश्मन की कतारें बराबद हो रही थीं ७. फ़साद फ़ैलानेवालों की ८. आधा ९. इमाम हुसैन की शान १०. पहाड़ की तरह ११. इसी ख़ुदा की ख़ुशी ढूंढने वाले का ग़ुस्सा ख़ुदा का क़हर बन गया था १२ प्रशंसा १३ लड़ाई १४. ग़ुस्सा जो हक़ बात पर आये १५. शेर के-से गुण रखने वाला घोड़ा १६. फ़ौजों की सफ़ पांव के नीचे रौंद डाली

रूहों[1] की क़ालिबों[2] से रिहाई थी हर तरफ़
पैग़म्बरे - ख़ुदा की दुहाई थी हर तरफ़
दाँतों में ख़स पकड़ के उदू कड़कड़ाते थे[3]
शिक़्के अलम के अम्न की चादर हिलाते थे।[4]

ग़ुल था कि ऐ नबी के नवासे अमाँ अमाँ
गर्मी में तीन रोज़ के प्यासे अमाँ अमाँ
अब रोक ले ये हाथ वग़ा से अमाँ अमाँ
सय्यद बचा ले क़हरे-ख़ुदा[5] से अमाँ अमाँ
याँ से ख़ता[6] उधर से हमेशा अता[7] हुई
बच्चे को हमने तीर से मारा ख़ता हुई।

फ़ाक़े में देर तक जो लड़े शाहे - तश्नाकाम
ग़र्क़े - अरक़ थे काँप रहा था बदन तमाम
हाथों से छोड़ दी थी जो रहवार की लगाम
आँखें थीं बन्द हाँपता था अस्पे - तेज़गाम[8]
ग़श में सवारे - दोशे - नबी[9] का ये हाल था
बे - थामे ख़ुद फ़रस[10] से उतरना महाल था।

देखा जो ये कि भाग गये रन से हीला साज़[11]
तलवार रखके म्यान में बोले शहे-हिजाज़[12]
मोहलत है ऐ हुसैन पढ़ो अस्र की नमाज़
ये आख़िरी है बन्दगीए - रब्बे - बे - नियाज़[13]
फ़िक्रे - निजाते - उम्मते - ख़ैरुलबशर[14] करो
सूखी ज़ुबाँ को ज़िक्र - इलाही में तर करो।[15]

नागाह सूए-लाशे-पिसर जा पड़ी नज़र
चिल्लाये दिल को थाम के सुलताने-बहरो-बर[16]
अकबर उठो कि घोड़े से गिरता है अब पिदर[17]
सोते हो तुम धरे हुए रुख़सार[18] ख़ाक पर
भूले पिदर को नींद में क़ुरबान आपके
आओ नमाज़े-अस्र पढ़ो साथ बाप के।

---

१ रूह (आत्मा) की २. तन से ३. दुश्मन ख़ुशामद कर रहे थे ४ झण्डे गोया हिल-हिल-कर शरण माँग रहे थे ५. ख़ुदा के क़हर से ६. दोष, ७. कृपा, क्षमा ८. तेज चलने वाला घोड़ा ९. इमाम हुसैन १०. घोड़ा ११. बहाने करनेवाले १२. इमाम हुसैन १३. ख़ुदा की बन्दगी १४. अब तुम हजरत मुहम्मद की उम्मत की निजात (मोक्ष) की फ़िक्र करो १५. अब अपनी सूखी जबान से ख़ुदा को स्मरण करो १६. इमाम हुसैन १७. बाप, पिता १८. गाल, चेहरा

बेटे हो तुम इमाम के, पोते इमाम के
काम आओ मरते दम पिदरे-तश्नाकाम[1] के
आते हैं फिर पलट के परे फ़ौजे-शाम के
बिठला दो क़िबलारू[2] मेरे हाथों को थाम के
जाती है अब नमाज़ भी आदा जो फिर पड़
राशा है खुद फ़रस से[3] जो उतरें तो गिर पड़ें।

अब्बासे-नामदार[4] तराई[5] से उठ के आओ
फुँकता है क़ल्ब[6], जल रहे हैं सब जिगर के घाव
छिड़को मेरी ज़िरह पे जो पानी कहीं से पाओ
चलते हुए अदम[7] के मुसाफ़िर से मिल तो जाओ
हम सब के काम आये हैं, पीटे हैं रोये हैं
बारह पहर हुए कि न लेटे न सोये हैं।

क्या बाफ़ज़ा[8] ये सर्द तराई है अब उठो
हम जाँ-ब-लब[9] हैं खत्म लड़ाई है अब उठो
नर्ग़े[10] में फ़ौजे-ज़ुल्म के भाई है अब उठो
अब्बास धूप चेहरे पे आयी है अब उठो
गफ़लत की तुमको नींद है शब्बीर क्या करे
मेरी तरह किसी को न बेकस खुदा करे।

तुम जब से छूटे साइद-ो-बाज़ू[11] में दर्द है
गरदन में सर में आंख में अबरू में दर्द है
दिल में कमर में सीने में पहलू में दर्द है
रग-रग में क्या हरेक बुने-मू[12] में दर्द है
हर मर्तबा लड़े हैं लहू में नहाये हैं
पीरी में नौजवानों के लाशे उठाये हैं।

चिल्लाया फ़ौज को पिसरे सादे-नाबकार
लो रख ली म्यान में शहे-वाला ने ज़ुलफ़िक़ार
पलटे परे सवारों के लेकर रिसालेदार
दो ग़ोल बाँधे आये कमाँदार[13] दस हज़ार
तीर अफ़गनों[14] में तेग़ों में भालों में घिर गये
तन्हा हुसैन बर्छियों वालों में घिर गये।

---

१. प्यासा २. क़िब्ले की ओर ३. बदन कांप रहा है, खुद घोड़े से उतरने की ताक़त नहीं ४. नामवाले ५. नहर के तट से ६. दिल ७. दुनिया से जाने वाले ८. फैली अच्छी है ९. होंठों पर जान आयी है १०. घेरे में ११. कलाई १२. हर रोयें में १३. तीर फेंकने-वाले १४. तीर फेंकनेवाले

फ़रयाद है वो फ़ौज का दल और एक हुसैन
वो बेशुमार[1] तेग़ों के फल और एक हुसैन
वो तीरे-जाँ सिताँ[2] वो जदल और एक हुसैन
वो सैंकड़ों पयामे-अजल और एक हुसैन
फ़ौजों में शाम की महे-ताबाँ[3] घिरा हुआ
बेकस भी वो कि जिससे ज़माना फिरा हुआ।

सय्यद के मर्तबे को न जाना हज़ार हैफ़[4]
तीरों से सद्रे-पाक[5] को छाना हज़ार हैफ़
शाने[6] थे नावकों का निशाना हज़ार हैफ़
मज़लूम का वो बर्छियाँ खाना हज़ार हैफ़
टूटे थे सब रसूल के प्यारे हुसैन पर
क्या वक़्त पड़ गया था तुम्हारे हुसैन पर।

गिरते हैं आप कौन सँभाले कोई नहीं
सीने से कौन तीर निकाले कोई नहीं
बेजाँ पड़े हैं गोद के पाले कोई नहीं
सब मर चुके हैं चाहने वाले कोई नहीं
बेकस हैं और सामना फ़ौजे-उदू का है
मुँह जिसका देखते हैं वो प्यासा लहू का है।

क्योंकर कहूँ कि अर्शे-ख़ुदा[7] ख़ाक पर गिरा
ख़ैरुन्निसा[8] का माहलक़ा[9] ख़ाक पर गिरा
सरताजे[10] -बादशाह-ो-गदा ख़ाक पर गिरा
ज़ीं से उलट के राहनुमा[11] ख़ाक पर गिरा
वो दो हज़ार ज़ख़्म तने-चाक-चाक पर
क्या गुज़री होगी जब कि गिरे होंगे ख़ाक पर।

फ़िज़्ज़ा ने जाके ख़ेमे में राँड़ों को दी ख़बर
हय हय मेरे ख़ूज़ादे[12] का कटता है तन से सर
बिस्तर से उठके गिर पड़े सज्जादे-नौहागर
ख़ेमे से निकली बीबियाँ बच्चों को छोड़कर
गिर-गिरके दौड़ती थीं कि मिल लूँ हुसैन से
हिलता था अर्श[13] हज़रते-ज़ैनब के बैन से।

---

१. अनगिनत २. लड़ाई ३. रोशन चाँद ४. हाय अफ़सोस ५. पवित्र सीना ६. कन्धे ७. अर्थात् इमाम हुसैन ८. इमाम हुसैन की माँ का लक़ब ९. चाँद १०. बादशाह और फ़क़ीर का सरदार, इमाम हुसैन ११. रास्ता दिखानेवाला १२. मालिक का बेटा १३. आसमान

मानिन्दे-आफ़ताब लरज़ता था जिस्मे-पाक[1]
जायें किधर वो फ़ौज, वो सहराए-हौलनाक[2]
सर पर इसाबा[3] पाँव में मोज़े, रिदा पे ख़ाक[4]
लटके हुए थे दोनों तरफ़ पैरहन[5] के चाक
आबिद का नूरे-ऐन[6] रिदा थामे साथ था
एक हाथ में यतीम सकीना का हाथ था।

चिल्लाती थी अरे मेरा भाई है किस तरफ़
लूटी हुई अली की कमाई है किस तरफ़
दरिया किधर है ख़ूँ का, तराई है किस तरफ़
सोने की जा हुसैन ने पायी है किस तरफ़
रस्ता दे ऐ ज़मीं कि फ़लक[7] की सतायी हूँ
मैं अपने प्यारे भाई से मिलने को आयी हूँ।

रेती पे मुस्तुफ़ा के जिगर का लहू गिरा
ऐ आसमाँ ज़मीन पे अब तक न तू गिरा
सैयद गिरा इमाम गिरा नेक-ख़ू[8] गिरा
वो काबए-ज़मीन-ो-ज़माँ क़िबला-रू[9] गिरा
ताब[10] उठने बठने की वहाँ हाथ-पाँव में
शायद नमाज़ पढ़ते हैं तेग़ों की छाँव में।

मैं सय्यदा हूँ रह्म मेरी बेकसी पे खाओ
ऐ अहले-क़रया[11] बिन्ते-नबी[12] की मदद को आओ
दुनिया में तुम ख़ुशी रहो, उक़्बा[13] में चैन पाओ
सय्यद किधर है ख़ून में ग़ल्ताँ[14] मुझे बताओ
याँ लुट गये फ़लक ने ये दुख हम पे डाले है
ऐ भाइयो, मदीने के हम रहने वाले हैं।

आती थी जिसमें वही[15] वो घर है हमारा घर
इल्मे-नबी के शह्र[16] का दर है हमारा घर
तारों में बुर्ज, शम्स-ो-क़मर है हमारा घर[17]
तेग़े-अज़ाबे-हक़[18] की सिपर है हमारा घर

---

१. सूरज की तरह शरीर काँप रहा था २. हौल जिससे आये वो जंगल ३. रूमाल ४. चादर ५. लिबास ६. आँखों का नूर, बेटा ७. आसमान ८. सुशील ९. क़िबले की तरफ़ १०. ताक़त ११. गाँव १२. नबी की बेटी १३. आख़िरत, दूसरी दुनिया १४. ख़ून में भरा हुआ १५. ख़ुदा का कलाम (क़ुरआन) १६. क़स्बा, बस्ती १७. दर्वाज़ा, तारों में उसका स्थान सूरज और चाँद का-सा है १८. हमारा घर ख़ुदा के क्रोध से बचाने के लिए ढाल का दर्जा रखता है

हाकिम है बरख़िलाफ़[1] वतन हम से छुट गया
हय हय वोही भरा हुआ. घर आज लुट गया।

ऐ क़ब्रे - मुस्तुफ़ा के मुजाविर तेरे निसार
ऐ बेकसो - ग़रीब - ो - मुसाफ़िर तेरे निसार
ऐ तश्नाकाम-ो-साबिर - ो - शाकिर तेरे निसार
ऐ दीने-हक़ के हामिओ-नासिर[2] तेरे निसार

आये थे कर्बला में शहादत के वास्ते
एक दिन में घर लुटा दिया उम्मत के वास्ते।

शह के कराहने की जो आने लगी सदा[3]
दौड़ी उधर नबी की नवासी बरहना-पा[4]
देखा बहन ने भाई का कटते हुए गला
ग़म से कलेजा फट गया ज़ोहरा की जाई का

आँखों पे हाथ रखके गिरी बिन्ते मुर्तज़ा
उसने जो देखा नेज़े पे सर अपने भाई का।

बस ऐ 'अनीस' क़ल्ब-ो-जिगर[5] को नहीं क़रार
आगे न लिख मुसीबते - शब्बीरे - नामदार
ये बज़्म[6] और ये आज का पढ़ना है यादगार
राशा है दस्त-ो-पा में[7] लरज़ता है जिस्मे-ज़ार

वो यूं पढ़े जिसे न हो ताक़त कलाम की[8]
ताईद[9] है हुसैन अलैहिस्सलाम की।

---

१. विरोधी २. ख़ुदा के दीन के संरक्षक ३. आवाज ४. नंगे-पाँव ५. दिल और जिगर ६. महफ़िल, सभा ७. हाथ-पाँव कांप रहे हैं, कमज़ोर शरीर लरज रहा है ८. बात की ताक़त ९ मेहरबानी, मदद

मर्सिया : ११

''ज़िन्दाँ में जब कि आले-पयम्बर हुए असीर''

बन्दीगृह में हुसैन के घरानेवालों की क़ैद
और सकीना की मृत्यु का वर्णन

ज़िन्दाँ में जब कि आले-पयम्बर हुए असीर[१]
कौनैन के अमीर खुले-सर हुए असीर[२]
सब रिश्तेदारे - हैदरे - सफ़दर[३] हुए असीर[४]
वहशतसरा में अर्श के अख़्तर हुए असीर[५]

वो बीबियाँ असीर थीं इस क़स्रे-ज़िश्त[६] में
हैं जिनकी लौंडियों के लिए घर बहिश्त[७] में।

बस्ती वो फ़ातमा की कहाँ और वो घर उजाड़
जानों पे थी बनी हुई क़िस्मत का था बिगाड़
क्या दिल खिलें कि शाम से जब बन्द हों किवाड़
दीवारें थीं बुलन्द कि छाती पे थे पहाड़

घबराके छत को बीबियाँ हर बार तकती थीं
टूटे मकाँ की रात को कड़ियाँ कड़कती थीं।

झड़ती थी वाँ की सक़्फ़[८] से हरदम सरों पे खाक
थे गर्द से भरे हुए राँड़ों के जिस्मे-पाक
भागी थी रौशनी भी ये हुजरे[९] थे हौलनाक[१०]
कहते थे अब मकाँ ये गिरा अब हुए हलाक[११]

क़िस्मत[१२] में है कि क़ब्र इसी ज. नसीब हो
अच्छा तो है जो ख़ाक का पर्दा नसीब हो[१३]।

एक-एक से ये कहती थी ज़ैनब जिगर-फ़िगार[१४]
लायक़[१५] न इस मकान के थे हम गुनाहगार
मजबूर जो ग़रीब हों क्या उनका इख़्तियार
साया तो है सरों पे करो शुक्रे-किर्दिगार[१६]

है जाय - गिर्या हाले - शहे - मशरक़न पर[१७]
क्या गुज़री होगी धूप में लाशे - हुसैन पर।

ग़ारतगरों[१८] ने लूट लिया कोहना पैरहन[१९]
वो रेगे - गर्म और वो उर्यानिए - बदन[२०]

---

१. जब हज़रत मुहम्मद के वंश वाले क़ैद कर दिये गये २. जो सारी दुनिया के सरदार थे उन्हें खुले-सर क़ैद किया गया ३. अली ४. क़ैदी ५. इसी बन्दीगृह में जिससे वहशत होती, आसमान के तारों को बन्द किया गया ६. मनहूस घर ७. जन्नत, स्वर्ग ८. छत ९. कोठरियाँ १०. जिनसे होल आती थी। ११. हत १२. हमारी क़िस्मत में यह है कि इसी बन्दीगृह में मर १३. अच्छा है. इसी तरह ख़ाक में मुँह तो छिपा लेंगे १४. ज़ैनब जिसका दिल ज़ख़्मी था १५ क़ाबिल १६. ख़ुदा का शुक्र अदा करो १७. रोने की जगह है हुसैन के हाल पर १८. बरबाद करनेवालों ने १९. पुराना लिबास २०. वह जलती रेत और उस पर बे कपड़ों का शरीर पड़ा हुआ है

हय हय वो शब पहाड़ सी और कर्बला का बन
किस तरह जाए भाई तलक क्या करे बहन
प्यासा गला कटा के मुए जिसकी राह में[1]
सौंपी है मैंने लाश उसी की पनाह में।

रस्सी मेरे गले की कोई खोल दे अगर
मक़तल को ढूंढती हुई जाऊँ बरहना सर[2]
निकली मैं जब, तो फिर नहीं दरकार राहबर[3]
रस्ते में पूछ लूंगी कि है कर्बला किधर
मुमकिन है ये कि लाश को ज़ैनब न पायेगी
भाई के ख़ूं की बू मुझे कोसों से आयेगी।

कहने लगी ये उठ के सकीना जिगर फ़िगार
लेती चलो मुझे भी फुफी तुम पे मैं निसार
छुप कर चली गयीं तो मैं रोऊँगी ज़ार ज़ार
तुम ने भी क्या भुला दिया दिल से हमारा प्यार
मर जाऊँगी अगर न पिदर से मिलाओगी
क्या इस अँधेरे घर में मुझे छोड़ जाओगी।

रोकर तब इस यतीम[4] से ज़ैनब ने ये कहा
वारी कहाँ मैं और कहाँ दश्ते-कर्बला[5]
बेकस असीरे-दामे-बला ग़म की मुब्तला[6]
क़ैदी को कौन जाने की देगा भला रज़ा[7]
भाई की लाश पास अगर रहने पाती मैं
[8]ज़िन्दाँ में क़ैद होने को काहे आती मैं॥

है दश्ते-कर्बला तो कई दिन की याँ से राह
ऐसे कहाँ नसीब कि हासिल हो वस्ले-शाह[9]
घर में यज़ीद के है सरे-शाहे-दीं पनाह[10]
हम क़ैद इस मकाँ में हैं, बेजुर्म-ो-बे गुनाह[11]
हम सा कोई जहाँ में न आफ़त नसीब हो[12]
मुमकिन नहीं कि सर की ज़ियारत[13] नसीब हो।

---

१. जिस ख़ुदा की राह में प्यासे गला कटवा कर जान दी है २. नंगे सिर ३. रस्ता दिखाने वाले की ज़रूरत है ४. बे बाप का बच्चा अर्थात् सकीना ५. कर्बला क जंगल ६. मैं तो बेचारा मुसीबत में गिरफ़्तार और ग़म की मारी हूँ ७. इजाज़त, आज्ञा ८. बन्दीगृह ९. हुसैन से मुलाक़ात १० इमाम हुसैन का सिर ११. निर्दोष १२ हम जैसा दुनिया में कोई मुसीबत मारा न हो १३. देखना

कहने लगी ये सुन के सकीना ब-चश्मे-तर[1]
हय हय फुफी न आयेंगे क्या अब मेरे पिदर[2]
हाकिम के घर में क़ैद हैं सुल्ताने-बहरो-बर[3]
अब मुझको नींद काहे को आयेगी रात भर
सच कहती हो न शाहे-खुशअंजाम आयेंगे[4]
अम्माँ तो कहती थीं कि सरे शाम[5] आयेंगे।

जब रोके पूछती हूँ कि बाबा गये किधर
बहलाती हैं मुझे कि सिधारे हैं नह्र पर
कहता है कोई दूर नहीं शाहे-बहरो-वर[6]
रोओ न तुम अब आयेंगे, अब आयेंगे पिदर
ख़ातिर[7] की बात क्या कोई पहचानता नहीं
सुन लेती हूँ मैं सब की पे दिल मानता नहीं।

मालूम हो गया मुझे बहलाते हैं ये सब
ता मर न जाये क़ैद में घुट कर ये तश्नालब[8]
क्या हासिल इस छिपाने से शायद जियूँगी अब
मैं किस बला में फँस गयी याँ आके हय ग़ज़ब
ये लोग तो कभी न मुफ़स्सल[9] बतायेंगे
मैं अपनी जान दूंगी जो बाबा न आयेंगे।

ये ज़िक्र था अभी कि हुआ बन्द क़ुफ़्ले[10]-दर
ज़िन्दाँ में और हो गयी ज़ुलमत[11] ज़्यादातर
घबरा के देखने लगी राँडें इधर उधर
जुज़ तीरगी[12] किसी को न आता था कुछ नज़र
तड़पे ये दिल कि सीनों में साँसें उखड़ गयीं
माओं से बच्चे, बच्चों से माँएँ बिछड़ गयीं।

बानो के इस बयाँ पे बिलकते थे सब हरम[13]
बाक़र[14] पुकारते थे कि क्योंकर जियेंगे हम
चिल्लाती थी सकीना कि घुटता है मेरा दम
ज़िन्दाँ का दर भी हो गया मामूर[15] है सितम
खोलेगा क़ुफ़्ल कौन जो अब्बास आयेंगे
लो अब पिदर किधर से मेरे पास आयेंगे।

---

१. रोकर २. बाप ३-४. इमाम हुसैन ५. शाम के समय ६. इमाम हुसैन ७. दिल ८ प्यासी ९. विस्तारपूर्वक १०. दरवाजे का ताला ११. अंधेरा और बढ़ गया १२. सिवा अंधेरे के १३. हुसैन के घराने की औरतें १४. इमाम हुसैन के पोते १५. बन्द

बोला न जब कोई तो हुआ ग़म ज़्यादातर[1]
दीवार पकड़े-पकड़े गयी वो क़रीबे-दर
पट को हिला-हिला के पुकारी वो नौहागर[2]
दरबानो ! जगाते हो कि सोते हो बे-ख़बर
बेकस हूँ, तश्ना लब हूँ, फ़लक की सताई हूँ[3]
कुछ तुम से अपना हाल मैं कहने को आई हूँ।

बोला कोई कि कौन है तू ऐ नहीफ़-ो-ज़ार[4]
दिल हो गया है तेरी सदा[5] सुन के बेक़रार
एक आहे-सर्द भर के ये बोली वो दिल फ़िगार[6]
आफ़त[7]-ज़दा असीर-ो-परेशान-ो-सोगवार
छोटे से सिन[8] में क़ैदिए[9]-ज़िन्दाने-शाम हूँ
मैं दुख़्तरे[10] हुसैन अलैहिस्सलाम हूँ।

कहती नहीं मैं ये कि करो क़ैद[11] से रिहा
छुट जायेंगे कभी कि असीरों का है ख़ुदा
खाने की कुछ तलब[12] है न पानी की इल्तजा[13]
हाँ क़ुफ़्ल खोल दोगे तो दूँगी तुम्हें दुआ
जायेंगे हम कहाँ कि तुम्हारे हवाले हैं
बाबा हुसैन आज की शब[14] आने वाले हैं।

मन्ज़ूर[15] अभी न हो तुम्हें दर खोलना अगर
आकर पुकारें शाह तो तुम खोल दीजो दर
दे जाती हूँ पता तुम्हें उनका मैं नौहागर
मालूम होगा साफ़ कि तालेअ[16] हुआ क़मर
बू ज़ुल्फ़े-मुश्के-फ़ाम की महकेगी दूर से
चटकेगी चाँदनी रुख़े-रौशन के नूर से[17]।

साथ उनके होयेगा अली अकबर सा गुल[18]अज़ार
गेसू लटकते हैं रुख़े-रौशन पे उसके चार[19]

---

१. अधिकतर २. रोने वाली ३. मैं प्यासी, क़िस्मत की मारी हूँ जिसका कोई नहीं ४. कमज़ोर व बीमार ५. आवाज़ ६. जिसका दिल ज़ख्मी हो ७. मुसीबत की मारी, बन्दी, परेशान और बीमारों के सोग में हूँ ८. उम्र ९. शाम के क़ैदख़ाने में बन्द हूँ १०. मैं हुसैन की बेटी हूँ ११ क़ैद से छोड़ दो १२. १३. मुझे न खाने की इच्छा है न पानी की विनती १४. रात १५. स्वीकार १६. चांद निकला है १७, उनके सुगन्धित केशों की ख़ुशबू दूर से महक उठेगी और उनके तेजस्वी चेहरे के प्रकाश से हर तरफ़ उजाला हो जायेगा १८. अली अकबर जैसा सुन्दर १९. उसके चमकते चेहरे पर बालों की चार लटें नज़र आती हैं

तस्वीर है नबी की सरापा वो ज़ा-वक़ार[1]
यूसुफ़ हैं मिस्र-हुस्न के, भाई के मैं निसार[2]
नज्मे-फ़लक पसीने के क़तरों से माँद हैं[3]
दुनिया की रौशनी हैं, अंधेरे के चाँद हैं।

होते नहीं अज़ीज़ किसे दुख़्तर-ो-पिसर[4]
पर मुझ को चाहते हैं वो सब से ज़्यादातर
सोती थी उनकी छाती पे मुँह रख के रात भर
ज़िन्दाँ में अब ज़मीं पे तड़पती हूँ ता सहर[5]
मौक़ूफ़[6] इन पे मेरी हयात-ो-ममात है
[7]आगे का है ये दिन, यही वादे की रात है।

बोले निगाहबाँ[8] कि तेरा ध्यान है किधर
जा माँ के पास बैठ, कहाँ तू कहाँ पिदर
बे सुबह के हुए नहीं खुलने का क़ुफ़्ले-दर
क्या शिम्र[9] के तमाँचों का तुझ को नहीं है डर
दिन को भी रोती रहती है शब को भी रोती है
नै हम को सोने देती है, न आप सोती है।

नाहक़[10] अभी से काहे को करती है शोर-ो-शैन[11]
जा क़ुफ़्ल खोल देंगे, भला आयें तो हुसैन
रोने से तेरे शब को भी मिलता नहीं है चैन
हर वक़्त के सुने नहीं जाते हैं तेरे बैन
बुलवायें शिम्र को तेरी ताज़ीर[12] के लिए
रोना न कम करेगी तू शब्बीर के लिए।

माँ बहनें क़ैद हो गईं, आतिश[13] से घर जला
आया बचाने कोई बुरे वक़्त में भला
खाये तमाँचे जब तो तेरा ज़ोर कब चला
कस देवे आके शिम्र न रस्सी से फिर गला
उन से छुटे तो और भी सदमा दुचंद[14] हो
ऐसा न हो जुदा किसी हुजरे में बन्द हो[15]।

---

१. उनकी बिलकुल रसूल की-सी सूरत है २. मैं अपने भाई पर न्योछावर, वो तो सौन्दर्य में यूसुफ़ जैसे लगते हैं ३. उन के पसीने की बूंदें ऐसी हैं जिनसे आसमान के सितारे भी मांद पड़ जाते हैं ४. बेटा-बेटी ५. सुबह तक ६,७. उन के आने का यही दिन हैं, यही रात है और उन्हीं के आने पर मेरा जीना और मरना निर्भर है ८. पहरे वाले ९. यज़ीद की फ़ौज का ज़ालिम अफ़सर, इमाम हुसैन का क़ातिल १०. बेवजह ११. रोना-पीटना १२. सज़ा १३. आग १४. दुगना १५. अलग कोठरी में बन्द कर दिया जाये

ये बात सुन के सहम गयी वो जिगर-फ़िगार[1]
दरवाज़े से सरक के लगी रोने ज़ार ज़ार
दालान से पुकारी ये बानूए[2] - नामदार
बीबी किधर गयीं; इधर आओ, ये माँ निसार
खोलेगा कौन दर किसे चिल्लाती फिरती हो
वारी, कहाँ अँधेरे में टकराती फिरती हो।

बोली सकीना जान रहे तन में या कि जाये
बैठी हूँ जब तलक न सवारी पिदर की आये
बेजुर्म कान ज़ख़्मी हुए और तमाँचे खाये
जो चाहे मुझ फ़लक की सताई को फिर सताये
वाँ क्या है याँ न बैठ के आँसू बहाऊँ मैं
अच्छा मुझे पिदर से मिला दो तो आऊँ मैं।

कुबरा के सदके जाऊँ भुलाओ हमारा प्यार
समझो कि एक बेटी हुई बाप पर निसार
मुश्किल है सब्र, दिल पे मेरा क्या है इख़्तियार[3]
अब कोई दम[4] में तन से निकलती है जाने-ज़ार
राहत[5] बहुत नसीब में कम लेके आये हैं
इतनी ही उम्र ख़ल्क़[6] में हम लेके आये हैं।

असग़र को अपनी गोद में लो मुझसे क्या है काम
प्यारी थी सारे घर की मैं, थे जब तलक इमाम[7]
तुम अपने दिल में समझो कि मैं हो गयी तमाम[8]
अम्माँ बस अब पुकारो न ले ले के मेरा नाम
सिब्ते-रसूल से मुझे प्यारा नहीं कोई
बाबा ही जब नहीं तो हमारा नहीं कोई।

बेटी से रोके बोली ये बानूए-तश्नालब[9]
हाँ बीबी सच है, मेरी ही तक़सीर[10] है ये सब
मैंने ही शह से तुमको छुड़ाया है बे सबब[11]
लो आओ, बस मुआफ़ करो, जुर्म[12] माँ का अब

---

१. वो ज़ख़्मी दिल वाली बच्ची डर गयी २. इज्जत वाली शहज़ादी यानी इमाम हुसैन की पत्नी 'बानो' ३. क्या बस है ४ बस अब किसी वक़्त भी तन से जान निकल जायेगी ५. आराम ६. दुनिया ७. अर्थात् इमाम हुसैन ८. ख़त्म, समाप्त ९. प्यासी १०. दोष ११. बे वजह १२. अपराध

जो चाहो कह लो ऐसी ही तक़सीरवार[1] हूँ
समझो न माँ, ये जानो कि ख़िदमतगुज़ार[2] हूँ।

बाबा के आगे सच है भला माँ की क़द्र क्या
किसराई[3] में वो अहमदे[4]-मुर्सिल का दिलरुबा
बेज़ार तुम हो मुझसे, मैं असग़र से हूँ ख़फ़ा
पूछी ख़बर न माँ की, दिया साथ बाप का

बेटों का क्या गिला[5] है, भला वो तो दूर हैं
तक़सीरवार[6] हैं हमीं, सब बेक़सूर हैं।

मशहूर है कि चाहते हैं बाप को पिसर
बेटी को माँ से होती है उलफ़त[7] ज़ियादातर
एक बदनसीब हम हैं कि मर जायें भी अगर
बेटों को कुछ खयाल, न बेटी को कुछ ख़बर

गो हम न हों अज़ीज़, वो हमको तो प्यारे हैं
माँ समझें या न समझें सब आँखों के तारे हैं।

रोती हुई ये कह के उठी बानुए हज़ीं
बेटी को ढूँढती हुई दरवाज़े के क़रीं[8]
रोती थी मुँह को कुरते से ढाँपे वो महज़बीं[9]
पास आके माँ ने सर से क़दम तक बलाएँ लीं

सर को झुकाके पहले तो वो पीछे हट गयी
फिर नन्हे हाथ उठाके गले से लिपट गयी।

ले आयी माँ गले से लगाकर ब-चश्मेतर[10]
चुप हो के लेटी गोद में माँ की वो नौहागर
बैठीं असीर बीबियाँ सब गिर्द[11] आन कर
हाथों से कोई पाँव दबाती थी कोई सर

माँ लेती थी बलाएँ फुफी सदक़े जाती थी
बाबा बग़ैर[12] नींद उसे लेकिन न आती थी।

माँ कहती थी थपक के, मेरी जान सो रहो
ज़ख्मी हैं फिर न दुखने लगें कान सो रहो
फ़रमाती थीं फुफी कि मैं क़ुर्बान सो रहो
कुबरा ये कहती थीं बहन एक आन सो रहो

---

१. दोषी २. ख़िदमत करने वाली ३. किसरा की औलाद (बानो ईरान की शहज़ादी थी) ४. हज़रत मुहम्मद के नवासे ५. शिकायत ६. दोषी, ७. मुहब्बत ८. पास, निकट ९. चांद जैसी सुन्दर, अर्थात् सकीना १०. रोती हुई ११. चारों तरफ़ १२. बिना

जी चाहता है चैन मिले, कोई दम तुम्हें
बाबा जब आयेंगे तो जगा देंगे हम तुम्हें।

कहती थी एक-एक से रोकर वो माहरू[1]
थी शह के साथ शाम से सोने की मुझ को ख़ू[2]
क्या नींद आये ग़म से जिगर हो गया लहू
सीना कहाँ वो चाँद सा और अब कहाँ वो बू

थोड़ा सितम सहा है बिछड़ कर हुसैन से
सोऊँगी अब तो क़ब्र में जाकर मैं चैन से।

लोगो बस अब रखो न मेरी ज़िन्दगी की आस
बाबा तो आ चुके! हमीं जायेंगे उनके पास
माँ ने कहा करो न मेरी जाँ कलामे-यास[3]
बातें ये सुनके और मैं होती हूँ बेहवास

असग़र तो जा के भूल गये माँ की याद को
क्या तुम भी भूल जाओगी इस नामुराद को।

बीबी तुम्हीं बताओ भला माँ का क्या क़सूर
बाबा अगर हैं दूर, तो मैं तो नहीं हूँ दूर
सादिक़[4] है अपने क़ौल का वो किब्रिया का नूर[5]
इतना कहूँगी मैं कि हुसैन आयेंगे ज़रूर

क्या दोगी हम को आज जो बाबा को पाओगी
पर याद रखियो ये कि हमें भूल जाओगी।

तुम को सिखाये रखती हूँ जिस दम पिदर मिले
सदक़े गयी, न आने के कीजो बहुत गिले
माँ वारी, सच है गुंचए[6]-दिल किस तरह खिले
यूँ उस को भूल जाते हैं जो बाप से हिले

दफ़्तर मुसीबतों का भी अपने न खोलूंगी
तुम जब तलक न बोलोगी, मैं भी न बोलूंगी।

एक आहे-सर्द भर के ये बोली वो नौहागर[7]
अम्माँ मैं चुप रहूंगी, भला आयें तो पिदर
रोने लगेंगे, ढूंढ के जब वो इधर-उधर
उस वक़्त गिर पड़ूंगी मैं क़दमों पे दौड़कर

---

१. चाँद जैसी सुन्दर, मतलब सकीना २. आदत ३. निराशापूर्ण बातें ४. वह (इमाम हुसैन) अपनी बात अवश्य पूरी करेंगे ५. ख़ुदा का नूर ६. दिल की कली, अर्थात् दिल कैसे ख़ुश हो ७. मतलब 'सकीना'

इतना तो कह दो मुझ से अगर मर न जाऊँगी
सदक़े तुम्हारे मुँह के, मैं बावा को पाऊँगी।

मेरे तमांचे[1] खाने का उनसे न कहियो हाल
अम्माँ बहुत कुढ़ेगे शहन्शाहे-खुश-ख़िसाल[2]
होयेगा ग़ैज़[3] से अली अकबर का रंग लाल
अब्बासे-नामदार को आ जायेगा जलाल
मंज़ूर है कि क़ैदे-सितम से रिहाई हो[4]
ऐसा न हो कि फिर कहीं उन से लड़ाई हो।

क्यों अम्माँ जान, क़िब्लए[5]-आलम अभी जो आयें
रो-रोकर इश्तियाक़[6] से मुझको गले लगायें
जीता ख़ुदा करे अली असग़र को साथ लायें
सदमे जो गुज़रे हैं, अभी सब मुझ को भूल जायें
सौ जाँ से मैं निसार शहे-खुश-ख़िसाल[7] के
क्या सोऊँ हाथ चाँद-सी गरदन में डाल के।

लेकर बलाएँ बानुए-बेकस ने ये कहा
ऐ आशिक़े-पिदर तेरी बातों के मैं फ़िदा
समझो यही तुम अब, उन्हें अर्सा नहीं ज़रा
आये कोई घड़ी ये शहन्शाहे-कर्बला[8]
बाबा से हमबग़ल तुम्हें होना नसीब हो
छाती पे उनकी रात को सोना नसीब हो।

बेटी से माँ ने की जो ये बातें ब-चश्मेतर[9]
जागी बहुत थी सो रही वो आशिक़े-पिदर
सब हो गये ख़मोश[10] असीराने-नौहागर
बदली निगाहबानों ने चौकी, बजा पहर[11]
फ़ाक़ों में क़ैदियों ने इधर शुक्रे-रब[12] किया
और उस तरफ़ मज़ीद ने खासा तलब किया।[13]

जल्दी महल-सरा[14] में रवाना हुआ तुआम
खासा चुना खवासों ने बा ज़ीनते-तमाम[15]

---

१. थप्पड़ २. इमाम हुसैन ३. ग़ुस्से से ४. मुझे तो ये ख़्वाहिश है कि इस ज़ुल्म की क़ैद से छुटकारा मिल जाये ५. प्रतिष्ठा का शब्द अर्थात् इमाम हुसैन ६. मुहब्बत से, शोक से ७,८. इमाम हुसैन ९. रोते हुए १०. चुप ११. पहरेदारों ने पहरा बदला और रात का घण्टा बजा १२. ख़ुदा का शुक्र १३. खाना मांगा १४. महल, भवन १५. दासियों ने बड़े प्रबन्ध के साथ भोजन परोसा

हाँ हिन्द को बुलाओ ये बोला अमीरे-शाम[१]
तब एक कनीज़े-ख़ास ने उससे किया कलाम[२]
ख़ासा न दिन को नोश किया है[३] न सोयी हैं
बीबी सहर[४] से आज कई बार रोयी हैं।

बोला ख़बर ये सुनते ही वो बानिए-सितम[५]
जाकर कहो कि देर से याँ मुन्तज़िर[६] हैं हम
दौड़ीं ये हुक्म सुन के ख़वासें कई बहम[७]
नाचार हिन्द आन के बैठी ब-चश्मे- नम[८]
हरगिज़ मज़ीद की तो न जानिब निगाह[९] की
देखा तुआमे-गर्म[१०] तो एक सर्द आह की।

पूछा मज़ीद ने कि है कुछ बदमज़ा मिज़ाज
बोली ये हिन्द, होता है हाँ दर्द दिल में आज
है ज़ुल्म और सितम का तेरे अहद[११] में रिवाज
अपने जिगर के ज़ख्म का मैं क्या करूँ इलाज
तुझको तो ईद है, मुझे सदमे गुज़रते हैं
ये कौन हैं जो रातों को फ़रयाद करते हैं।

क़ैदी है ज़ाहिरा[१२] कोई बीमार-ो-नातवाँ
मालूम कुछ नहीं कि वो लड़का है या जवाँ
आवाज़ एक ज़ईफ़[१३]-सी आती थी हर ज़माँ
कैसा कराहता है सहर तक वो नीमजाँ[१४]
ये दर्द है सदा[१५] में कि दिल टुकड़े होते हैं
रोने पे उसके लोग मोहल्ले के रोते हैं।

कहते हैं सब्र-ो-शुक्र इसे, अल्लाह रे हौसला[१६]
शिकवा[१७] न तौक़ का है न ज़ंजीर का गिला
जारी है सुब्ह-ो-शाम इबादत का सिलसिला[१८]
हरदम रवाँ है चश्म से अश्कों का क़ाफ़िला[१९]
गरदन झुकी हुई है ख़ुदा पर निगाह है
लब पर कभी तो आह कभी ला इलाह[२०] है।

---

१. मतलब यज़ीद २. कहा ३. खाना खाया ४, सुबह से ५. ज़ालिम ६. प्रतीक्षा कर रहे हैं ७. इकट्ठी ८. रोती हुई ९. दृष्टि १०. गर्म भोजन ११ तेरे ज़माने में १२. अबऐसा मालूम होता है १३ एक कमज़ोर-सी आवाज़ हर वक़्त आती है १४. अर्थात् बेहद कमज़ोर और बीमार १५. आवाज़ १६, हिम्मत १७. शिकायत १८. सुबह से शाम तक इबादत करता रहता है १९. आँखों से हर वक़्त आँसू बहते रहते हैं २०. "अल्लाह एक है" (मुसलमानों के कलमे का एक टुकड़ा)

सुनती हूँ नन्हे बच्चे भी दो चार हैं असीर
लड़की भी कोई क़ैद है रश्के-महे-मुनीर[1]
रोने से उस के लगते हैं मेरे जिगर पे तीर
क्या क़हर है ये ज़ुल्म ग़रीबों पे ऐ अमीर[2]
दुख दे किसी को ये नहीं आदत करीम[3] की
क़ुरआँ में हक़ ने की है सुफ़ारिश यतीम की[4]।

खाने को मैं न हाथ लगाऊँगी कैसी भूक
उठती है बार-बार कलेजे में मेरे हूक
उन के बग़ैर मुझ को ये खाना है मिस्ले-ख़ूक[5]
ये बेकसों पे ज़ुल्म, ग़रीबों से ये सलूक
ख़ुश होगा हक़[6] दिलों को यतीमों के शाद कर
क्या रहम था ? करम[7] को मुहम्मद के याद कर।

की हिन्द ने ये दर्द की बातें जो एक बार
हर क़ल्ब पर सितम की चली तेग़े-आबदार[8]
अल्लाह रे, जोशे-मातमे-सुल्ताने-नामदार[9]
रोया झुका के सर को मज़ीदे-ज़बूं-शिआर[10]
ख़ंजर ग़मे-हुसैन का दुश्मन पे चल गया
क्या नाम में असर है कि पत्थर पिघल गया।

रो कर फिर उससे कहने लगी हिन्दे-ख़ुश-सियर[11]
हूँ बेक़रार, सूरते-बिस्मिल[12] मैं नौहागर
गर कह, तो देख आऊँ उन्हें जाके एक नज़र
शायद उन्हीं से शह[13] की मुफ़स्सल सुनूं खबर
हैं ग़ैर या अज़ीज़ शहे-[14]इन्सो-जाँ के हैं
दर्याफ़्त तो करूँ कि ये क़ैदी कहाँ के हैं।

नाचार[15] हो के हिन्द से ज़ालिम[16] ने ये कहा
जा देख आ उन्हें मेरा नुक़साँ है इसमें क्या
वाँ जाके और होयेगा तुझ को क़लक़[17] सिवा
सुनते ही ये कलाम[18] उठी हिन्दे-बावफ़ा

---

१. जिस पर सूरज को ईर्ष्या हो २. हाकिम ३. महरबानी करने वाला ४. ख़ुदा ने कुरआन में बिन बाप के बच्चों पर दया करने का आदेश दिया है ५. सूअर ६. ख़ुदा ७. दया, कृपा, महरबानी ८. हर दिल में ग़म की तलवार चल गई ९. हुसैन के ग़म का प्रभाव ऐसा था १०. बुरी आदतों वाला ११. नेक १२. ज़ख़्मी की तरह १३,१४. इमाम हुसैन १५. मजबूर १६. यज़ीद १७. रंज, दुख १८. बात

पहलू में मुज़्तरिब[1] था दिल उस हक़-परस्त[2] का
उठते ही जल्द हुक्म दिया बन्दूबस्त[3] का।

निकली महलसरा से ये कहकर वो ख़ुश सियर
थीं साथ-साथ चन्द ख़वासें भी नौहागर
पहुंची जनाबे-हज़रते-ज़ैनब को ये ख़बर
रंग उड़ गया ये कहने लगीं सर को पीट कर

अपना नहीं ख़याल बुज़ुर्गों का पास है
हय हय कहाँ छुपूँ वो मेरी रू-शनास[4] है।

रोकर हर एक से बानुए-नाशाद ने कहा
क्या हासिल इज़्तराब से क़िस्मत का जो लिखा
लोगो ख़ुदा के वास्ते चुपके रहो ज़रा
रो-रो के सो गयी है अभी मेरी दिलरुबा

फिर हश्र क़ैदख़ाने में होगा जो रोयेगी
चौंकी अगर तो सुबह तलक फिर न सोयेगी।

चुप हो गये ये सुन के असीराने-नौहागर
जा बैठी एक गोशे[5] में ज़ैनब झुका के सर
आयी सवारिए-ज़ने-हाकिम[6] क़रीबे-दर
दरबाँ भी दूर हट गये दरवाज़ा खोलकर

वहशत पे क़ैद-ख़ाने की जिस दम निगाह की
हाथों पे हाथ रख के ख़वासों ने आह की।

दिल हिन्द का तो रुँध गया थर्रा गया जिगर
बोली ठहर के ड्योढ़ी पे, ये क़ब्र है कि घर
देखा नहीं मकाँ कोई तारीक[7] इस क़दर
पूछो कोई किसी से कि हैं बीबियाँ किधर

ऐसा भी जुल्म करता है कोई जहान[8] में
बन्दे ख़ुदा के बन्द हैं ऐसे मकान में।

आकर क़रीब कहने लगी हिन्दे-ख़ुश ख़िसाल[9]
ऐ बीबियो ! हटा दो ज़रा रुख़[10] से अपने बाल
मुझ से तो कुछ बयान करो अपने दिल का हाल
खेती तुम्हारी हो गयी किस बन में पायमाल[11]

---

१. बेक़रार, व्याकुल २. ख़ुदा का भक्त ३. प्रबन्ध ४. जान पहचान वाली ५. कोना ६. हाकिम की पत्नी, हिन्द ७. अन्धेरा ८. संसार, दुनिया ९. नेक, सुशील १०. चेहरा ११. बरबाद

क्यों ले गये उदू[१] तुम्हें बलवाये-ग्राम[२] में
किस जुर्म पर ग्रसीर हुए मुल्के-शाम में।

सुनती हूँ मैं मदीने में है ग्राप का वतन
लिल्लाह कुछ कहो ख़बरे-सरवरे-ज़मन[3]
हैं ख़ैरियत से हज़रते-शब्बीर[४] की बहन
ज़िन्दा रखे जहाँ में उन्हें रब्बे-ज़ुल[५] मनन

वो बीबी रूहे-बिन्ते-रिसालत[६] पनाह है
इस्मत पे जिस की खालिक़े-ग्रकबर गवाह है।[७]

जब हिन्द ख़त्म कर चुकी रो-रो के ये कलाम
बानो के पास ग्राके ये बोली वो नेक नाम
सदक़े गयी बताइए क्या ग्राप का है नाम
लिल्लाह कुछ कहो मैं हुई जाती हूँ तमाम

ज़िन्दाँ में सब ग्रसीरों की सरदार ग्राप हैं
इन क़ैदियों की क़ाफ़िला-सालार[८] ग्राप हैं।

बानो ने उससे फिर ये कहा थाम कर जिगर
हम क़ैदियों के नाम हैं मज़लूम-ो-नौहागर
ज़ैनब को फिर बता के ये बोली ब-चश्मे-तर
ये बीबी जो कि रोती हैं निहोड़ाये ग्रपना सर

तू दिल में जानती है कि उनकी ग्रज़ीज़ हूँ
मुख़्तार[९] ये मेरी हैं, मैं इन की कनीज़ हूँ।

ये सुन के हिन्द रोने लगी तब ब-ग्रश्क-ो-ग्राह[१०]
फिर मुड़ के रूए-हज़रते-ज़ैनब[११] पे की निगाह
रुख़[१२] से हटाये बाल तो हालत हुई तबाह
बे-साख़्ता[१३] कहा कि ज़हे क़ुदरते-इलाह[१४]

हरगिज़ ग़लत नहीं जो मुझे इश्तबाह[१५] है
ज़ैनब तुम्हीं हो खालिके-ग्रकबर[१६] गवाह है।

क़हने लगी ये हिन्द से ज़ैनब जिगरफ़िगार
क्यों फ़ाले-बद[१७] निकालती है मुँह से बार बार

१.दुश्मन २. बहुत से लोगों के गिरोह में ३, ४. इमाम हुसैन ५ ख़ुदा ६-७. यानी जैनब बिल्कुल ग्रपनी माँ फ़ातमा की तरह हैं, जिन के बड़प्पन ग्रौर पवित्रता का ख़ुदा स्वयं गवाह है ८ क़ाफ़िले की सरदार ९. मालिक १०. बहुत रंज के साथ, रो-रो कर ११. जैनब के चेहरे की तरफ़ देखा १२. चेहरा १३. बे इख़्तियार १४. वाह ! ख़ुदा का क्या क़ुदरत है १५. संदेह १६. ईश्वर महान् १७. ग्रपशुगन

ऐ हिन्द उनका नाम न ले बहरे - किरदिगार[१]
निस्बत न उनसे दे कि वो हैं फ़ातमा[२]-वक़ार
आदा तो मुझ को ले गये बलवाए-ग्राम में
दुश्मन न उनके क़ैद हों ज़िन्दाने-शाम में।

ये सुन के बेक़रार हुई हिन्दे-ख़ुश-ख़िसाल
देखा बग़ौर[३] रुख़ तो ये बोली बसद - मलाल[४]
ऐ मेरी शाहज़ादी छुपाओ न मुझ से हाल
ज़ैनब तुम्हीं हो, ख्वाहरे-शब्बीरे-बाकमाल
तुम को क़सम है फ़र्क़े-शहे-मशरक़ैन[५] की
जल्दी कहो ख़बर मेरे आक़ा हुसैन की।

ये कह के पीटने जो लगी हिन्द ज़ी वक़ार[६]
फ़र्ते क़लक़[७] से दिल हुआ ज़ैनब का बे-क़रार
चिल्लायी सर को पीट के बा-चश्मे - अश्कबार[८]
ऐ हिन्द कट गया सरे - शब्बीरे - नामदार
पानी दिया, न सिब्ते-रिसालत[९] पनाह को
हाकिम ने बे गुनाह किया क़त्ल शाह को।

ऐ हिन्द रन में शाह के यावर[१०] हुए शहीद
अब्बास क़त्ल हो गये, असग़र हुए शहीद
बिनु ब्याहे दश्त में अली अकबर हुए शहीद
शब्बर[११] का लाल और मेरे दिलबर[१२] हुए शहीद
मुरझा के फ़ातमा की न खेती हरी हुई
बच्चों से गोद हो गयी ख़ाली भरी हुई।

मैदाँ में बेकफ़न है अभी लाशे- शाहे-पाक[१३]
हय हय वो धूप और वो मैदाने-हौलनाक[१४]
वा-हसरता[१५] वो गर्म हवा और वो फ़र्शे ख़ाक
किस तरह दिल न हो मेरा सीने में चाक चाक
चिहलुम तलक हुआ न शहे-मशरक़ैन[१६] का
अब तक पड़ा है धूप में लाशा हुसैन का।

मँगवाया हिन्द ने जो सरे-शाहे-बहरो-बर[१७]
मुजरे को उठ खड़े हुए क़ैदी ब-चश्मे तर

---

१. ख़ुदा के वास्ते २. फ़ातमा जैसी इज्जत वाली ३. ध्यान से ४. बहुत रंज के साथ ५. हुसैन के सिर की ६. इज्ज़ात वाली ७. असीम दुख के साथ ८. आँखें आँसू बरसा रही थीं ९. इमाम हुसैन १०. दोस्त मित्र, ११ क़ासिम १२ बेटे १३. हुसैन की लाश १४. भयानक १५. हाय अफ़सोस १६.-१७. इमाम हुसैन

जब सर पे शाहे-दीं[1] के सकीना ने की नज़र
चिल्लाई रो के हाय ग़ज़ब मर गये पिदर
दुनिया से तश्ना-काम सफ़र कर गये हुसैन
लो मुझ पे अब ये राज़ खुला मर गये हुसैन।

फिर सर को पीटती हुई दौड़ी वो सोगवार
दामन[2] में ले लिया सरे-शब्बीरे-नामदार
मुँह रख के मुँह पे शह के जो रोयी वो दिलफ़िगार
सदमा हुआ निकलने लगी तन से जाने-ज़ार
दुनिया से सब की ज़ीस्त[3] का नक़शा बदल गया
जुंबिश[4] हुई लबों को बस और दम निकल गया।

बस ऐ 'अनीस' बज़्म में है गिरयओबुका[5]
वक़्ते दुआ है खालिक़े-अकबर[6] से कर दुआ
या रब ब-हक़्क़े-अहमद-ो-ज़ोहरा-ओ-मुजतबा[7]
दिखला दे जल्द रोज़ए-सुल्ताने-कर्बला[8]
दम लब पे है ज़ियारते-मौला नसीब हो
बीमारे-ग़म को क़ुर्बे-मसीहा[9] नसीब हो।

---

१. इमाम हुसैन २. पल्लू में ३. ज़िन्दगी ४. हिलना ५. रोना-पीटना ६. खुदा महान
७. ऐ खुदा हज़रत मुहम्मद, ज़ोहरा और हसन का वास्ता ८. इमाम हुसैन का मक़बरा
९. इमाम हुसैन

मर्सिया : १२

" दिन गुज़रे बहुत क़ैद में जब अहले-हरम को "

दिन गुज़रे बहुत क़ैद में जब ग्रहले-हरम को
छोड़ा न सितमगर[1] ने ग्रसीराने-सितम[2] को
क्या रंज थे नामूसे-शहंशाहे-उमम[3] को
सब को ये दुग्रा थी कि खुदा मौत दे हम को
नाशाद[4] हैं ऐसे कि कभी शाद न होंगे
ज़िन्दाँ[5] से यकीं है कि हम ग्राज़ाद न होंगे।

तूल इतना खिचा क़ैद में पुरसाँ नहीं कोई[6]
बेदीं हैं लई[7], साहिबे-ईमाँ नहीं कोई
रांडों के रिहा होने का सामाँ नहीं कोई[8]
इस ज़ुल्म-ो-सितम पर भी पशेमाँ[9] नहीं कोई
रातों को है फ़रयाद का ग़ुल नौहागरों[10] में
ग्राराम से क्या सोते हैं सब ग्रपने घरों में।

बे वारिस-ो-बेकस[11] हैं हमें कौन छुड़ावे
क्यों कोई ग्रसीरों की खबर पूछने ग्रावे
परवा है किसे बच्चों को पानी जो पिलावे
किसको है पड़ी दुखज़दों पर रह्म जो खावे
जो तश्ना-दहन क़त्ल करें इब्ने-ग्रली को[12]
ज़िन्दों से वो कब छोड़ेंगे नामूसे-नबी को।

रोते हैं तो रोना हमें मिलता नहीं एक दम
जो चाहते हैं ग्रान के कह जाते हैं ग्रज़लम[13]
वो रोयें न किस तरह जो हों साहिबे-मातम
ज़िन्दाँ में फँसे लुट गये, बर्बाद हुए हम
ग्रफसोस है, ये दफन-ो-कफ़न में भी न पहुँचे
वारिस[14] भी छुटे हमसे, वतन में भी न पहुँचे।

जिब्रीले-ग्रमीं[15] ने जिसे झूले में झुलाया
इस शाह[16] ने गोरो-कफ़न ग्रब तक नहीं पाया

---

१. ज़ालिम ने ग्रर्थात् यज़ीद ने २. ज़ुल्म से क़ैद किये हुए क़ैदी ३. इमाम हुसैन के घराने के लोग ४. जिनको ख़ुशी नसीब नहीं ५. क़ैदख़ाना, कारागार ६. इतना ज्यादा ज़माना गुज़र गया मगर क़ैद में कोई पूछने न ग्राया ७. दुश्मन सब ईमान से दूर हैं ८. क़ैद से ग्राज़ाद होने की कोई उम्मीद नहीं ९. शर्मिन्दा १०. मातम करने वालों में ११. जिनका कोई संरक्षक न रहा हो उन्हें कौन क़ैद से छुड़ा देगा १२. जो लोग ग्रली के बेटे को क़त्ल कर दें १३. बहुत ज़ालिम लोग १४. रिश्तेदार, अज़ीज़ १५. एक फ़रिश्ते का नाम है। कहा जाता है कि बचपन में इमाम हुसैन का झूला जिब्रील हिलाया करते थे १६. इमाम हुसैन

रन में तने-बेसर रहा, सर शाम में ग्राया[१]
नेज़े पे उसे शहर की गलियों में फिराया
किस तरह ज़ियारत[२] करें ज़िन्दाँ से निकल के
लटकाया है दरवाज़े पे ज़ालिम ने महल के।

ये कहते थे ग्रौर रोते थे नामूसे-पयम्बर[३]
था फ़र्श फ़क़त ख़ाक का, बालीं था, न बिस्तर[४]
बच्चों को न खाना था, न पानी था मयस्सर
साया भी न था धूप में सब जलते थे दिन-भर
हर शाम मुसीबत थी ग़रीबुल[५]-वतनी में
हो जाती थी रांडों को सहर सीना-ज़नी में[६]।

काहीदा[७] बदन हो गये थे क़ैदे-सितम से
ताक़त किसी बीबी में न थी रंजो-ग्रलम से
ग़श ग्राता था सज्जादे-हज़ीं[८] को तपे-ग़म[९] से
रुख़सारों पे ग्राँसू थे रवाँ दीदए-नम से[१०]
उठ बैठे तो ग्रफ़सोस से रो रो के मले हाथ
लेटे तो रखा तक्ये की जा, सर के तले हाथ।

उठने न दिया तौक़ ने गर, सर को झुकाया
पहरों सरे-ज़ानू[११] से, न गरदन को उठाया
होश ग्राया तो बेवों[१२] को क़रीब ग्रपने बुलाया
मुंह चूम के छाती से सकीना को लगाया
नज़दीक हलाकत थी[१३] जो दूरीए-पिदर[१४] से
कुब्रा की तरफ़ देख के की ग्राह जिगर से।

रोते थे ये सब नाम जो शब्बीर[१५] का लेकर
वाँ तेग़े-ग्रलम[१६] चलती थी हिन्दा के जिगर पर
दिन भर जो रही ग़म से परेशान-ो-मुकद्दर[१७]
क्या देखती है ख़्वाब में एक रात वो मुज़्तर[१८]

---

१. अर्थात् क़त्ल के मैदान में शरीर पड़ा रहा ग्रौर सिर शाम देश में लाया गया २. देखें ३. रसूल के घराने वाले ४. तकिया था न बिस्तर था ५. देश से दूर होने की हालत में ६. सीना पीटते-पीटते सुबह हो जाती थी ७. कमज़ोर, दुबले ८. इमाम हुसैन के बेटे ९. ग़म का बुख़ार १०. गीली ग्रांखों से चेहरे पर ग्रांसू बहते रहते थे ११. घुटनों पर से १२. रांडों १३. मौत के समीप १४. बाप की दूरी से अर्थात् मौत से १५ इमाम हुसैन की उपाधि १६. ग़म की तलवार १७. उदास, दुखी १८. परेशान, व्याकुल

दरवाज़े कुशादा हुए हैं सातों फ़लक के[1]
रोते चले आते हैं परे हूर-ो-मलक के[2]

जिस हुजरे में है तश्त के अन्दर सरे-शब्बीर[3]
वाँ बादे-सलाम आन के करते हैं ये तक़रीर
ऐ बादशहे तश्ना-दहन कुश्तए-शमशीर[4]
मलऊनों[5] ने कुछ की न तेरी इज़्ज़त-ो-तौक़ीर

टूटी कमरे-हैदरे-सफ़दर[6] तेरे ग़म में
सर पीटते आते हैं पयम्बर तेरे ग़म में।

ये हाल पयम्बर का नज़र आया जो ऍक बार
थर्राया दिले-हिन्द हुई ख़्वाब[7] से बेदार
सर पीटते आये थे जहाँ अहमदे-मुख़्तार[8]
उस हुजरे में रोती गयी बा-[9]दीदए-ख़ूँबार

देखा कि लगन में सरे-शब्बीर धरा है
और ता ब-फ़लक[10] रौशनिए-नूरे-ख़ुदा है।

पहचानी जो वो ख़ूँ भरी शब्बीर की सूरत
बेसाख़्ता एकदम में हुआ जोशे-मुहब्बत
इस सर पे गिरी रोके वो बा-सद-ग़म-ो-हसरत[11]
कहती थी कि ऐ दिलबरे-ख़ातूने-क़यामत[12]

जीता तुम्हें क़िस्मत ने न एक बार दिखाया
जब मर गये तब आख़िरी दीदार दिखाया।

एजाज़[13] से फ़रमाने लगा यूँ सरे-शब्बीर
मैं क्या कहूँ ऐ हिन्द न थी कुछ मेरी तक़शीर[14]
नाहक़ मेरी गरदन पे चली ज़ुल्म की शमसीर
मेहमाँ नहीं याँ क़ैद हूँ मैं बेकस-ो-दिलगीर

क्या ख़ुल्द[15] में आराम हो ज़ोहरा-ओ-अली को
शौहर ने तेरे क़त्ल किया आले-नबी[16] को।

---

१. सातों आसमानों के दरवाज़े खुल गये हैं २. हूरें और फ़रिश्ते उतरे चले आ रहे थे ३. जिस कोठरी में तश्त के अन्दर हुसैन का सिर रक्खा है ४. ऐ प्यासे बादशाह, तलवार के मारे हुए ५. इन ज़ालिमों ने आपकी प्रतिष्ठा क़ायम न रक्खी ६. हज़रत अली, इमाम हुसैन के बाप ७. नींद से जाग पड़ी ८. हज़रत मुहम्मद की उपाधि ९. आंखों से ख़ून बह रहा था १०. आसमान तक ख़ुदा के नूर की रोशनी हो रही है ११. हद से ज़्यादा रंज व दुख के साथ १२. ख़ातूने-क़यामत हज़रत फ़ातमा की उपाधि है अर्थात् ऐ फ़ातमा के पुत्र १३. चमत्कार से १४. ख़ता, दोष १५. जन्नत में १६. नबी की औलाद को

सुनकर ये सुख़न[1] हिन्द गयी हुजरे के अन्दर
रोकर कहा क्या क़ह्र किया तूने सितमगर
ये ख़्वाब अभी देख के उट्ठी हूँ मैं मुज़्तर[2]
घर में मेरे सर पीटते आये हैं पयम्बर
मख़्दूमए-आलम[3] का सरे-पाक खुला है
और अहमदे-मुर्सिल[4] का गिरीबान फटा है।

उसने कहा नादिम[5] हूँ हुई अब तो ये तक़सीर
सच है कि न था काटना तन से, सरे-शब्बीर
सर शर्म से ज़ानू पे झुका, की जो ये तक़रीर
ता सुब्ह रहा सोच में वो ज़ालिमे - बेपीर[6]
एक बार दिया हुक्म ये दरबार में आ के
ज़िन्दां से गिरफ़्तारों को लावे कोई जा के।

कुछ लोग गए सुन के ये हाकिम का जो इरशाद[7]
मशग़ूले[8]-वज़ाइफ़ थे हरम बा-दिले नाशाद
थे ख़ाक पे सजदे[9] में झुके हज़रते-सज्जाद
बच्चे भी थे ताअत[10] में न ज़ारी थी न फ़रयाद[11]
हरचन्द कि फ़ाक़ों से न ताक़त थी किसी में
पर मह्व[12] थे सब यादे-जनाबे-अहदी में।

हैरान[13] हो आख़िर वो असीरों को पुकारे
हाकिम ने हमें भेजा है लेने को तुम्हारे
है हुक्म[14] कि दरबार में क़ैदी चलें सारे
घबराके लगे कहने वो दुख-दर्द के मारे
रस्सी से बँधे, सर खुले, रो आये हैं क़ैदी
एक बार तो दरबार में हो आये हैं क़ैदी।

जिस दम सरे-बाज़ार हरम पहुँचे खुले सर
और सामने हाकिम के गये आबिदे-मुज़्तर
बोला वो लई[15] मक्र से ताज़ीम को उठकर
मसनद पे क़दम रखिए मेरी नायबे-हैदर[16]

१. बात २. व्याकुल, परेशान हाल ३. अर्थात् हजरत फ़ातमा ४. हजरत मुहम्मद ५. शर्मिन्दा ६. ऐसा जालिम जिसका कोई गुरु न हो ७ हाकिम की बात सुन कर ८ हुसैन के घराने के लोग दुआ और इबादत में संलग्न थे ९. नतमस्तक १०. इबादत ११. न रोना था न फ़रयाद थी १२. सब लोग ख़ुदा की याद में लीन थे १३ चकित १४. यजीद का आदेश है कि उसके दरबार में सब क़ैदी आएँ १५, पापी १६. ऐ अली के ख़लीफ़ा (नायब), मेरे सिंहासन पर पधारिए

आबिद ने कहा तख़्त से क्या काम है मुझ को
अब खाकनशीनी[1] ही से आराम है मुझ को।

ये सुन के झुका सर को लगा कहने वो बदख़ो[2]
तुम फ़ैज़[3] के दरया हो, सख़ी इब्ने-सख़ी हो
सर्ज़द[4] हुआ है जुर्म जो मुझ से उसे बख़्शो
फ़रमाया ये तब सैयदे-सज्जाद ने रो-रो
मुझ से ये न कह ज़ैनबे-दिलगीर[5] के होते
मालिक मैं नहीं, शाह[6] की हमशीर के होते।

ज़ैनब से मुख़ातिब[7] हो लगा कहने वो अज़लम
ऐ बिन्ते-अली[8] दुख़्तरे-मख़्दूम-ए-आलम
फ़िलवाक़ई[9] भाई का निहायत है तुम्हें ग़म
पर करता हूँ जो उज़्र[10] पज़ीरा हो वो इस दम
बेजुर्म कटा हल्क़ हुसैन इब्ने अली का
जो माँगो वो दूं[11] खूं बहा मैं सिब्ते नबी का।

ये सुनते ही थर्राने लगी ज़ैनबे-मुज़्तर
सीने में कलेजे पे लगा ज़ुल्म का ख़ंजर
रो-रो के लगी कहने कि ख़ामोश सितमगर
मैं कौन हूं जो लूं दियते-खूने-बिरादर[12]
क़ैदी हूँ, गुनहगार हूँ, नालाँ-ओ हज़ीं[13] हूँ
अल्लाह मैं इस खून की मुख़्तार[14] नहीं हूँ।

इस खून के ख़्वाहाँ[15] हों तो हों अहमदे-मुख़्तार
इस खून का दावा करें या हैदरे-कर्रार[16]
या हश्र के दिन होवेगी माँ इसकी तलबगार
या ख़ालिक़े-अकबर[17] को है इस खूं से सरोकार

---

१. धूल में पड़े रहने से २. दुष्ट ३. तुम दयालू के बेटे हो ख़ुद दयालू हो ४. इसीलिए मैंने जो ज़ुल्म किया है उसे क्षमा कर दो ५ ग़म की मारी ज़ैनब ६. हुसैन की बहन ७,८,९,१० वह ज़ालिम ज़ैनब से बोला कि ऐ अली की बेटी, और दुनिया की शहज़ादी की बेटी, सचमुच भाई का तुम्हें बहुत सदमा है, मगर तुम से मैं क्षमा का अभिलाषी हूँ ११. क़त्ल करने का तावान १२. भाई के खून का तावान १३. फ़रयाद करने वाली, मुसीबत की मारी १४. मालिक १५ से १७ तक—इस क़त्ल का तावान माँगने वाले अगर हैं तो पयम्बरे-इस्लाम हुसैन के नाना हैं या इस खून का दावा अली, हुसैन के बाप करें या फिर उनकी माँ क़यामत के दिन इस खून का तावान माँग सकती हैं या फिर ख़ुद अल्लाह को इस खून करने का जवाब देना होगा

क्यों ज़ब्हा किया सिब्ते-रसूले-अरबी[1] को
इस खूं की दियत दीजियो ज़ोहरा-ओ-अली को।

वल्लाह है इस ज़िक्र से छाती मेरी फटती
मैं ऐसी हूँ जो होंगी दियत लेने पे राज़ी
इस खून के बदले[2] दोजहाँ बख़्शे जो कोई
क़ीमत न हो एक मूए-हुसैन इब्ने-अली की[3]
मक़दूर[4] तुझे क्या है, तू क्या देवेगा ज़ालिम
किस-किस का अभी खून बहा देवेगा ज़ालिम।

शब्बीर का खूं अहमदे-मुख़्तार का खूं है
शब्बीर का खूं हैदरे-कर्रार का खूं है
ये खून तो ज़ोहरा जिगर अफ़गार[5] का खूं है
ये खून, हसन सय्यदे-अबरार[6] का खूं है
तन्हा नहीं सिब्ते-शहे-लौलाक[7] को मारा
तूने तो लईं पंजतने-पाक[8] को मारा

तक़रीर से ज़ैनब की जो महजूब[9] हुआ वो
बोला कि रिहा[10] मैंने किया क़ैद से तुमको
असबाब ज़रूरी जो तुम्हें चाहिए सो लो
उस वक़्त कहा ज़ैनबे-दिलगीर ने रो-रो
नै माल न असबाब न ज़र[11] चाहिए मुझ को
बिछड़ी हुई हूँ, भाई का सर चाहिए मुझ को।

ज़ैनब का बयाँ सुन के वो कहने लगा बदखूं
मैं मना नहीं करता सरे-शाह को देखो
जी भर के ज़ियारत करो और खूब सा रो लो
ले जाने का मज़कूर[12] मगर लब पे न लाओ
इस सर को तुझे दे के न मैं शाद करूंगा
एक उम्र की महनत को न बर्बाद करूंगा।

देखा जूँही ज़ैनब ने सरे-शाहे-दोआलम
ये पीटी कि बाक़ी न रहा उसमें ज़रा दम

---

१. रसूल का नवासा २,३. अगर दोनों दुनियाएँ बदले में दे दी जायें तब हुसैन के एक बाल की कीमत अदा नहीं हो सकती ४. तेरे बस में क्या है, तेरी हैसियत क्या है ५. ज़ोहरा जिसका जिगर ज़ख़्मी हो गया है (इमाम हुसैन की मां) ६. इमाम हसन जो बुज़ुर्ग तथा सरदार हैं। (इमाम हुसैन के बड़े भाई) ७. मुहम्मद के नवासे को ८. हज़रत मुहम्मद, हज़रत अली, हज़रत फ़ातमा, इमाम हसन, इमाम हुसैन मिलकर 'पंजतने पाक' यानी पांच पवित्र लोग कहलाते हैं ९. शर्मिन्दा १०. आज़ाद ११. सोना १२. ज़िक्र, कहना

ग़श खा के गिरी ख़ाक पे वो सानिए-मरयम[१]
था क़ैदियों में शोर-ो-बुका शेवन[२]-ो-मातम
रोती थी कोई और कोई बेहोश पड़ी थी
सकता था किसी को, कोई ख़ामोश खड़ी थी।

ग़श से जो सकीना को इफ़ाक़ा[३] हुआ एक बार
लिपटी सरे-शब्बीर से जाकर ब-दिलेज़ार[४]
मैं क्या कहूँ जौरो-सितमे-हाकिमे-ग़द्दार[५]
बच्ची से लिया छीन सरे-सैयदे-अबरार[६]
कहती थी नया रंज लई देता है मुझ को
बाबा का मेरे सर भी नहीं देता है मुझ को।

कब सुनता था ज़ारीये-सकीना[७] को वो बेपीर
बस उठ गया मजलिस से वो लेकर सरे-शब्बीर
तब आये वहाँ रोते हुए आबिदे-दिलगीर
ज़ैनब को उठा ख़ाक से, की रो के ये तक़रीर
मौक़ूफ़[८] बस अब नालओ-अफ़गाँ करो हज़रत
चलने का वतन के कोई सामाँ करो हज़रत।

यूँ राविए अख़बारे-मुसीबत से है तहरीर[९]
हरचन्द तलब करती रही[१०] ज़ैनबे-दिलगीर
हाकिम ने न हरगिज़ दिया लेकिन सरे-शब्बीर
नाचार रवाना हुई बा-हालते-तग़यीर[११]
मैं क्या कहूँ, जिस तरह वतन जाती थी ज़ैनब
सर पीटती थी, रोती थी, चिल्लाती थी ज़ैनब

ख़ामोश 'अनीस' अब नहीं यारा[१२] है सुख़न का
सद शुक्र कि मद्दाह[१३] है तू शाहे-ज़मन का
कह हक़ से कि सदक़ा सरे-हफ़्ताद-ो-दो[१४] तन का
यां बन्द न कर मुझ को कभी रन्जो-महन का[१५]
दुनिया में किसी तरह का मुझ को न अलम हो।
पर दिल में मेरे पंजतने-पाक का ग़म हो।

---

१. अर्थात् हज़रत मरियम की सी, दूसरी मरियम २. रोना-पीटना ३. होश में आयीं ४. व्याकुल हृदय के सहित ५. ग़द्दार हाकिम का अत्याचार ६. इमाम हुसैन का सिर ७. रोना-धोना ८. अब रोना धोना बन्द करो ९. मुसीबत का हाल बयान करने वाले ने यूँ लिखा है १०. बहुत मांगती रही ११. बुरी हालत में १२ बात करने की ताक़त नहीं १२. शुक्र है कि तू हुसैन की प्रशंसा करने वाला है १३,१४. अर्थात् उन बहत्तर सिरों के सदक़े में जो कर्बला में काटे गये थे मुझे रंज व मुसीबत में न फंसाइयो

सलाम

सब्र करते थे सलामी[1] शहे-वाला क्या क्या
अहले[2]-कीं देते थे मज़लूम को ईज़ा[3] क्या क्या
बानो कहती थी कि सेहरा भी न देखा अफ़सोस
थी मुझे ब्याह की अकबर के तमन्ना क्या-क्या
तीर खाते ही गले में जो दम असग़र का रुका
शाह के हाथों पे तड़पा है वो बच्चा क्या क्या
देखता जो सरे-कासिम को वो कहता रो रो
हसरतें ले गया दुनिया से ये दूल्हा क्या क्या
मनाअ जो रोने को करता तो ये कहते सज्जाद
क्यों न रोऊँ सितम इन आँखों ने देखा क्या क्या
बानो कहती थी तसव्वुर[4] में अली असग़र के
दूध बिन तड़पा है हय हय मेरा बच्चा क्या क्या
शाह फ़रमाते थे पानी नहीं मिलता लेकिन
सामने आँखों के लहराता है दरया क्या क्या
क़ैदख़ाने में सकीना को जो याद आये पिदर[5]
रात भर सीने में दिल नन्हा-सा तड़पा क्या क्या
रो रो ये कहती थी सुग़रा कि कहे जा क़ासिद[6]
तूने क्या क्या कहा और बाबा ने पूछा क्या क्या
देख कर फ़ौजे-हुसैनी को उदू[7] कहते थे
साथ लाये हैं जवाँ सय्यदे-वाला क्या क्या
साथ जाता नहीं कुछ जुज़[8] अमले-नेक 'अनीस'
इस पे इन्सान को है ख़्वाहिशे-दुनिया क्या क्या

---

१. सलाम करने वाला २. दुश्मन ३. तकलीफ़ ४. ख़याल में ५. बाप ६. एलची ७. दुश्मन ८. सिवाय अच्छे काम के

हुसैन यूं हुए मजराइए-वतन से जुदा
कि जैसे बुलबुले-नाशाद हो चमन से जुदा
फँसे हुए थे बलाओं में सैयदे-सज्जाद
छुटी थी तौक़ से ग़रदन, कमर रसन से जुदा
वतन में फिर के सफ़र से न जीते जी आये
अजब घड़ी थी कि अकबर हुए बहन से जुदा
जहाँ से उठ गये हसरत भरे बने क़ासिम
जहाँ में कोई भी दूल्हा न हो दुल्हन से जुदा
शहीदे-ज़ुल्म हैं दोनों नबी के लख़्ते-जिगर
ग़मे-हुसैन नहीं, मातमे-हसन से जुदा
निकाला गरदने-असग़र से तीर जब शह ने
गले से बहने लगा ख़ूं जुदा, दहन से जुदा
सहर से ज़ोह्र तलक कर्बला में जंग हुई
सरे-हुसैन हुआ वक़्ते-अस्र तन से जुदा
ज़मीं पे गिर के पुकारे शहे-उमम हे हात
नज़र जो आ गये भाई के हाथ तन से जुदा
कड़ी है मर्ग की मन्ज़िल मुसाफ़िरो! हुश्यार
खुलेगा हाल ये जब होगी रूह तन से जुदा

रुबाइयाँ

गर लाख बरस जिये तो फिर मरना है
पैमानए - उम्र[१] एक दिन भरना है
हाँ तो तोशए - आख़िरत[२] मुहय्या कर ले
ग़ाफ़िल तुझे दुनिया से सफ़र करना है

अफ़सोस जहाँ से दोस्त क्या-क्या न गये
इस बाग़ से क्या - क्या गुलेराना[३] न गये
था कौन-सा नख़्ल[४] जिसने देखी न ख़िज़ाँ
वो कौन से गुल[५] थे कि जो मुर्झा न गये

रूमाल है अश्कों[६] से भिगोने के लिए
ये रातें, ये दिन नहीं हैं सोने के लिए
हँसने के लिए तो साल भर है यारो
दस रोज़ मुहर्रम के हैं रोने के लिए

किस ग़म में ये लज़्ज़त है जो इस ग़म में है
सीने को सुरूर[७] शाह के मातम में है
हर चश्म[८] ये कहती है दिखा कर दुरे-अश्क[९]
रोने का मज़ा माहे - मुहर्रम में है

गुलशन[१०] में सबा[११] को जुस्तुजू[१२] तेरी है
बुलबुल की ज़ुबाँ पे गुफ़्तुगू तेरी है
हर रंग में जलवा[१३] है तेरी क़ुदरत का
जिस फूल को सूँघता हूँ बू तेरी है

□ □ □

---

१. उम्र का प्याला २. दूसरी जिन्दगी के लिए सामान ३. सुन्दर फूल ४. पेड़ ५. फूल ६. आँसू ७. खुशी ८. आँख ९. आँसू का मोती १०. बाग़ ११. हवा १२. तलाश, खोज १३. ख़ुदा की शान नज़र आती है।